सत्यमेव जयते

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

संधान

राजभाषा हिन्दी को समर्पित पत्रिका

तृतीय अंक (जनवरी-जून 2020)

"ऑडिट भवन" लखनऊ स्थित भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग के कार्यालयों का संयुक्त प्रयास

"ऑडिट भवन" परिसर लखनऊ
स्थित कार्यालयों से सम्बद्ध शाखाओं के कार्य-स्थल

ऑडिट भवन,
लखनऊ

कार्यालय प्रधान महालेखाकार
झारखण्ड, राँची

कार्यालय महालेखाकार
बिहार, पटना

सत्यनिष्ठा भवन
कार्यालय महालेखाकार, प्रयागराज

संधान परिवार

प्रकाशन

विभागीय राजभाषा हिन्दी पत्रिका
'संधान' (अर्धवार्षिक)

प्रकाशक

कार्यालय महानिदेशक
लेखापरीक्षा (केंद्रीय), लखनऊ

अंक

तृतीय अंक
(जनवरी-जून, 2020)

मूल्य

राजभाषा हिन्दी के प्रति निष्ठा
एवं सम्मान

मुख्य संरक्षक (पदेन - वरिष्ठता के आधार पर)

श्री जयंत सिन्हा, प्रधान महालेखाकार,
(लेखापरीक्षा-II) उत्तर प्रदेश, लखनऊ

संरक्षक

श्री राजकुमार, महानिदेशक, लेखापरीक्षा (केंद्रीय), लखनऊ

प्रधान संपादक (पदेन - निदेशक, प्रशासन, लखनऊ)

श्री सुशील कुमार श्रीवास्तव,
निदेशक, प्रशासन/अप्रत्यक्ष कर,
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय),
लखनऊ

कार्यकारी संपादक

श्री शैलेंद्र कुमार शर्मा, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

संपादक मंडल

श्री अतुलेश रंजन, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
श्रीमती लीना दरियाल, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
श्री बृजेश्वर प्रसाद त्रिपाठी, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
श्री कैलाश नाथ मिश्रा, वरिष्ठ लेखाकार

संधान का अर्थ - "लक्ष्य भेदन हेतु धनुष पर बाण चढ़ाना" अथवा "लक्ष्य भेदन हेतु निशाना लगाना" है विभागीय पत्रिका का ये नाम हमारे विभाग के मुख्य कर्तव्य/लक्ष्य/उद्देश्य अर्थात किसी तंत्र (सिस्टम) की कमियों का अनुसंधान करना/उनको इंगित करना, के अनुरूप भी है। इसी विचार के साथ सम्पादक मण्डल ने पत्रिका हेतु इस नाम पर अपनी सहमति प्रदान की ।

आवरण चित्र - विभूतिखंड, गोमतीनगर, लखनऊ स्थित "ऑडिट भवन"

''ऑडिट भवन'' लखनऊ स्थित कार्यालयों का विवरण

कार्यालय	अधीनस्थ शाखा कार्यालय	कार्य-क्षेत्र
महानिदेशक, लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), लखनऊ	अप्रत्यक्ष कर शाखा कार्यालय- लखनऊ	उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखंड में वस्तु एवं सेवा कर (केन्द्रीय सरकार) की लेखापरीक्षा
	प्रत्यक्ष कर शाखा कार्यालय- प्रयागराज	उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखंड में प्रत्यक्ष कर (केन्द्रीय) की लेखापरीक्षा
	केंद्रीय व्यय शाखा कार्यालय- प्रयागराज	उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखंड स्थित केंद्र सरकार के कार्यालयों एवं स्वायत्त निकायों के व्ययों की लेखापरीक्षा
	शाखा कार्यालय- पटना (बिहार)	बिहार राज्य में वस्तु एवं सेवा कर (केन्द्रीय कार्यालय), प्रत्यक्ष कर (केन्द्रीय) एवं केंद्र सरकार के कार्यालयों एवं स्वायत्त निकायों के व्ययों की लेखापरीक्षा
	शाखा कार्यालय- राँची (झारखंड)	झारखंड राज्य में वस्तु एवं सेवा कर (केन्द्रीय कार्यालय), प्रत्यक्ष कर (केन्द्रीय) एवं केंद्र सरकार के कार्यालयों एवं स्वायत्त निकायों के व्ययों की लेखापरीक्षा
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) उत्तर प्रदेश, लखनऊ	पुनर्गठन के पश्चात कार्यालय को चार समूहों में विभक्त किया गया है, ए.एम.जी.-I, II, III एवं IV	ए.एम.जी.-I, II एवं III जिसके अन्तर्गत उत्तर प्रदेश सरकार के विभिन्न विभागों एवं उनके अधीनस्थ सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों तथा स्वायत्त निकायों की लेखापरीक्षा तथा उत्तर प्रदेश सरकार की राजस्व प्राप्तियों की लेखापरीक्षा
	शाखा कार्यालय- प्रयागराज	ए.एम.जी.-IV जिसके द्वारा लोक निर्माण विभाग, वन विभाग तथा इसके अधीनस्थ सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों की लेखापरीक्षा
निदेशक, वित्त एवं संचार लेखापरीक्षा, लखनऊ (शाखा कार्यालय)	इसका मुख्य कार्यालय महानिदेशक, वित्त एवं संचार लेखापरीक्षा, नई दिल्ली है	उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखंड में स्थित मुख्यतः डाक एवं दूरसंचार विभाग के राजस्व एवं प्राप्तियों की लेखापरीक्षा
वरिष्ठ लेखा अधिकारी, कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) II, लखनऊ (शाखा कार्यालय)	इसका मुख्य कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) II, प्रयागराज है	लेखा निर्माण के लेखों का संकलन और विशेष मुद्रा प्राधिकार-पत्र को निर्गत करने का एवं सम्बन्धित कार्य

अस्वीकरण (डिसक्लेमर)

इस अंक में लेखकों/रचनाकारों द्वारा व्यक्त किए गए विचार उनके अपने हैं। संपादक मण्डल का उनसे सहमत होना या असहमत होना आवश्यक नहीं है। विचारों एवं लेखन की मौलिकता संबंधी जिम्मेदारी स्वयं रचनाकार की है। रचना/आलेखों के सम्पादन एवं प्रकाशन संबंधी सर्वाधिकार सम्पादक मण्डल में निहित होंगे।

अनुक्रमणिका

शीर्षक	रचनाकार/लेखक (श्री/सुश्री)	पृष्ठ संख्या
• शुभकामना संदेश		
अद्‌भुत ख़ज़ाना	सुशील कुमार श्रीवास्तव	1
कोरोना में पलायन	सुशील कुमार श्रीवास्तव	1
नव-आविष्कार, नव-खोज़	दीपिका पांडे	2
अनुपालन लेखापरीक्षा में फोकस एरिया बेस्ड ऑडिट एप्रोच (फाबा) की महत्ता	बृजेश्वर प्रसाद त्रिपाठी	3
प्रकृति की पुकार	बृजेश्वर प्रसाद त्रिपाठी	4
क्या क्या हुआ गाँव से गायब	देवमणि पांडेय	5
प्रदूषण मुक्त होनी चाहिए मुक्तिदायनी गंगा	प्रभाकर दुबे	6
नया विधान	लीना दरियाल	8
इन दिनों हालात	लीना दरियाल	8
भारत रत्न डॉक्टर राजेन्द्र प्रसाद	राम जनम राय	9
बारिश की रिमझिम बूंदों पर	आभा पांडे	10
लॉकडाउन का पृथ्वी के पर्यावरण पर सकारात्मक प्रभाव	संजीव चटर्जी	11
हिन्दी की वेदना	शैलेंद्र कुमार शर्मा	12
नेता जी का नाश्ता	शैलेंद्र कुमार शर्मा	12
कुछ संस्मरण	संजीव कुमार श्रीवास्तव	13
कोरोना योद्धाओं को नमन	अतुलेश रंजन	14
कोरोना स्पेशल	शालिनी रानी सिंह	14
मेरी दोस्त	शालिनी रानी सिंह	14
अवसाद आखिर क्यों?	नितनेम सिंह सोडी	15
जीवन एक संग्राम	राजेश कुमार-I	16
जीवन एक रंगमंच	राजेश कुमार-I	16
हार-जीत	विजय शंकर वर्मा	17
वाणी टंकण- एक समाधान	रवि सिंह	19
लॉकडाउन	विनय प्रसाद	20
कोविड-19 के दौरान 'वर्क फ्राम होम'	वासवी मिश्रा	21
इच्छा, जो पूरी न हो सकी	प्रदीप कुमार	22

कोरोना- कैसे बचें इस विश्वव्यापी महामारी से	सुश्री मानसी रंजन सुपुत्री श्री अतुलेश रंजन	23
बुझ गये चिराग	राजीव कुमार सक्सेना	24
हिंदी एवं तेलुगु भाषा : कुछ समानतायें	ई.ए.पी.एस. शास्त्री	25
आत्मनिर्भरता	मनीषा किरण	26
अंतरिक्ष की कुछ रोमांचक घटनाएं	अनिल कुमार कमल	27
सारी दुनिया की माँओं के लिए	वीरेंद्र श्रीवास्तव	28
महाभारत- कुछ रोचक तथ्य	सत्यशील	29
प्रभु तेरा सहारा	सतीश कुमार राम	30
कब होंगे आजाद	सतीश कुमार राम	30
धुंए का अस्तित्व	श्री धीरेन्द्र किशोर	31
उदासीनता का जाल	रोमी सुल्तान	32
आत्महत्या-आखिर क्यों?	अखिलेश कुमार	33
धनुषकोडी- एक विस्मृत तीर्थस्थल	मंजुला श्रीवास्तव	34
अपनापन	राम औतार प्रसाद	35

- आपके पत्र/आशीर्वाद/प्रतिक्रिया 36-38
- "ऑडिट भवन" लखनऊ स्थित कार्यालयों के (जनवरी-जून, 2020) कार्यकलाप 39-41

विशेष सूचना: संधान परिवार के सभी सदस्य संज्ञान लें कि इंटरनेट से 'कॉपी-पेस्ट' किया गया, किसी अन्य लेखक का कोई लेख/कविता स्वीकार्य नहीं होगी। कृपया स्वयं की रचनाधर्मिता एवं लेखन क्षमता को अवसर प्रदान करें। इंटरनेट से प्रमाणिक तथ्य एवं आँकड़े लिये जा सकते है।

सुझाव/प्रतिक्रिया आमंत्रण

ये हमारे लिए हर्ष का विषय है कि "संधान" का तृतीय अंक ई-पत्रिका के रूप में आपके समक्ष है। आप सभी सुधी पाठकों से अनुरोध है कि इस अंक के बारे में अपनी मूल्यवान प्रतिक्रिया एवं सुझाव अवश्य भेजें। आपकी प्रतिक्रिया एवं सुझाव हमारे लिए अति महत्वपूर्ण हैं जो इस पत्रिका को और अधिक रुचिकर एवं जानकारी पूर्ण बनाने में सहयोगी सिद्ध होंगे।

पता : वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन), कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय), लखनऊ, तृतीय तल, 'ऑडिट भवन', टी.सी.-35-वी-1, विभूतिखण्ड, गोमतीनगर, लखनऊ-226010

ई-मेल: sao-admn.luk.cca@cag.gov.in

सूचना: संधान परिवार के सभी सुधी सदस्यों को सूचित किया जाता है कि इस अंक से हम भारत के महापुरुषों/संतों एवं उनकी शिक्षा पर आधारित एक श्रृंखला प्रारंभ करने जा रहें है, जो समाज में समरसता, सौहार्द एवं देश प्रेम को बढ़ावा दें। आप सभी से अनुरोध है कि इस संदर्भ में आगामी अंकों के लिए आप अपने लेख भेजें।

गुरु वन्दना

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः॥

भावार्थ :

गुरु ब्रह्मा है, गुरु विष्णु है, गुरु ही शंकर है; गुरु ही साक्षात् परब्रह्म है; उन सद्गुरु को प्रणाम।

धर्मज्ञो धर्मकर्ता च सदा धर्मपरायणः।
तत्त्वेभ्यः सर्वशास्त्रार्थादेशको गुरुरुच्यते॥

भावार्थ :

धर्म को जानने वाले, धर्मानुसार आचरण करने वाले, धर्मपरायण और सब शास्त्रों में से तत्त्वों का आदेश करने वाले गुरु कहे जाते हैं।

निवर्तयत्यन्यजनं प्रमादतः स्वयं च निष्पापपथे प्रवर्तते।
गुणाति तत्त्वं हितमिच्छुरंगिनाम् शिवार्थिनां यः स गुरु र्निगद्यते॥

भावार्थ :

जो दूसरों को प्रमाद करने से रोकते हैं, स्वयं निष्पाप रास्ते से चलते हैं, हित और कल्याण की कामना रखने वाले को तत्त्वबोध करते हैं, उन्हें गुरु कहते हैं।

राज कुमार
प्रधान निदेशक (राजभाषा)

कार्यालय
भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक
नई दिल्ली

सत्यमेव जयते

संदेश

मुझे हर्ष हो रहा है कि आपका कार्यालय हिन्दी विभाग पत्रिका **'संधान'** के तृतीय अंक का प्रकाशन कर रहा है। हिन्दी के प्रचार प्रसार के लिए यह पत्रिका अत्यधिक महत्वपूर्ण होगी तथा इससे कार्यालय में हिन्दी भाषा के प्रगामी प्रयोग में और गति आएगी, साथ ही कार्यालय में अधिकारियों/कर्मचारियों को हिन्दी में कार्य करने में प्रेरणा मिलेगी।

मुझे आशा है कि आपका कार्यालय भविष्य में भी इस पत्रिका का प्रकाशन करता रहेगा। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए मैं संपादक मण्डल को हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ।

(राज कुमार)
प्रधान निदेशक (राजभाषा)

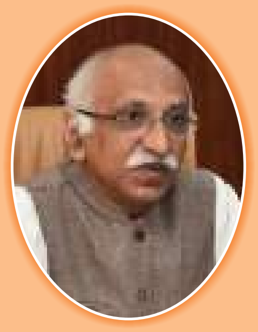

जयंत सिन्हा

प्रधान महालेखाकार

(लेखापरीक्षा-II)

उत्तर प्रदेश, लखनऊ

सत्यमेव जयते

कार्यालय प्रधान महालेखाकार

(लेखापरीक्षा–II)

उत्तर प्रदेश, लखनऊ

मुख्य संरक्षक के आशीर्वचन

हमारे कार्यालय परिसर 'ऑडिट भवन' में स्थित सभी कार्यालयों एवं शाखा कार्यालयों के संयुक्त प्रयास से राजभाषा हिंदी की विभागीय पत्रिका **'संधान'** के तृतीय अंक के प्रकाशन पर मुझे अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है।

किसी भी देश की सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक प्रगति में उसकी भाषा का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। भाषा किसी भी देश की विशिष्ट पहचान होती है। हमेशा से ही ऐसा माना जाता रहा है कि किसी भी देश के सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक संगठन को अगर जानना हो तो, उस देश के साहित्य को उस देश की मौलिक भाषा में पढ़ना चाहिए। देश की मौलिक सोच की अभिव्यक्ति सही मायनों में देश की अपनी भाषा में ही हो सकती है। कोई भी राष्ट्र अपनी भाषा में काम करके ही विकास को नये आयाम दे सकता है।

हिंदी हमारी मातृभाषा है और मौलिक अभिव्यक्ति का प्रभावी माध्यम है। अतएव, कार्यालय के सभी कर्मियों को हर स्तर पर हिंदी में कार्य करने के लिए प्रेरित किया जाता है और इसी दिशा में कार्यालय की इस गृह पत्रिका का प्रकाशन किया जाता है। इस पत्रिका के प्रकाशन के माध्यम से उन सभी कर्मियों को प्रोत्साहन मिलेगा जो रचनात्मक लेखन करने के इच्छुक हैं।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि इससे राजभाषा के प्रचार-प्रसार के पावन कार्य में सहायता मिलेगी। आशा है कि यह अंक आपको रूचिकार और उपयोगी लगेगा।

(जयंत सिन्हा)

प्रधान महालेखाकार

(लेखापरीक्षा–II)

उ.प्र., लखनऊ

मुख्य संरक्षक संधान पत्रिका

सुश्री अंजलि सिंह

महालेखाकार
(लेखापरीक्षा-I)
उत्तर प्रदेश, प्रयागराज

सत्यमेव जयते

कार्यालय महालेखाकार
(लेखापरीक्षा–I)
उत्तर प्रदेश, प्रयागराज

संदेश

मुझे राजभाषा पत्रिका **'संधान'** के तृतीय अंक के प्रकाशन पर अपार हर्ष हो रहा है।

हिंदी के प्रचार-प्रसार में राजभाषा पत्रिका उत्प्रेरक का कार्य करती है। यह अधिकारियों एवं कर्मचारियों के मौलिक अभिव्यक्ति एवं सृजनात्मकता को व्यक्त करने का एक आधार देती है।

मैं **'संधान'** पत्रिका के प्रकाशन में अथक प्रयास और उत्कृष्ट योगदान हेतु संपादक मंडल एवं रचनाकारों को बधाई देती हूँ, एवं पत्रिका के उज्जवल भविष्य की कामना करती हूँ।

(सुश्री अंजलि सिंह)
महालेखाकार

राज कुमार
महानिदेशक
लेखापरीक्षा (केन्द्रीय)
लखनऊ

सत्यमेव जयते

कार्यालय महानिदेशक
लेखापरीक्षा (केन्द्रीय)
लखनऊ

संरक्षक के आशीर्वचन

ये जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि वैश्विक महामारी कोविड से उत्पन्न विषम परिस्थितियों के बावजूद भी राजभाषा हिन्दी पत्रिका **'संधान'** के तीसरे अंक का डिजिटल संस्करण (ई-पत्रिका) जारी किया जा रहा है।

पत्रिका में अपने आलेखों, रचनाओं, कविताओं के माध्यम से सहयोग करने वाले सभी अधिकारी/कर्मचारी बधाई के पात्र हैं और मैं आशा करता हूँ कि अपनी रचनाधर्मिता को अवसर प्रदान करते हुये, वे आगामी अंकों में भी पत्रिका के लिए यथावत अपना सहयोग बनाये रखेंगे और हिन्दी के प्रयोग व प्रसार को बढ़ावा देंगे।

पत्रिका के सफल सम्पादन व डिजिटल संस्करण जारी करने के लिए समस्त संपादक मण्डल को बधाई। राजभाषा हिन्दी पत्रिका संधान अपने उद्देश्यों को पूर्ण करते हुये अपने पथ पर निर्बाध रूप से गतिशील रहे, ऐसी मेरी शुभकामना है।

(राज कुमार)
महानिदेशक
संरक्षक संधान पत्रिका

शैलेन्द्र कुमार शर्मा
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक
लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) लखनऊ

संपादक की कलम से...

समय सदैव ही गतिमान रहता है अर्थात वह स्वयं को निरंतर बदलता रहता है, लेकिन वैश्विक महामारी कोविड के कारण वर्तमान दौर कुछ इस तरह बदला कि इसने पूरे विश्व के तौर-तरीके और सोच-विचारो को बदलने पर विवश कर दिया। इस बदलते परिवेश और मितव्ययता की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुये राजभाषा हिन्दी पत्रिका **'संधान'** का तीसरा अंक आपके सामने डिजिटल संस्करण (ई-पत्रिका) में प्रस्तुत है।

राजभाषा हिन्दी पत्रिका **'संधान'** के तीसरे अंक में सहयोग करने वाले लेखकों/रचनाकारों का हृदय से अभिनंदन व आभार। पत्रिका के मुख्य संरक्षक, संरक्षक व मुख्य संपादक महोदय का बहुत-बहुत धन्यवाद, जिनके मार्गदर्शन में पत्रिका अपने पथ पर अग्रसर है। सम्पादक मण्डल के सभी सहयोगियों का भी आभार, जिनके सहयोग से पत्रिका अपने अंतिम स्वरूप में आपके समक्ष है। पत्रिका के लिए प्रेरक एवं उत्साहवर्धक शुभकामना संदेश व प्रतिक्रिया देने वाले सभी अधिकारियों का हृदयतल से आभार।

आशा है कि **'संधान'** के आगामी अंकों में भी आपका सहयोग पूर्ववत ही मिलता रहेगा और हिन्दी के प्रति हमारी श्रद्धा, सम्मान और उसके कार्यालयीन प्रयोग मे उतरोत्तर वृद्धि होती रहेगी।

जय हिंद, जय हिंदी।

(शैलेन्द्र कुमार शर्मा)
कार्यकारी संपादक

अद्‌भुत ख़ज़ाना

सुशील कुमार श्रीवास्तव
निदेशक, प्रशासन/अप्रत्यक्षकर
कार्या-महानिदेशक, ले.प.(के.) उ.प्र., लखनऊ

एक अंधेरी रात्रि में, मैं आकाश के तारों को देख रहा था। सारा नगर सोया हुआ था। उन सोये हुए लोगों पर मुझे बहुत दया आ रही थी। वे बेचारे दिनभर की अधूरी वासनाओं के पूर्ण होने के स्वप्न ही देख रहे होंगे। स्वप्न में ही वे जागते हैं, और स्वप्न में ही सोते हैं। न वे सूर्य को देखते हैं, न चाँद को, न तारों को। वस्तुतः जो आँखें स्वप्न देखती हैं, वे आँखें उसे नहीं देख पाती हैं। सत्य को देखने के लिए आँखों से स्वप्नों की धूल हट जाना अत्यंत आवश्यक है।

रात्रि जैसे-जैसे गहरी होती जाती थी, वैसे-वैसे आकाश में तारे बढ़ते जाते थे। धीरे-धीरे तो पूरा आकाश ही उनसे जगमग हो उठा था। और आकाश ही नहीं, उनके मौन सौंदर्य से मैं भी भर गया था। मैं एक वृक्ष से टिका आकाश में खोया ही था कि तभी किसी ने पीछे से आकर मेरे कंधे पर अपना ठंडा और मुर्दा हाथ रख दिया। उसकी पग-ध्वनियां भी मुझे सुनाई पड़ी थीं। वे ऐसी नहीं थीं, जैसी किसी जीवित व्यक्ति की होनी चाहिए, और उसका हाथ तो इतना निर्जीव था कि अंधेरे में भी उसकी आँखों में भरे भावों को समझने में मुझे देर नहीं लगी। उसके शरीर का स्पर्श उसके मन की हवाओं को भी मुझ तक ले आया था। वह व्यक्ति तो जीवित था और युवा था, लेकिन जीवन कभी का उससे विदा ले चुका था, और यौवन तो संभवतः उसके मार्ग पर अभी आया ही नहीं था।

हम दोनों तारों के नीचे बैठ गए थे। उसके मुर्दा हाथों को मैंने अपने हाथों में ले लिया था, ताकि वे थोड़े गर्म हो सकें, और मेरी जीवन-ऊष्मा भी उनमें प्रवाहित हो सके। संभवतः वह अकेला था और प्रेम उसे जीवित कर सकता था।

निश्चय ही ऐसे समय बोलना तो उचित नहीं था और इसलिए मैं चुप ही रहा। हृदय मौन में ही कहीं ज्यादा निकटता पाता है। और शब्द जिन घावों को नहीं भर सकते, मौन उन्हें भी स्वस्थ करता है। शब्द और ध्वनियाँ तो पूर्ण संगीत में विघ्न और बाधाएं ही हैं।

रात्रि मौन थी, और मौन हो गई। उस शून्य संगीत ने हम दोनों को घेर लिया। वह अब मुझे अपरिचित नहीं था। उसमें भी मैं ही था। फिर उसकी पाषाण-जैसी जड़ता टूटी और उसके आँसुओं ने खबर दी कि वह पिघल रहा है। वह रो रहा था और उसका सारा शरीर कंपित हो रहा था। उसके हृदय में जो हो रहा था, उसकी तरंगें उसके शरीर तंतुओं तक आ रही थीं। वह रोता रहा...रोता रहा...रोता रहा और फिर बोलाः ''मैं मरना चाहता हूँ। मैं अत्यंत निर्धन और निराश हूँ। मेरे पास कुछ भी तो नहीं है।''

मैं थोड़ी देर और चुप रहा और फिर धीरे-धीरे मैंने उससे एक कहानी कही। मैंने कहाः मित्र! मुझे एक कथा स्मरण आती है। एक फकीर से किसी युवक ने जाकर कहा थाः ''परमात्मा ने सब कुछ मुझसे छीन लिया है। मृत्यु के अतिरिक्त मेरे लिए अब कोई मार्ग नहीं है।''

क्या वह युवक तुम ही तो नहीं हो?

उस फकीर ने युवक से कहा थाः ''मैं तो तेरे पास छिपा हुआ एक बड़ा खजाना देख रहा हूँ? क्या उसे बेचेगा? उसे बेच दे तो तेरा सब काम बन जाए और परमात्मा की बदनामी भी बचे।''

तुम वह युवक हो या नहीं, पता नहीं। लेकिन फकीर मैं वही हूँ और लगता है कि कहानी फिर से दोहरा रही है।

वह युवक हैरान हुआ और शायद तुम भी हैरान हो रहे हो। उसने पूछा थाः ''खजाना? मेरे पास तो फूटी कौड़ी भी नहीं है!''

इस पर फकीर हँसने लगा और बोलाः ''चलो, मेरे साथ बादशाह के पास चलो। बादशाह बड़ा समझदार है। छिपे खजानों पर उसकी सदा से ही गहरी नजर रही है। वह जरूर ही तुम्हारा खजाना खरीद लेगा। मैं पहले भी बहुत से छिपे खजानों के बेचने वालों को उसके पास ले गया हूँ!''

वह युवक कुछ भी नहीं समझ पा रहा था। उसके लिए तो फकीर की सारी बातचीत ही पहेली थी। लेकिन फिर भी वह उसके साथ बादशाह के महल की ओर चला। मार्ग में फकीर ने उससे कहाः ''कुछ बातें पहले से तय कर लेना आवश्यक है, ताकि बादशाह के सामने कोई झंझट न हो। वह बादशाह ऐसा है कि जो चीज उसे पसंद हो, उसे फिर किसी भी मूल्य पर छोड़ता नहीं है। इसीलिए यह भी जान लेना जरूरी है कि तुम उस चीज को बेचने को राजी भी हो या नहीं? ''

वह युवक बोलाः ''कौन सा खजाना? कौन सी चीजें? ''

फकीर ने कहाः ''जैसे, तुम्हारी आँखें। इनका क्या मूल्य लोगे? मैं 50 हजार तक बादशाह से दिला सकता हूँ। क्या यह रकम पर्याप्त नहीं है? या जैसे तुम्हारा हृदय या मस्तिष्क, इनके तो एक-एक लाख भी मिल सकते हैं!

वह युवक हैरान हुआ और अब समझा कि फकीर पागल है। बोलाः ''क्या आप पागल हो गए हैं? आँखें? हृदय? मस्तिष्क? आप यह

कह क्या रहे हैं? मैं इन्हें तो किसी भी मूल्य पर नहीं बेच सकता। और मैं ही क्यों, कोई भी नहीं बेच सकता है।''

फकीर हँसने लगा और बोलाः ''मैं पागल हूँ या तू? जब तेरे पास इतनी बहुमूल्य चीजें हैं, जिन्हें तू लाखों में भी नहीं बेच सकता, तो झूठ-मूठ निर्धन क्यों बना हुआ है? इनका उपयोग कर। जो खजाना उपयोग में नहीं आता, वह भरा हुआ भी खाली है, और जो उपयोग में आता है, वह खाली भी हो तो भर जाता है। परमात्मा खजाने देता है--अकूत खजाने देता है, लेकिन उन्हें खोजना और खोदना स्वयं ही पड़ता है। जीवन से बड़ी कोई संपदा नहीं है। जो उसमें ही संपदा नहीं देखता, वह संपदा को और कहाँ पा सकता है?''

रात्रि आधी से ज्यादा बीत गई थी। मैं उठा और मैंने उस युवक से कहाः ''जाओ और सो जाओ। सुबह एक दूसरे ही व्यक्ति की भाँति उठो। जीवन वैसा ही है, जैसा हम उसे बनाते हैं। वह मनुष्य की अपनी सृष्टि है। उसे हम मृत्यु भी बना सकते हैं, और अमृत भी। सब कुछ स्वयं के अतिरिक्त और किसी पर निर्भर नहीं है। फिर मृत्यु तो अपने-आप आ जाएगी। उसे बुलावा देने की आवश्यकता नहीं है। बुलाओ अमृत को। पुकारो परम-जीवन को। वह तो श्रम से, शक्ति से, संकल्प से और साधना से ही मिल सकता है।''

साभार- ओशो

कोरोना में पलायन

दर बदर शहर हुए, जो सहर को खींचते,
दोपहर लपेटते शाम को नजर हुए।
शाम स्याह हो गई, रात ना सुकूँ रहा,
पेट को मरोड़ते, वह आह करके सो गए।
फिर सहर को चल दिए, सुकून की तलाश में,
सिलसिला न टूटता, यह कारवां जो बन रहा।
हाथ वो पसारते जो दूसरों को पालते,
नीर बन के दूध का जो सभ्यता संभालती।
वह चल रही है धूप में, नीर को तलाशती,
वह चल रही है धूप में, जो सभ्यता संभालती।

सुशील कुमार श्रीवास्तव
निदेशक, प्रशासन/अप्रत्यक्षकर

नव-आविष्कार, नव-खोज़

दीपिका पांडे, वरिष्ठ लेखापरीक्षक
कार्या-महानिदेशक, ले.प.(के.) उ.प्र., लखनऊ
शाखा-प्रयागराज

इतिहास बन रहा फिर से नया-नया
वर्तमान दे रहा भविष्य एक नया-नया
शाश्वत कहा था जिसको वेद की ऋचाओं ने
विज्ञान कह रहा है कुछ और ही नया-नया।

नित्य नये बन रहे विधान आज देश में
महफिलों का यहाँ दौर चल रहा था नया-नया।
तुलसी की सीता अब पन्नों में जहाँ खो गई थी।
कृष्ण और राधा का विन्यास है वहाँ नया-नया।

अब कहीं न धूप और छाँव का ही भेद है
विज्ञान के चमत्कार का प्रभाव है नया-नया।
पिस रहा है इन्सान मँहगाई के बोझ में
नई-नई योजना विकास है नया-नया।

गाँधी की अहिंसा का पाठ है बस पुस्तकों में
हिंसा बना रही कीर्तिमान फिर से नया-नया
साथी आये यहाँ जो एक ही मंजिल के उद्देश्य में
बन रहा आवास हर एक का नया-नया।

निर्मल थी गंगा की धार जब निकली गंगोत्री से
पहले प्रदूषित किया अब अनुसंधान कर रहे नया-नया
जान बचाने को अब अपना रहे फिर से वैदिक उपचार
नई बीमारी नई महामारी नित्य इलाज नया-नया।

धरती माँ पर किये जो हमने अत्याचार
उसे अब हम ही भुगत रहे होकर लाचार
इस आपदा की घड़ी में कोरोना योद्धाओं से दुर्व्यवहार
क्योंकि उन्होंने हमारे लिए छोड़ा है अपना घर-परिवार
नित्य नई सुबह ज़िंदगी सिखा रही पाठ नया-नया।।

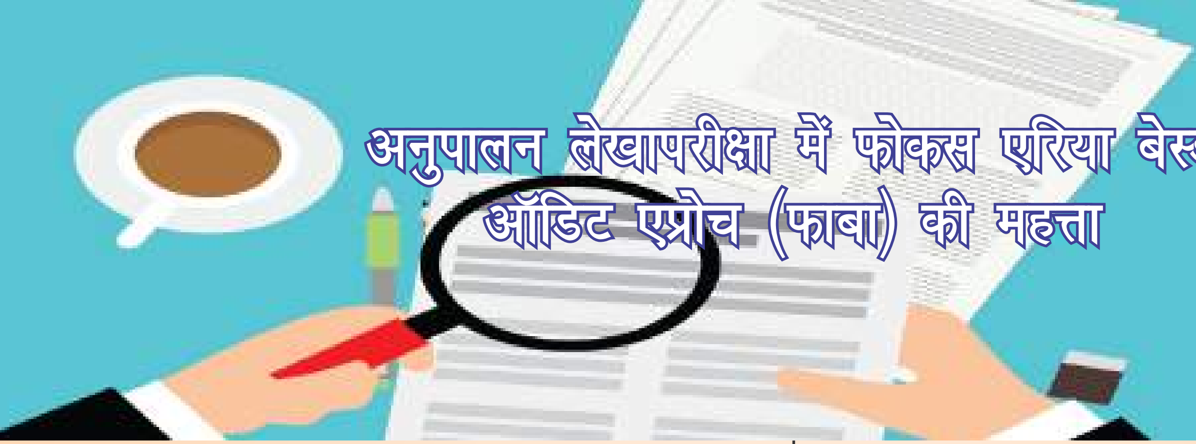

अनुपालन लेखापरीक्षा में फोकस एरिया बेस्ड ऑडिट एप्रोच (फाबा) की महत्ता

बृजेश्वर प्रसाद त्रिपाठी
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्या-प्र.म.ले. (लेखापरीक्षा-II) उ.प्र., लखनऊ

किसी सरकारी विभाग/संस्था/संगठन की कार्यप्रणाली में निहित कमियों को प्रकाश में लाने एवं उनके निराकरण हेतु अपेक्षित सुधारात्मक कार्यवाही की ओर विभाग/संस्था/संगठन के प्रमुख का ध्यान आकृष्ट करने में, लेखापरीक्षा का महत्वपूर्ण योगदान होता है। भारत के सर्वोच्च लेखापरीक्षा संस्थान (भारत के नियंत्रक-महालेखापरीक्षक) द्वारा विविध प्रकार की लेखापरीक्षाएं, यथा-अनुपालन लेखापरीक्षा, निष्पादन लेखापरीक्षा एवं वित्तीय लेखापरीक्षा आदि सम्पादित की जाती हैं। अनुपालन लेखापरीक्षा (कंप्लायंस ऑडिट) को संव्यव्हारों की लेखापरीक्षा (ट्रांजेक्शन ऑडिट) अथवा रूटीन ऑडिट के नाम से भी जाना जाता है।

उच्च गुणवत्तापूर्ण अर्थात मितव्ययी, दक्ष एवं प्रभावी अनुपालन लेखापरीक्षा सम्पादित करने हेतु भारत के नियंत्रक-महालेखापरीक्षक के कार्यालय द्वारा अनुपालन लेखापरीक्षा मार्गदर्शिका (कंप्लायंस ऑडिटिंग गाईडलाइन्स) 2016 निर्गत की गयी है। इस मार्गदर्शिका में, उल्लिखित प्रावधानों के अनुसार, किसी सरकारी विभाग/संस्था/संगठन की शीर्ष-निम्नगामी (टॉप-डाउन) जोखिम संरचना आधारित विशिष्ट फोकस युक्त अनुपालन लेखापरीक्षा योजना तैयार करने एवं तदनुसार इसे क्रियान्वित करने पर बल दिया गया है। वास्तव में उक्त मार्गदर्शिका ने अनुपालन लेखापरीक्षा के नियोजन एवं क्रियान्वयन हेतु एक नवीन अभिगम (एप्रोच) का सूत्रपात किया है। इसके क्रम में एक निश्चित समयांतराल पर विशिष्ट फोकस क्षेत्रवार अनुपालन लेखापरीक्षा के माध्यम से प्रभावी सुधारात्मक कार्यवाही हेतु सम्बंधित सरकारी विभाग/संस्था/संगठन के प्रमुख का ध्यान आकृष्ट किया जा सकता है।

स्व-कार्यालय की संशोधित वार्षिक लेखापरीक्षा योजना, 2019-20 को तैयार करते समय, अनुपालन लेखापरीक्षा मार्गदर्शिका में उल्लिखित प्रावधानों से जनित अभिगम (एप्रोच) का नामकरण, इस लेख के लेखक द्वारा ''फोकस एरिया बेस्ड ऑडिट एप्रोच'' किया गया और संक्षिप्ताक्षर (एक्रोनिम) के रूप में ''फाबा'' शब्द गढ़ा (क्वाईंड) गया। यह अभिगम (एप्रोच), परंपरागत अनुपालन लेखापरीक्षा से इस मामले में भिन्न है कि उपलब्ध मानवदिवसों को वित्तीय लेखापरीक्षा एवं निष्पादन लेखापरीक्षा हेतु वरीयता क्रम में नियोजित करने के बाद, बचे हुए मानवदिवसों को वैज्ञानिक ढंग से अनुपालन लेखापरीक्षा हेतु नियोजित किया जाता है।

इस अभिगम (एप्रोच) का उद्देश्य यह है कि जोखिम संरचना (उच्च जोखिम, मध्यम जोखिम, निम्न जोखिम) के अनुसार, इस तरह से अनुपालन लेखापरीक्षा योजना तैयार की जाए कि उसमें शामिल कोई भी इकाई, सम्बंधित अनुपालन लेखापरीक्षा योजना के वर्षांत पर अलेखापरीक्षित (अनऑडिटेड) न रह जाये। इसके अतिरिक्त, परंपरागत अनुपालन लेखापरीक्षा (जहाँ बिखरे हुए परिणाम प्राप्त होते हैं) की अपेक्षा, इस अभिगम (एप्रोच) के अनुसार सम्पादित की जाने वाली अनुपालन लेखापरीक्षा से चयनित विशिष्ट फोकस एरिया पर प्राप्त लेखापरीक्षा परिणाम, किसी विभाग/संस्था/संगठन के अंतर्गत निहित प्रणालीगत (सिस्टमिक) कमियों पर प्रकाश डालते हैं।

फोकस एरिया बेस्ड ऑडिट एप्रोच (फाबा) के अनुसार, अनुपालन लेखापरीक्षा के नियोजन एवं क्रियान्वयन में निम्नलिखित तत्वों को शामिल किया गया है:

- गहन जोखिम आंकलन के आधार पर शीर्ष लेखापरीक्षित विभाग/संस्था/संगठन (अपेक्स ऑडिट इनटिटी) का जोखिम संरचना (उच्च जोखिम, माध्यम जोखिम, निम्न जोखिम) के अनुसार वर्गीकरण।
- उक्त शीर्ष लेखापरीक्षित विभाग/संस्था/संगठन (अपेक्स ऑडिट इनटिटी) के अंतर्गत आने वाली क्षेत्र लेखापरीक्षित इकाईयों (फील्ड ऑडिट यूनिट्स) का जोखिम संरचना (उच्च जोखिम, माध्यम जोखिम, निम्न जोखिम) के अनुसार वर्गीकरण।
- अनुपालन लेखापरीक्षा हेतु उपलब्ध मानवदिवसों को दृष्टिगत रखते हुए जोखिम संरचना के वरीयता क्रम में (उच्च जोखिम-शत-प्रतिशत), (माध्यम जोखिम-50 प्रतिशत) एवं (निम्न जोखिम-33 प्रतिशत) शीर्ष लेखापरीक्षित विभाग/संस्था/संगठन (अपेक्स ऑडिट इनटिटी) का चयन।
- अनुपालन लेखापरीक्षा हेतु उपलब्ध मानवदिवसों को निर्दिष्ट अनुपात (2:9:1) के अनुसार क्रमशः नियोजन, लेखापरीक्षा एवं प्रतिवेदन हेतु नियोजित करना।
- इसी प्रकार चयनित शीर्ष लेखापरीक्षित विभाग/संस्था/संगठन (अपेक्स ऑडिट इनटिटी) के अंतर्गत आने वाली क्षेत्र लेखापरीक्षित इकाईयों (फील्ड ऑडिट यूनिट्स) का भी जोखिम संरचना के वरीयता क्रम में (उच्च जोखिम-शत-प्रतिशत), (माध्यम जोखिम-50 प्रतिशत) एवं (निम्न जोखिम-33 प्रतिशत) एवं उपयुक्त सैंपलिंग के आधार पर चयन।

- पूर्व-अनुभवों, गहन डेस्क रिव्यु एवं बौद्धिक विश्लेषण के आधार पर उक्त चयनित शीर्ष लेखापरीक्षित विभाग/संस्था/संगठन (अपेक्स ऑडिट इनटिटी) की अनुपालन लेखापरीक्षा हेतु एक या दो लेखापरीक्षा विषयवस्तु (विशिष्ट फोकस एरिया) का चयन।
- चयनित शीर्ष लेखापरीक्षित विभाग/संस्था/संगठन (अपेक्स ऑडिट इनटिटी) एवं क्षेत्र लेखापरीक्षित इकाईयों (फील्ड ऑडिट यूनिट्स) की लेखापरीक्षा विषयवस्तु (विशिष्ट फोकस एरिया) के अनुसार अनुपालन लेखापरीक्षा सम्पादित करने हेतु एक या आवश्यक्तानुसार एकाधिक फील्ड ऑडिट टीम को नियोजित करना।
- एकाधिक फील्ड ऑडिट टीम की दशा में, एक लीड ऑडिट टीम एवं अन्य सहायक ऑडिट टीम को सक्षम अधिकारी द्वारा नामित करना।
- चयनित लेखापरीक्षा विषयवस्तु (विशिष्ट फोकस एरिया) से सम्बंधित ऑडिट डिजाईन मैट्रिक्स को सम्बंधित फील्ड ऑडिट टीम (एक ऑडिट टीम की स्थिति में) अथवा लीड ऑडिट टीम (एकाधिक ऑडिट टीम की स्थिति में) द्वारा तैयार किया जाना।
- चयनित लेखापरीक्षा विषयवस्तु (विशिष्ट फोकस एरिया) एवं तत्संबंधी ऑडिट डिजाईन मैट्रिक्स में, अनुपालन लेखापरीक्षा के दौरान, यदि आवश्यक हो, वास्तविकता के आधार पर संशोधन करना एवं सक्षम अधिकारी से ऐसे संशोधन का अनुमोदन प्राप्त करना।
- तद्नुसार, चयनित लेखापरीक्षा विषयवस्तु (विशिष्ट फोकस एरिया) एवं तत्संबंधी ऑडिट डिजाईन मैट्रिक्स के अनुसार, शीर्ष-निम्नगामी (टॉप-डाउन) आधार पर सम्बंधित शीर्ष लेखापरीक्षित विभाग/संस्था/संगठन (अपेक्स ऑडिट इनटिटी) एवं क्षेत्र लेखापरीक्षा इकाईयों की अनुपालन लेखापरीक्षा संपन्न करना।
- चयनित लेखापरीक्षा विषयवस्तु (विशिष्ट फोकस एरिया) की एकीकृत एवं पूर्ण समन्वित ढंग से, अबाधित समयावधि के दौरान अनुपालन लेखापरीक्षा संपन्न करना।
- फोकस एरिया बेस्ड ऑडिट एप्रोच (फाबा) के अनुसार की गयी अनुपालन लेखापरीक्षा से प्राप्त परिणामों के बारे में शीर्ष लेखापरीक्षित विभाग/संस्था/संगठन (अपेक्स ऑडिट इनटिटी) के प्रमुख को लेखापरीक्षा निरीक्षण प्रतिवेदन (ऑडिट इंस्पेक्शन रिपोर्ट) एवं विभागीय अभिमूल्यन प्रतिवेदन (डिपार्टमेंटल अपरीशिएशन रिपोर्ट) के माध्यम से अवगत कराना।

उक्त विवेचन से स्पष्ट है कि फोकस एरिया बेस्ड ऑडिट एप्रोच (फाबा) के अनुसार उपलब्ध मानवदिवसों का अनुकूलतम नियोजन करते हुए उच्च गुणवत्तापूर्ण अनुपालन लेखापरीक्षा सम्पादित की जा सकती है। साथ ही, चयनित फोकस एरिया के सम्बन्ध में प्राप्त लेखापरीक्षा परिणामों के आलोक में अपेक्षित सुधारात्मक कार्यवाही हेतु किसी सरकारी विभाग/संस्था/संगठन का ध्यान केन्द्रित किया जा सकता है। लेखापरीक्षा के दृष्टान्त पर की गयी वांछित/सुधारात्मक कार्यवाही ही वास्तव में लेखापरीक्षा का अभीष्ट योगदान है। आवश्यकता इस बात की है कि इस अभिगम (एप्रोच) को उपयुक्त ढंग से अपनाया जाए।

अतः अनुपालन लेखापरीक्षा मार्गदर्शिका में उल्लिखित प्रावधानों से जनित फोकस एरिया बेस्ड ऑडिट एप्रोच (फाबा), अनुपालन लेखापरीक्षा के वैज्ञानिक ढंग से नियोजन एवं क्रियान्वयन हेतु अत्यंत महत्वपूर्ण एवं अनुकरणीय है। इसे सही ढंग से क्रियान्वित करने में ही इसकी उपादेयता है।

प्रकृति की पुकार

संकल्पित, लयबद्ध कर्म-निष्ठा जिसकी पहचान है,
प्रकृति और उसके परिजनों से भला कौन अनजान है। 1

सृष्टि के सुख-चैन खातिर अपना दोहन स्वीकार किया,
मानव सहित सब जीव-जंतुओं को माँ-जैसा प्यार दिया। 2

विकास चरम के लिए मानव-बुद्धि ने क्या से क्या कर डाला,
सातत्य विचार किये बिना ही, प्रकृति का भेदन कर डाला। 3

प्रकृति की दया-दृष्टि, सृष्टि की विभीषिका भी बन जाती है,
उसके वरदानों-उपहारों पर, जब मानव-बुद्धि की ठन जाती है। 4

पंचभूत-जनित सृष्टि में मानव-बुद्धि का अधिकार है,
प्रकृति संतुलन, असंतुलित न हो प्रकृति की पुकार है। 5

मधुर प्रकृति-संतुलन, जब-जितना असंतुलित हो जाता है,
मानव-बुद्धि बौनी लगती, तब प्रहार, प्रकृति-प्रण हो जाता है। 6

जीवनदात्री प्रकृति का अनुगमन, जीवन रक्षा का उपदेश है,
वरदानों-उपहारों में सातत्य-संतुलन, सृष्टि का सन्देश है। 7

बृजेश्वर प्रसाद त्रिपाठी
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

सब कुछ आपका हो सकता है बस सब कुछ एक बार में ही आपका नहीं हो सकता। – ओप्रा विनफ्रे

शख्सियत : देवमणि पांडेय

जन्म : 4 जून 1958 सुलतानपुर (उ.प्र.), **वर्तमान निवास स्थान :** मुंबई

शिक्षा : हिन्दी और संस्कृत में प्रथम श्रेणी एम.ए.।

लेखन विधा : गीत, ग़ज़ल, कविताएं।

विशेष : दो ग़ज़लें वर्ष 2017 में जलगाँव विश्वविद्यालय के एम.ए. हिंदी के पाठ्यक्रम में शामिल।

प्रकाशित काव्यसंग्रह : 'दिल की बातें', 'खुशबू की लकीरें', 'अपना तो मिले कोई' और **'कहाँ मंजिलें कहाँ ठिकाना'।**

देश-विदेश में कई पुरस्कारों और सम्मान से अलंकृत देवमणि पांडेय जाने माने शायर और सिने गीतकार होने के साथ-साथ लोकप्रिय मंच संचालक भी हैं। शायर-सिने गीतकार देवमणि पांडेय के कैरियर की शुरूआत निर्देशक तिग्मांशु धूलिया की फिल्म **'हासिल'** से हुई। इसके बाद डॉक्टर चंद्रप्रकाश की फिल्म **'पिंजर'** में उनके लिखे गीत **'चरखा चलाती माँ'** को सन् 2003 के लिए **बेस्ट लिरिक ऑफ दि ईयर** अवार्ड से नवाजा गया। श्री देवमणि पांडेय ने **'कहाँ हो तुम'** और **'तारा'** (दि जर्नी ऑफ लव) आदि फिल्मों को भी अपने गीतों से सजाया है। उन्होंने सोनी चैनल के धारावाहिक **'एक रिश्ता साझेदारी का'** और स्टार प्लस के सीरियल **'एक चाबी है पड़ोस में भी'** भी अपनी कलम का जादू दिखाया। संगीत अल्बम **गुजारिश, तन्हा तन्हा** और **बेताबी** में भी उनके गीत बहुत पसंद किए गए। हिंदी-उर्दू की प्रमुख साहित्यिक पत्रिकाओं में उनकी अनेक रचनाएं प्रकाशित हो चुकी हैं। सांध्य दैनिक संझा, जनसत्ता में कई सालों तक साप्ताहिक स्तम्भ **साहित्यनामचा** का लेखन।

विशेष : (1) वर्ष 2012 में ताशकंद में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय हिंदी कवि सम्मेलन का संचालन।
(2) भोपाल (म.प्र.) के दुष्यंत कुमार संग्रहालय में 13 अगस्त 2012 को डेढ़ घंटे एकल काव्य पाठ।

प्रस्तुत है उनके द्वारा लिखी एक प्रसिद्ध कविता।

देवमणि पांडेय

क्या क्या हुआ गाँव से गायब

सावन की पुरवइया गायब,
पोखर, ताल, तलइया गायब।

कट गए सारे पेड़ गाँव के,
कोयल और गौरइया गायब।

कच्चे घर तो पक्के बन गए,
हर घर से अँगनइया गायब।

सोहर, कजरी, फगुवा भूले,
बिरहा, नाच नचइया गायब।

गुमसुम बैठी है चौपाई,
दोहा और सवइया गायब।

नोट निकलते ए टी एम से,
पैसा, आना, पइया गायब।

दरवाजे पर कार खड़ी है,
बैल, भैंस और गइया गायब।

सुबह हुई तो चाय की चुस्की,
चना-चबेना, लइया गायब।

भाभी देख रही हैं रस्ता,
शहर गए थे, भइया गायब।

आँकड़े जानकारी नहीं हैं, जानकारी ज्ञान नहीं हैं, ज्ञान समझ नहीं है, समझ बुद्धिमानी नहीं है। - क्लिफोर्ड स्टोल

प्रदूषण मुक्त होनी चाहिए मुक्तिदायनी गंगा

प्रभाकर दुबे
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्या-महानिदेशक, ले.प.(के.) उ.प्र., लखनऊ

माँ गंगा के विषय में जानना, समझना और लिखना- यह तीनों कार्य इतना सरल और सहज नहीं है। गोमुख से गंगासागर तक लगभग 2000 किलोमीटर तक की यात्रा पूरी करने वाली नदी की विशेषता वर्णनातीत है। भारतीय धर्म ग्रंथों में इनकी खूबियों का बखूबी वर्णन किया गया है और क्यों ना हो, कलयुग के मल का हरण करने वाली यह नदी भारतीय जनमानस के जीवन का आधार जो है। यह एक सामान्य नदी नहीं है वरन भारतीय संस्कृति की संवाहिका है। गंगा के तट पर न केवल अनेक महानगर विकसित हुए एवं अनेकानेक सभ्यताओं का उद्भव एवं विकास हुआ और इस प्रकार माँ गंगा हजारों वर्षो से भारतीय जनमानस को पुष्पित व पल्लवित करती रही हैं और आगे भी करती रहेंगी- इसमें दो राय नहीं है। गंगा के तट पर बसे शहर न केवल धार्मिक वरन आर्थिक दृष्टि से भी विकसित हैं। माँ गंगा की उपस्थिति ही तटीय लोगों के संपन्नता और खुशहाली के लिए पर्याप्त है। गंगा के जल का स्पर्श, मज्जन (स्नान) तथा आचमन क्लांत मन को शांत करने में पूर्ण समर्थ है और यही कारण है कि शास्त्रों में इनके दर्शन मात्र से ही मुक्ति का उल्लेख है।

शास्त्रों में वर्णित कथानक के अनुसार गंगा हिमालय से निकली एक नदी मात्र नहीं है वरन एक निश्चित प्रयोजन के लिए इनका धरती पर अवतरण हुआ था। ऐसी मान्यता है कि कपिल मुनि की क्रोधाग्नि में राजा सगर के साठ हजार पुत्र जलकर भस्म हो गए थे। राजकुमार अश्वमेध यज्ञ के घोड़े की रक्षा के लिए निकले थे। उन्हें इंद्र द्वारा अश्व चुराए जाने तथा सिद्धाश्रम में बाँधे जाने की खबर नहीं लगी। उन्होंने दंभ में आकर मुनि को अश्वचोर समझ लिया। अपनी सीमा का उल्लंघन करने के कारण, वे सभी मुनिवर के कोप का भाजन बन भस्म हो गए। क्रोध शांत होने पर मुनि ने राजकुमार के उद्धार का उपाय बताया कि यदि देवपगा गंगा धरती पर आयें तो उनके पावन जल का स्पर्श पाकर भस्मीभूत राजकुमार स्वर्ग को चले जाएंगे। राजा सगर के वंशज भगीरथ के घोर तपस्या के परिणाम स्वरूप गंगा का धरती पर अवतरण हुआ तथा महाराज भगीरथ के अभिष्ट की पूर्ति हुई। भागीरथ के नाम पर ही गंगा का एक नाम भागीरथी भी है। ऐसी शास्त्रोक्त मान्यता है कि गंगा पृथ्वी पर आने को तैयार नहीं थीं, उनके अनुसार संसार के लोग असावधानी, स्वार्थपरता तथा भोगवादी दृष्टि के कारण उनकी उपेक्षा करेंगे तथा कल कारखानों के निर्माण तथा उद्योगों की स्थापना के कारण निकले अपशिष्ट के कारण उनकी अमृतोमय जलधारा और भी प्रदूषित हो जाएगी तथा जनसंख्या के दबाव के कारण महानगरों की गंदगी जल में बहाने के कारण उनका जल प्रदूषित होगा। वह तो प्राणियों के पापों को दूर करेंगी पर उनके प्रदूषण को कौन दूर करेगा। भागीरथ ने गंगा जी को आश्वस्त किया और कहा कि बुद्धिजीवी, विचारक, संत, योगी और मानव जीवन की रक्षा के लिए कृत संकल्पित लोग आप की धारा को शुद्ध निर्मल, दिव्य बनाये रखने के लिए आपकी सेवा उसी प्रकार करेंगे जैसे वे अपने शरीर व प्राणों की रक्षा करते हैं। महाराज भगीरथ के इस प्रभावपूर्ण आश्वासन को महत्व देते हुए माँ गंगा ने कहा यदि लोग मेरे तट व जल को प्रदूषित नहीं करेंगे तो मैं भी उनके तीन मानसिक, तीन वाचिक और चार शारीरिक अर्थात दस पापों को दूर करते रहने का वचन देती हूँ। पुराणों में इस वचन की तिथि ज्येष्ठ मास के शुक्लपक्ष की दशमी है तथा माँ गंगा के इस आश्वासन को 'दस हरा' अर्थात दशहरा के नाम से प्रसिद्धि मिली। देवी भागवत पुराण में गंगा का प्रादुर्भाव गोलोक में कार्तिक पूर्णिमा बताया गया है जबकि विष्णु पुराण में प्रादुर्भाव की तिथि का उल्लेख नहीं है पर धरती पर ज्येष्ठ शुक्ल दशमी (दशहरा) को बताया गया है इन दोनों ही तिथियों पर गंगा स्नान का बहुत महत्व है और अपार जनसमूह स्नान, ध्यान और माँ गंगा का पूजन कर अपना जीवन सफल बनाते हैं।

हिमालय से निकलने के बाद गंगा रास्ते में पड़ने वाली दिव्य औषधियों के संस्पर्श से अपनी जलधारा में औषधीय तत्व को घोलती हुई आगे बढ़ती है इसलिए गंगाजल अत्यंत गुणकारी हो जाता है। इसमें अनेक रोगों को ठीक करने की क्षमता भी है और यही कारण है कि इसे अमृत की संज्ञा भी दी गई है। ऐसी मान्यता है कि गंगाजल से निर्मित औषधि अपेक्षाकृत अधिक गुणकारी होगी और यही कारण है कि हमारे पूर्वज प्राण निकलते समय मरने वाले के मुँह में तुलसी व गंगाजल डालते थे जो आज भी मान्य है और प्रचलन में भी है। यह शोध का विषय है कि क्या मृत्यु के कष्ट को दूर करने में गंगाजल सहायक है अथवा नहीं, पर यह सत्य है कि जल की इन्हीं विशेषताओं के कारण संत एवं ऋषिगण गंगा के तट पर अपना आश्रम बनाने में अधिक रुचि लेते थे। ऋषिकेश पहुँचने से पहले गंगा दो धाराओं में विभक्त होकर

अनेक नदियों का जल अपने में समाहित करते हुए समतल पर पहुँचती है। इनकी एक धारा बद्रीनाथ की ओर से अलकनंदा के रूप में एवं दूसरी धारा गोमुख से गंगोत्री होते हुए भागीरथी के रूप में जानी जाती है। जहाँ-जहाँ दूसरी नदियों का जल गंगा में समाहित हुआ, वह मिलन स्थल प्रयाग के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इस प्रकार उत्तराखंड में वैसे तो अनेक प्रयाग हैं परंतु पाँच प्रयाग अत्यंत महत्वपूर्ण है जो तीर्थ स्थलों के रूप में विकसित हैं और पुराणों में इनकी जगह जगह पर चर्चा है। यह पांचो प्रयाग यथा विष्णुप्रयाग, नंदप्रयाग, कर्णप्रयाग, रुद्र प्रयाग और देवप्रयाग अत्यंत रमणीक और यात्रियों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट करने में समर्थ हैं। भगवान बद्रीनाथ की यात्रा में इन पाँचों प्रयागों का दर्शन लाभ मिल जाता है जो अत्यंत मनोहारी व प्राकृतिक सुषमा से परिपूर्ण है। पर्वत शिखरों के मध्य दो नदियों के संगम तट पर बने देवालय व बसे नगरों की मनमोहक छटा एवं नयनाभिराम दृश्य देखकर मन प्रफुल्लित हो जाना स्वभाविक है तथा यात्रा की कठिनाइयों के बावजूद लोगों की अपार भीड़ देखने को मिलती है।

धार्मिक महत्व के अतिरिक्त भी गंगा अत्यंत उपयोगी तथा सुख प्रदान करने वाली है। नहरों के रूप में इनके जल से सिंचाई की उत्तम व्यवस्था के कारण तटीय प्रदेश एवं कृषि क्षेत्र अत्यंत उपजाऊ एवं हरे भरे रहते हैं। इनका जल कई महानगरों के जल की आवश्यकता की पूर्ति करता है तथा उद्योग कल कारखाने एवं अन्य व्यवसायिक कार्यों में उपयोगी है। उत्तराखंड में जगह-जगह गंगा के पानी से विद्युत उत्पादन किया जा रहा है जो देश के विद्युत आपूर्ति का मजबूत आधार है। मनेरीथाली प्रथम, द्वितीय तथा टेहरी विद्युत योजना इसके उदाहरण हैं जो अपने आप में अभियांत्रिकी का अनूठा उदाहरण है। गंगा के तट पर बसे शहर भारतीय संस्कृति एवं शिक्षा का प्राचीन काल से केंद्र रहे हैं और आज भी हैं। हरिद्वार, प्रयागराज तथा वाराणसी इसके उदाहरण हैं। इस प्रकार, भारतीय जनमानस के लिए गंगा न केवल एक सामान्य नदी है बल्कि संपूर्ण जीवन है जिन्होंने विदेशों में भी अपनी एक पहचान बनाई है। गंगा की इन्हीं गुणों के कारण राष्ट्रीय गीतकार प्रदीप ने इनके प्रति अपनी श्रद्धा सुमन इस प्रकार अर्पित किए जो पूर्णतया यथार्थ पर आधारित हैं।

भारत के लिए भगवान का वरदान है गंगा,
सच पूछो तो इस देश की पहचान है गंगा।
लाखों करोड़ों लोगों की मुस्कान है गंगा,
गंगा ही हिंदुस्तान, हिंदुस्तान है गंगा।

अब प्रश्न यह उठता है कि जो नदी इस देश के जनमानस के लिए इतनी उपयोगी है कि जिसे राष्ट्रीय अस्मिता से जोड़ा गया हो, क्या उसका संरक्षण उसके जल को शुद्ध, प्रदूषण रहित तथा अविरल बनाए रखना प्रत्येक भारतवासी का परम कर्तव्य नहीं है? भारतीय संस्कृति हमें हमेशा कृतज्ञ बनाती है और यही कारण है कि प्रकृति के सभी उपादानों के प्रति हम नतमस्तक होते हैं। भारतीय ग्रंथों का जितना आध्यात्मिक महत्व है उससे कहीं अधिक बौद्धिक महत्व है, क्योंकि यह जीवन जीने की कला सिखाते हैं यही कारण है कि धर्म ग्रंथों में प्रकृति के सभी उपादानों को संरक्षित रखने पर बल दिया गया है ताकि उसका भरपूर लाभ मिल सके तथा अनंत काल तक हम इनका सानिध्य प्राप्त कर सकें। बढ़ते उपभोक्ता संस्कृति के कारण आज गंगा का भरपूर दोहन होने लगा है। जगह-जगह इनका प्रवाह अवरुद्ध हुआ है तथा शहर से निकलने वाले गंदे नालों का मुँह गंगा की तरफ मोड़ा गया है। कल-कारखानों के कचरे के कारण इनका निर्मल जल पूर्णतया प्रदूषित हो गया है तथा कहीं-कहीं तो जलस्तर भी नीचे चला गया है। प्रयागराज एवं वाराणसी में गंगा की स्थिति चिंताजनक है। दुर्भाग्य है कि जहाँ एक ओर यह नदी अपनी पहचान खोने की कगार पर है वहीं दूसरी ओर धार्मिक होने का ढिंढोरा पीटने वाला भारतीय समाज अभी भी जागरूक नहीं हो रहा है। कुछ संत महात्माओं का आमरण अनशन एवं भावपूर्ण संदेश नक्कारखाने में तूती की आवाज बनकर रह गयी है और हम हैं कि सुधरने का नाम नहीं ले रहे हैं।

सरकारी स्तर पर अनेक प्रयास किए जा रहे हैं तथा इसके लिए अलग से मंत्रालय भी गठित किया गया है पर जन समर्थन के अभाव में इसका वांछित परिणाम नहीं मिल पा रहा है। अधिकतर धार्मिक लोग ही धर्म का मर्म न समझने के कारण माँ गंगा के प्रति अधिक असहिष्णु हो रहे हैं। प्रकृति के प्रति खिलवाड़ का दूरगामी परिणाम न समझने के कारण और जल, जंगल व जमीन का लगातार गलत ढंग से दोहन करने के कारण, लोग कोरोना जैसी महामारी की चपेट में आ रहे हैं फिर भी उनकी आँखें नहीं खुल रही है। यह घोर चिंता का विषय है। इसलिए प्रत्येक भारतवासी का यह परम कर्तव्य है कि वह धर्म एवं मजहबी भावनाओं से ऊपर उठकर अपनी राष्ट्रीय धरोहर एवं देश की पहचान को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए दृढ़ संकल्पित हो। गंगा को प्रदूषण मुक्त रखने के लिए सरकारी व गैर सरकारी स्तर पर सभी उपाय किए जाएं, जो आवश्यक हों। गंगा में कूड़ा कचरा न डाला जाए। जन-जागरण अभियान के तहत तटीय प्रदेश साफ सुथरा रखा जाए। पानी के प्रदूषण की वैज्ञानिक ढंग से हमेशा जाँच की जाए और इसके लिए न केवल कड़े कानून बनाए जाएं, वरन उन्हें कड़ाई से लागू भी किया जाए। गंगा में अस्थि विसर्जन केवल प्रतीकात्मक रूप से किया जाए तथा इनका अविरल प्रवाह सुनिश्चित किया जाये, ताकि आने वाले युगों-युगों तक हमारे संतति को माँ गंगा का सानिध्य प्राप्त होता रहे।

नमामि गंगे! तव पादपंकजं, सुरसुरैर्वन्दितदिव्यरूपम्।
भुक्तिं च मुक्तिं च ददासि नित्यम, भावानुसारेण सदा नराणाम्।।

भावार्थ : हे गंगाजी! मैं देव व दैत्यों द्वारा पूजित आपके दिव्य कमलरूपी चरणों को प्रणाम करता हूँ। आप मनुष्यों को सदा उनके भावानुसार भोग एवं मोक्ष प्रदान करती हैं।

दर्शन से, स्पर्श से, जलपान करने तथा नाम कीर्तन से सैकड़ों तथा हजारों पापियों को गंगा पवित्र कर देती है।

नया विधान

देखो आज कैमरे से, मंकी कर रहा है क्लिक,
पिंजरे के पंछी सोचे, कैसी आई होगी पिक।

हैट को सजाकर निकली, देखो आज काऊ,
पिंजरे में फँसा मानुष है सोचे, हुआ ये हाऊ।

तोते गिटपिट कर-कर के, मानुष को चिढ़ाये,
उल्टा-पुल्टा हो गया, जन्तु बाहर नजर आये।

कैसे सज-धज निकली है, आज इनकी रेल,
मानुष हो गया बन्द पिंजरे में, वाह रे तेरे खेल।

नेचर पर सबका हक है, मानुष गया था भूल,
आज उल्टा-पुल्टा देख, क्यों चुभे हृदय में शूल।

सिर्फ कुछ दिवसों का ये, बनाया गया है विधान,
जो न सुधरा हे मानुष, भुगतेगा तू यूँ ही नादान।

लीना दरियाल
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्या-महानिदेशक, ले.प.(के.)
उ.प्र., लखनऊ

इन दिनों हालात

सन्नाटों के दौर में हम, गुजर कर रहे हैं,
यूँ ही हर पहर लम्हा, बसर कर रहे हैं।

इन दिनों बाहर मौसम, बड़ा संजीदा है,
ज़ेहन के वरक इधर से, उधर कर रहे हैं।

राह में जो निकले, होंगी कई दुश्वारियाँ,
आज कातिल हवाओं में, बसर कर रहे हैं।

बहारों के वक्त में, कैसा ये पतझड़ है,
बेरुख़ी घोल के हवायें, जहर कर रहे हैं।

धरा को दो वक्त थोड़ा, आज आराईश का,
सिफ़ारिश ये फूल पत्ते, शज़र कर रहे हैं।

ठहरो जरा गुफ्तगू कर लें, खुद से दो घड़ी,
लफ्जों में बनी ठनी, गज़ल नजर कर रहे हैं।

समझो जरूरी है, एहतियात रखना 'सत्यम',
आज शब्द अर्थ बदलकर, असर कर रहे हैं।

कार्यालयीन अंग्रेजी-हिंदी शब्दावली

अंग्रेजी शब्द	हिंदी रूपांतरण	अंग्रेजी शब्द	हिंदी रूपांतरण
Beneficiary	लाभार्थी	Comparable	तुलनीय
Conceptualised	परिकल्पित	Intended benefits	प्रत्याशित लाभ
Deprived of	वंचित रहा/रही	Financing	वित्तीयन/वित्त पोषण
Expected outcomes	प्रत्याशित परिणाम	Guidelines	मार्गदर्शिका
Follow up Audit	अनुगामी लेखापरीक्षा	Injudicious	अन्यायसंगत
Inordinate delay	अत्यधिक विलम्ब	Instance	दृष्टान्त
Instead of	के बजाय	Instead,	इसके बजाय
Justified	औचित्यपूर्ण/तर्कसंगत	Mandatory conditions	बाध्यकारी शर्तें
Monitoring	अनुश्रवण/निगरानी	On ad-hoc basis	तदर्थ आधार पर
Mutual consultation	पारस्परिक परामर्श	Operational losses	परिचालन हानियाँ
Overview	विहंगावलोकन	Paucity	अभाव/कमी
Remedial action	सुधारात्मक कार्यवाही	Symptomatic indicators	लाक्षणिक संकेतक

प्रस्तुतिः बृजेश्वर प्रसाद त्रिपाठी, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

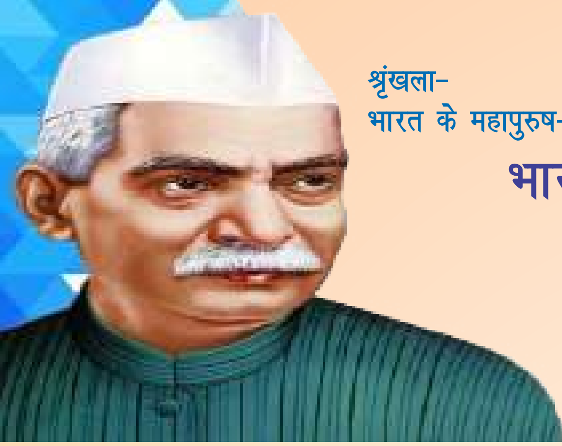

भारत रत्न डॉक्टर राजेन्द्र प्रसाद

राम जनम राय
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्या-महानिदेशक, ले.प.(के.) उ.प्र., लखनऊ

स्वतंत्र भारतवर्ष के प्रथम राष्ट्रपति डॉक्टर राजेन्द्र प्रसाद को कौन नहीं जानता! ये मेरी एक छोटी सी कोशिश है कि इस पत्रिका के पाठकों को संक्षेप में उनके जीवन वृतांत से रू-ब-रू करा सकूँ।

बहुमुखी प्रतिभा के धनी बाबू राजेन्द्र प्रसाद ने बचपन से ही जो सफलता के झंडे गाड़ना शुरू किए तो वे जाकर देश के सर्वोच्च पद पर पहुँचकर ही थमे। आज के दौर के नेता अपनी सेलरी खुद ही बढ़ाने में यकीन करते है। साथ ही महंगे गिफ्ट लेने से भी परहेज नहीं करते हैं। यहाँ तक की अपने ऊपर लगने वाले आरोपों को राजनीतिक साजिश बताकर बच निकलते हैं। लेकिन भारत में कुछ ऐसे भी नेता हुए हैं, जिन्हें लोग उनके उसूलों के लिए याद करते थे। देश के पहले राष्ट्रपति राजेंद्र प्रसाद भी ऐसे ही जननेता थे। राजेन्द्र बाबू की वेशभूषा बड़ी सरल थी। उनके चेहरे मोहरे को देखकर पता ही नहीं लगता था कि वे इतने प्रतिभा सम्पन्न और उच्च व्यक्तित्व वाले सज्जन हैं। देखने में वे सामान्य किसान जैसे लगते थे।

वे हमेशा एक अच्छे विद्यार्थी के रूप में जाने जाते थे। उनकी परीक्षा की उत्तर-पुस्तिका को देखकर एक परीक्षक ने कहा था कि *'द एग्जामनी इज बैटर दैन एग्जामनर'* यानि कि 'परीक्षार्थी परीक्षक से बेहतर है'।

डॉ प्रसाद का जन्म 3 दिसंबर, 1884 को बिहार के सारण जिले के एक छोटे से गाँव जीरादेई में हुआ था। वर्तमान में, जीरादेई सिवान जिले में स्थित है जोकि सारण जिले के विघटन के उपरांत बना था। सौभाग्यवश मेरा भी घर, जनपद सिवान में ही स्थित है। जब रेल छुक-छुक करती हुई जीरादेई स्टेशन से गुजरती है तो अपने बच्चों को ये बताते हुए मैं फूला नहीं समाता हूँ कि ये वही गाँव है जहाँ भारत के प्रथम राष्ट्रपति का जन्म हुआ था। यह इतना छोटा स्टेशन है कि यहाँ मेल/एक्सप्रेस गाड़ियों का ठहराव स्थल भी नहीं है। इनके पिता का नाम महादेव सहाय था व माता का नाम कमलेश्वरी देवी था। इनके पिता संस्कृत व फारसी भाषा के बहुत बड़े ज्ञानी थे, जबकि माता धार्मिक महिला थी। डॉ प्रसाद का विवाह 12 साल की उम्र में हो गया था। उनकी पत्नी का नाम राजवंशी देवी था।

अपने पाँच भाई-बहनों में वे सबसे छोटे थे इसलिए पूरे परिवार में सबके प्यारे थे। बचपन में राजेन्द्र बाबू जल्दी सो जाते थे और सुबह जल्दी उठ जाते थे। उठते ही माँ को भी जगा दिया करते और फिर उन्हें सोने ही नहीं देते थे। अतएव, माँ भी उन्हें प्रभाती के साथ-साथ रामायण-महाभारत की कहानियाँ और भजन-कीर्तन आदि रोजाना सुनाया करती थीं।

पाँच साल की उम्र में ही प्रसाद के माता-पिता उनको एक मौलवी के यहाँ भेजने लगे थे, ताकि वे फारसी, उर्दू, हिंदी का ज्ञान प्राप्त कर सकें। डॉ राजेंद्र प्रसाद की प्रारंभिक शिक्षा उन्हीं के गांव जीरादेई में हुई। पढ़ाई की तरफ इनका रुझान बचपन से ही था। अपने भाई महेंद्र प्रताप के साथ वे पटना के टी.के. घोष एकेडमी में जाने लगे। इसके बाद यूनिवर्सिटी ऑफ कलकत्ता में प्रवेश के लिए परीक्षा दी, जिसमें वे बहुत अच्छे अंकों से पास हुए, जिसके बाद उन्हें हर महीने 30 रुपए की स्कॉलरशिप मिलने लगी। उनके गाँव से पहली बार किसी युवक ने कलकत्ता विश्वविद्यालय में प्रवेश पाने में सफलता प्राप्त की थी जो निश्चित ही राजेंद्र प्रसाद जी और उनके परिवार के लिए गर्व की बात थी। सन् 1902 में प्रसाद जी ने प्रेसीडेंसी कॉलेज में दाखिला लिया, जहाँ से इन्होंने स्नातक किया। सन् 1907 में यूनिवर्सिटी ऑफ कलकत्ता से इकॉनोमिक्स में एम.ए. किया। सन् 1915 में कानून में मास्टर डिग्री पूरी की, जिसके लिए उन्हें गोल्ड मेडल से सम्मानित किया गया। इसके बाद उन्होंने कानून में डॉक्टरेट की उपाधि भी प्राप्त की। इसके बाद पटना आकर वकालत करने लगे जिससे इन्हें बहुत धन और नाम मिला।

सादगी, सेवा, त्याग, देशभक्ति और स्वतंत्रता आंदोलन में अपने आपको पूरी तरह से होम करने वाले डॉ राजेंद्र बाबू अत्यंत सरल और गंभीर प्रकृति के व्यक्ति थे। वे सभी वर्ग के लोगों से सामान्य व्यवहार रखते थे।

उन्होंने **'सर्चलाईट'** और **'देश'** जैसी पत्रिकाओं में बहुत से लेख लिखे थे और इन अखबारों के लिए अक्सर वे धन जुटाने का काम भी करते थे। 1914 में बिहार और बंगाल में आई बाढ़ में उन्होंने काफी बढ़-चढ़ कर सेवा-कार्य किया था। बिहार में आये वर्ष 1934 के भूकंप के समय राजेन्द्र बाबू कारावास में थे। जेल से दो वर्ष में छूटने के पश्चात वे भूकम्प पीड़ितों के लिए धन जुटाने में तन-मन से जुट गये और उन्होंने वायसराय के जुटाये धन से कहीं अधिक धन अपने व्यक्तिगत प्रयासों से जमा किया। सिंध और क्वेटा के भूकम्प के समय भी उन्होंने कई राहत-शिविरों का इंतजाम अपने हाथों मे लिया था।

बिहार में अंग्रेज सरकार के नील के खेत थे, सरकार अपने मजदूर को उचित वेतन नहीं देती थी। वर्ष 1917 में गाँधीजी ने बिहार

आकर इस समस्या को दूर करने की पहल की। उसी दौरान डॉ प्रसाद गाँधी जी से मिले और उनकी विचारधारा से वे बहुत प्रभावित हुए। सन् 1919 में पूरे भारत में 'सविनय अवज्ञा आन्दोलन' की लहर थी। गाँधी जी ने सभी स्कूल, सरकारी कार्यालयों का बहिष्कार करने की अपील की, जिसके बाद डॉ प्रसाद ने अपनी नौकरी भी छोड़ दी। चम्पारन आंदोलन के दौरान राजेन्द्र प्रसाद, गाँधी जी के वफादार साथी बन गए थे। गाँधी जी के प्रभाव में आने के बाद उन्होंने अपने पुराने और रूढ़िवादी विचारधारा का त्याग कर दिया और एक नई ऊर्जा के साथ स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लिया। सन् 1931 में काँग्रेस ने आन्दोलन छेड़ दिया था। इस दौरान डॉ प्रसाद को कई बार जेल जाना पड़ा। सन् 1942 में 'भारत छोड़ो आन्दोलन' में इन्होंने भाग लिया, जिस दौरान वे गिरफ्तार हुए और नजर बंद कर दिये गए।

भले ही 15 अगस्त, 1947 को भारत को स्वतंत्रता प्राप्त हुई, लेकिन संविधान सभा का गठन उससे कुछ समय पहले ही कर लिया गया था। संविधान निर्माण में राजेन्द्र प्रसाद ने मुख्य भूमिका निभाई थी। भारतीय संविधान समिति के अध्यक्ष डॉ प्रसाद चुने गए। संविधान पर हस्ताक्षर करके डॉ प्रसाद ने ही इसे मान्यता दी।

26 जनवरी 1950 को भारत को डॉ राजेंद्र प्रसाद के रूप में प्रथम राष्ट्रपति मिल गया। भारतीय संविधान के लागू होने से एक दिन पहले 25 जनवरी 1950 को उनकी बहन भगवती देवी का निधन हो गया, लेकिन वे भारतीय गणराज्य के स्थापना की रस्म के बाद ही दाह संस्कार में भाग लेने गये। 1957 में फिर राष्ट्रपति चुनाव हुए, जिसमें दोबारा राजेंद्र प्रसाद जी को राष्ट्रपति बनाया गया। यह एक मात्र उदाहरण है जब एक ही इन्सान दो बार लगातार भारत का राष्ट्रपति बना। सन् 1962 तक वे इस सर्वोच्च पद पर विराजमान रहे। राष्ट्रपति के तौर पर उन्होंने कभी भी अपने संवैधानिक अधिकारों में, प्रधानमंत्री या कांग्रेस को दखलअंदाजी का मौका नहीं दिया और हमेशा स्वतन्त्र रूप से कार्य करते रहे। हिन्दू अधिनियम पारित करते समय उन्होंने काफी कड़ा रुख अपनाया था। राष्ट्रपति के रूप में, उन्होंने कई ऐसे दृष्टान्त छोड़े जो बाद में उनके परावर्तियों के लिए मिसाल के तौर पर काम करते रहे। सन् 1962 में वे इस पद को त्याग कर पटना चले गए और बिहार विद्यापीठ में रहकर, जन सेवा कर जीवन व्यतीत करने लगे।

राजेन्द्र बाबू ने अपनी आत्मकथा (1946) के अतिरिक्त कई पुस्तकें भी लिखी, जिनमें *बापू के कदमों में बाबू* (1954), *इण्डिया डिवाइडेड* (1946), *सत्याग्रह ऐट चम्पारण* (1922), *गाँधी जी की देन, भारतीय संस्कृति व खादी का अर्थशास्त्र* और *मेरी यूरोप यात्रा* आदि हैं।

सन् 1962 में, उनके राजनैतिक और सामाजिक योगदान के लिए उन्हें भारत के सर्वश्रेष्ठ नागरिक सम्मान **भारत-रत्न** से नवाजा गया।

राम! राम! शब्दों के उच्चारण के साथ उनका अन्त 28 फरवरी 1963 को पटना के सदाकत आश्रम में हुआ। उनके जीवन से जुड़ी कई ऐसी घटनाएं है जो यह प्रमाणित करती हैं कि राजेन्द्र प्रसाद बेहद दयालु और निर्मल स्वभाव के व्यक्ति थे। भारतीय राजनैतिक इतिहास में उनकी छवि एक महान और विनम्र राष्ट्रपति की है। पटना में प्रसाद जी की याद में 'राजेन्द्र स्मृति संग्रहालय' का निर्माण कराया गया।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय द्वारा उन्हें **डाक्टर ऑफ लॉ** की सम्मानित उपाधि प्रदान करते समय कहा गया था- "बाबू राजेंद्र प्रसाद ने अपने जीवन में सरल व निःस्वार्थ सेवा का ज्वलन्त उदाहरण प्रस्तुत किया है। जब वकील के व्यवसाय में चरम उत्कर्ष की उपलब्धि दूर नहीं रह गई थी, इन्हें राष्ट्रीय कार्य के लिए आह्वान मिला और उन्होंने व्यक्तिगत भावी उन्नति की सभी संभावनाओं को त्यागकर गाँवों में गरीबों तथा दीन कृषकों के बीच काम करना स्वीकार किया।"

सरोजिनी नायडू ने उनके बारे में लिखा था- "उनकी असाधारण प्रतिभा, उनके स्वभाव का अनोखा माधुर्य, उनके चरित्र की विशालता और अति त्याग के गुण ने शायद उन्हें हमारे सभी नेताओं से अधिक व्यापक और व्यक्तिगत रूप से प्रिय बना दिया है। गाँधी जी के निकटतम शिष्यों में उनका वही स्थान है जो ईसा मसीह के निकट सेंट जॉन का था।"

उनकी वंशावली को जीवित रखने का कार्य उनके प्रपौत्र अशोक जाह्नवी प्रसाद कर रहे हैं। वे पेशे से एक अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति-प्राप्त वैज्ञानिक एवं मनोचिकित्सक हैं। उन्होंने बाई-पोलर डिसऑर्डर की चिकित्सा में लीथियम के सुरक्षित विकल्प के रूप में सोडियम वैलप्रोरेट की खोज की थी। अशोक जी प्रतिष्ठित अमेरिकन *एकेडमी ऑफ ऑर्ट एण्ड साइंस* के सदस्य भी हैं।

बारिश की रिमझिम बूंदों पर

आभा पांडे
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्या-महानिदेशक, ले.प.(के.)
उ.प्र., लखनऊ
शाखा-प्रयागराज

बारिश की रिमझिम बूंदों पर,
तन-मन मयूरा नाच रहा है।

शायद कोई मेघ डाकिया,
मौन पत्रिका बाँच रहा है।

इतने दिन तुम दूर रहे पर,
मन का कोना जाँच रहा है।

अधर हजारों झूठ कहें पर,
हृदय तुम्हारा साँच रहा है।

बेदिल पत्थर सी दुनिया में,
जिया हमेशा काँच रहा है।

कुछ लोग जहाँ जाते है वहाँ खुशियाँ लाते है, कुछ लोग जब जाते हैं तब खुशियाँ लाते है। -ऑस्कर वाइल्ड

लॉकडाउन का पृथ्वी के पर्यावरण पर सकारात्मक प्रभाव

संकलन- संजीव चटर्जी
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालयः प्र.म.ले. (लेखापरीक्षा-II)
उ.प्र., लखनऊ

विकास की अँधी दौड़ में धरती के पर्यावरण का हमने जो हाल किया है, वह बीते करीब चार दशक से चिंता का विषय तो बना लेकिन विकसित देश अपनी जिम्मेदारी निभाने के बजाय विकासशील देशों पर हावी होने के लिए इसे इस्तेमाल करते रहे और विकासशील देश भी विकसित देशों के रास्ते पर चलकर पर्यावरण नष्ट करने के अभियान में शामिल हो गए।

पृथ्वी सम्मेलन के 28 साल बाद भी हालात जस के तस ही थे, लेकिन कोरोना महामारी से भयाक्रांत समूचे विश्व में लॉक डाउन ने पर्यावरण को स्वस्थ होने का अवसर दे दिया है। हवा का जहर क्षीण हो गया है और नदियों का जल निर्मल। भारत में जिस गंगा को साफ करने के अभियान 45 साल से चल रहे थे और बीते पाँच साल में ही करीब 20 हजार करोड़ रुपए खर्च करने पर भी मामूली सफलता दिख रही थी, उस गंगा को तीन हफ्ते के लाक डाउन ने निर्मल बना दिया।

इतना ही नहीं चंडीगढ़ से हिमाचल स्थित हिमालय की चोटियाँ दिखने लगीं। औद्योगिक आय की दर जरूर साढ़े 7 फीसदी से दो फीसदी पर जा गिरी है। अर्थव्यवस्था खतरे में है। लेकिन ठीक यही समय है जब पूरी दुनिया पर्यावरण और विकास के संतुलन पर उतनी ही गंभीरता से सोचे जितना कोरोना संकट से निपटने में सोच रही है।

ऐसे बदला पर्यावरण का परिदृश्य

सड़क पर गाड़ियों की कतारें, धुआं उगलती फैक्ट्रियां और धूल बिखेरते निर्माण हमारे शहरों के विकास की पहचान बन गए थे। बड़े पैमाने पर होने वाली गतिविधियों ने हमारे शहरों की हवा को कितना जहरीला और नदियों को कितना प्रदूषित किया, यह हम सब जानते हैं। अब लॉकडाउन में इसमें जो सुधार हुआ है, वह भी देखिए। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, नई दिल्ली के ताजा आँकड़ों के अनुसार पर्यावरण सुधार के अच्छे संकेत 22 मार्च को जनता कर्फ्यू के दौरान भी देखे गए। दिल्ली में उस दिन वायु गुणवत्ता इंडेक्स (ए.क्यू.आई.) 101 से 250 के बीच था।

छः वर्ष पहले इसी दिन के आँकड़ों से तुलना करें तो वायु के अपेक्षाकृत बड़े प्रदूषणकारी धूल कणिकाओं पी.एम. 10 की मात्रा में 44% की कमी पाई गई। अधिक खतरनाक माने जाने वाली सूक्ष्म वायु कणिकाएं पी.एम. 2.5 की मात्रा में हालांकि 8% की ही कमी अंकित की गई, पर इसका कारण इनके नीचे आकर किसी सतह पर स्थिर होने में लगने वाला समय माना जा सकता है।

सड़कों पर मोटर वाहनों की आवाजाही रुक जाने के कारण 21 मार्च की तुलना में जनता कर्फ्यू के दिन आश्चर्यजनक रूप से जहरीली गैसों नाइट्रोजन और सल्फर के ऑक्साइडों में दिल्ली के कुछ क्षेत्रों में 34 और 51 प्रतिशत की कमी अंकित की गई। हालांकि राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्रों में नोएडा और गाजियाबाद के आँकड़े उतने अच्छे नहीं पाए गए। गुड़गाँव और फरीदाबाद के वायु प्रदूषण में उतना सुधार नहीं मिला, इसलिए वायु प्रदूषण में स्थानीय कारणों की भूमिका को भी दरकिनार नहीं किया जा सकता है।

वैश्विक अर्थव्यवस्था के नियमों से बंधे विश्व में जब अर्थशास्त्रियों और व्यापार प्रबंधकों का वर्चस्व बढ़ने लगा तो भारत जैसी प्राचीन सभ्यताओं के प्रकृति और इसके विभिन्न अवयवों को माँ के समान सम्मान देने वाली अवधारणाओं को परे धकेल अधिक से अधिक उत्पादन और खपत को ही राष्ट्रीय एवं वैश्विक समृद्धि का सूचकांक माना जाने लगा। करीब तीन दशक में ही जलवायु परिवर्तन से जुड़ी आपदाओं, वैश्विक गर्मी की समस्याओं एवं प्रदूषण से होने वाली बीमारियों ने पर्यावरण संरक्षण और पारिस्थिकीय संतुलन की आवश्यताओं की चर्चा को अनेक वैश्विक एवं राष्ट्रीय मंचों पर बहस के केंद्र में ला दिया है। पर्यावरण संरक्षण के महत्व को स्वीकारते हुए विश्व के अनेक देशों ने इस तरह धारणीय विकास लक्ष्यों को अपनी विकास योजनाओं में शामिल करना शुरू कर दिया है।

लॉकडाउन के पहले सप्ताह के आँकड़े वायु गुणवत्ता में महत्वपूर्ण सुधार बताते हैं। वायु की गुणवत्ता को समवेत रूप से शामिल मुख्य वायु प्रदूषकों की मात्रा के आधार पर वायु गुणवत्ता इंडेक्स के रूप में आँका जाता है। ए.क्यू.आई. का स्तर शून्य से पचास होने पर हवा की गुणवत्ता अच्छी मानी जाती है। इक्यावन से सौ ए.क्यू.आई. वाली हवा संतोषजनक, एक सौ एक से दो सौ वाली मध्यम स्तर की खराब, दो सौ एक से तीन सौ वाली खराब, तीन सौ एक से चार सौ अत्यंत खराब एवं चार सौ एक से से पाँच सौ ए.क्यू.आई. वाली हवा को खतरनाक माना जाता है।

केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के आँकड़ों के अनुसार, इस वर्ष 21 मार्च को 54 शहरों में अच्छी और संतोषजनक एवं 9 शहरों में खराब वायु गुणवत्ता इंडेक्स की तुलना में 29 मार्च को भारत के कुल 91 शहरों में वायु गुणवत्ता अच्छी (30 में) एवं संतोषजनक (61) पाई गई। इस दिन किसी भी शहर की हवा खराब नहीं मिली परन्तु कानपुर, लखनऊ, मुजफरनगर, कल्याण, सिंगरौली, गुवाहाटी जैसे कई शहरों में 25-28 मार्च के आंकड़ों अनुसार स्थानीय कारणों से पी.एम. 2.5 का स्तर अवश्य खराब रहा। दिल्ली में इस वर्ष 25 मार्च से 1 अप्रैल के बीच

लॉकडाउन के पहले सप्ताह में पी.एम. 2.5 मात्र 16-42 माइक्रोग्राम पर क्यूबिक मीटर मापा गया जो 2019 में 72-187, 2018 में 72 से 171 तथा 2016 में 49 से 116 माइक्रोग्राम प्रति क्यूबिक मीटर की तुलना में काफी कम है।

मीडिया रिपोर्ट्स के आधार पर कहा जा सकता है कि इस लॉकडाउन के कारण दिल्ली में यमुना एवं कानपुर तथा वाराणसी में गंगा के प्रदूषण स्तर में भी महत्वपूर्ण सुधार आया है। वैसे नमामि गंगे परियोजना पर अमल में कई लगातार प्रदूषित नालों को पिछले साल बंद किया जा चुका है। उत्तर प्रदेश प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के आँकड़े बताते हैं कि इस दौरान वाराणसी में गंगा में घुलनशील ऑक्सीजन की मात्रा 8.3 -8.9 ग्राम प्रति लीटर पाई गई, जो स्वच्छ जल के न्यूनतम स्तर 7 ग्राम प्रति लीटर से पर्याप्त अधिक है। दिल्ली जल बोर्ड और नागरिकों का मानना है कि इस लॉकडाउन में यमुना का प्रदूषण स्तर भी पर्याप्त मात्रा में सुधरा है।

अतः हम यह कह सकते है कि भले ही कोरोना एक वैश्विक महामारी के रूप में उभरी है किन्तु वैश्विक पर्यावरण के दृष्टिकोण में यह पृथ्वी के लिए एक छद्म वेश में आशीर्वाद है (ब्लैसिंग्स इन डिसगाइज़)।

शैलेंद्र कुमार शर्मा
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्या-महानिदेशक, ले.प.(के.)
उ.प्र., लखनऊ

हिन्दी की वेदना

भारत एकमात्र ऐसा देश है
जहाँ ऐसा परिवेश है,
कि जो लोग कुछ नहीं जानते है
लेकिन अंग्रेजी में बतियाते है।
वो अति विशिष्ट विद्वानों की
श्रेणी में गिने जाते है।।

और ऐसे लोगो के बीच
हिंदी बोलने वाला शर्माता है।
'क्या हम अंग्रेजियत से आजाद हुए है?'
ये प्रश्न खड़ा हो जाता है।।

तरक्की पसंद लोग
ऐसे प्रश्नग्रस्त लोगो को पिछड़ा बताते है।
प्रश्न का उत्तर देना तो दूर
प्रश्न को ही ठुकराते है।।

जरा सोचिये कि विश्व में
मातृभाषा के साथ कही ऐसा सलूक है?
लेकिन फिर भी सब मूक है।।

सितम्बर में आता है याद।
हिंदी का वार्षिक श्राद्ध।।

माँ, मातृभूमि और मातृभाषा।
का अनादर हुआ जरा सा।।
तो सारी पूजा, इबादत, व्रत और रमजान।
सभी बेकार है श्रीमान।।

नेता जी का नाश्ता

नेता जी दौरा करके आये
आकर नौकर को बुलवाये,
– रामलाल, आज तबियत ढीली है
कोई पेट दर्द की गोली है?
रामलाल बोला – मालिक आज क्या था खाया?
नेता जी बोले –
आज तो हल्का फुल्का था आजमाया।
सुबह नाश्ते में अस्पताल का एक जनरल वार्ड
और लंच में एक स्कूल के
बच्चों का मिड डे मील चबाया।

रामलाल बोला– मालिक ये क्या गजब ढाया?
आपने ये सब घटिया खाना क्यों खाया?
नेता बोला– तुम ज्यादा न करो सवाल
मेरी सास न बनो रामलाल।
जल्दी कोई इलाज बताओ
वरना यहाँ से दफा हो जाओ।

रामलाल बोला–
मालिक आप कल वही दौरे पर जाना,
नाश्ते में दो प्राइवेट वार्ड और लंच में
तीन जिलों की वृद्धवस्था पेंशन खाना।
नेता जी को दवाई का सुनकर नाम,
तुरन्त ही होने लगा आराम।

साहब गजब है, ये पेट दर्द की बीमारी
होती है उन्हें जिनका पेट भरा है भारी।
गरीबों की आँतों में तो होती है केवल हवा
नमक, मिर्च और पानी है जिसकी दवा।
और जब कभी ये आँते कुलमुल्हाती हैं
तो नेताजी के पेट का दर्द बन जाती हैं।

कुछ संस्मरण

संजीव कुमार श्रीवास्तव
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्या-महानिदेशक, ले.प.(के.)
उ.प्र., लखनऊ

यूँ तो आज के आधुनिक काल में हर कोई अपने में ही व्यस्त है एवं मानवीय संवेदनाएं एवं मूल्यों को भूलता जा रहा है फिर भी संवेदनाएं पूरी तरह से समाप्त नहीं हुई है और लोग विपत्ति के समय में अनजान की मदद को तत्पर रहते हैं।

वर्ष 2004 की बात है, जब मैं कार्यालय से अवकाश के पश्चात घर वापस आ रहा था तभी मेरा स्कूटर रास्ते में पड़े एक पत्थर की वजह से असंतुलित होकर गिर पड़ा एवं सिर में चोट आने की वजह से मैं कुछ क्षणों/पलों के लिए होश खो बैठा, होश में आने पर देखा कि दो युवक मुझे और स्कूटर को सड़क के किनारे ले आए हैं, और सामने ही सिविल अस्पताल महानगर का गेट था, मैं स्वयं ही अस्पताल में अंदर चला गया और वे दोनों युवक वापस चले गए।

अस्पताल पहुँचने के कुछ समय के पश्चात ही मेरी स्थिति बिगड़ने लगी तब तक मैंने देखा कि दोनों नवयुवक पुनः वापस अस्पताल आ गए और तब तक मेरे साथ ही रहे जब तक परिवार के सदस्य अस्पताल नहीं पहुँच गए आज भी उन नवयुवकों का, जेहन में ख्याल आता है, तो सिर श्रद्धा से झुक जाता है।

प्रस्तर जिसने लेखापरीक्षा विभाग के प्रति धारणा बदल दी- किसी संस्था/विभाग की लेखापरीक्षा का उद्देश्य, संस्था/विभाग के कार्यकलापों को उस विभाग में लागू नियमों, अधिनियमों या आदेशों के प्रकाश में क्रियान्वयन सुनिश्चित करना तथा अन्यथा की दशा में प्रकरणों को प्रकाश में लाना है ताकि सुधारात्मक कदम उठाए जा सकें।

सामान्यतः विभागों/संस्थानों में कार्यरत लोगों अथवा जनमानस के मस्तिष्क पटल में यह अवधारणा है कि लेखापरीक्षा का कार्य विभाग के कार्यकलापों में कमी निकालना, दोषों को उजागर करना है, कर्मियों की वसूली करना ही है।

यहाँ मैं इस बात का भी उल्लेख करना जरूरी समझता हूँ कि अब तक के सेवा काल में तीन बार ''व्यक्तिगत दावा'' अनुभाग में कार्य कर चुका हूँ और मेरे बारे में हमारे कार्यालय में यह कहावत है कि यदि किसी दावे को मेरे द्वारा देखा जा रहा है तो पूरी संभावना है कि दावा की गई राशि को अस्वीकृत कर दिया जाए, राशि में कमी कर दी जाए अथवा किसी न किसी स्तर पर दावे को आवश्यक सुधार हेतु वापस कर दिया जाए।

अब मैं उस प्रकरण पर आता हूँ जो कि लोगों द्वारा मेरे बारे में बनाई गई धारणा को गलत साबित करती हैः

बात उस समय की है जब मैं 'वस्तु एवं सेवा कर आयुक्तालय गाजियाबाद' की लेखापरीक्षा कर रहा था, उस दौरान कर्मियों के वेतन-निर्धारण की जाँच में पाया कि दो निरीक्षकों को उनके देय वेतन से कम वेतन का भुगतान किया जा रहा है जिस पर मेरे द्वारा लेखापरीक्षा टिप्पणी के माध्यम से आपत्ति उठाई गई। उक्त टिप्पणी के जवाब में आयुक्तालय द्वारा अपनी गलती स्वीकार की गई एवं दोनों कर्मियों के वेतन को संशोधित कर उनको देय वेतन निर्धारित किया गया, साथ ही बकाया देय राशि का भी भुगतान किया गया।

लेखापरीक्षा के अंत में प्रस्तरों पर चर्चा के दौरान आयुक्तालय के अधिकारियों द्वारा उक्त लेखापरीक्षा टिप्पणी के बारे में कहा गया कि हम तो अभी तक यही समझते थे कि लेखापरीक्षा में देय दावों को जाँच में कुछ कर्मियों की वसूली तो सुनिश्चित है परंतु आपने हमारी यह धारणा बदल दी।

विदेशी भाषा का किसी स्वतंत्र राष्ट्र के राजकाज और शिक्षा की भाषा होना सांस्कृतिक दासता है।

- वाल्टर चेनिंग

जब तक इस देश का राजकाज अपनी भाषा (हिन्दी) में नहीं चलता, तब तक हम यह नहीं कह सकते कि इस देश में स्वराज्य है।

- मोरारजी देसाई

मेरा आग्रहपूर्वक कथन है कि अपनी सारी मानसिक शक्ति हिन्दी भाषा के अध्ययन में लगायें। हम यही समझें कि हमारे प्रथम धर्मों में से एक धर्म यह भी है।

- विनोबा भावे

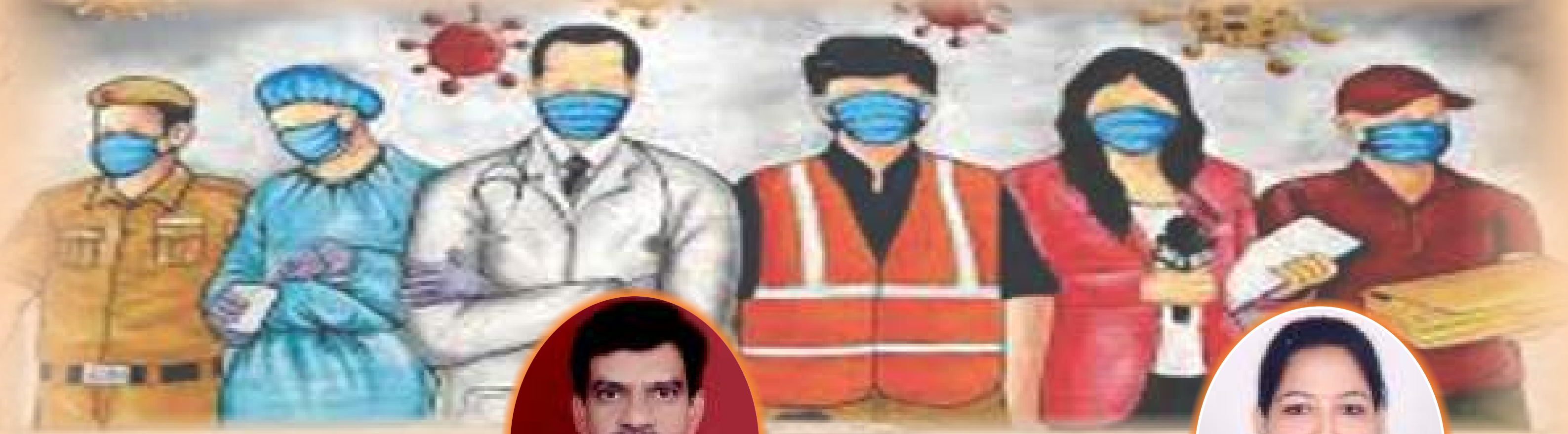

कोरोना योद्धाओं को नमन

अतुलेश रंजन
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्या-निदेशक, वित्त एवं संचार लेखापरीक्षा,
लखनऊ

कोरोना योद्धाओं को नमन और है यही अपील
तुम डिगो नहीं, रुको नहीं, बढ़े चलो, चले चलो।।

माना कि डगर नहीं है तुम्हारी आसान
बहुत से विघ्न व संकट और संघर्ष है अपार
परन्तु तुम निडर होके, बढ़े चलो, चले चलो।।

आज तुम पर है बहुतों की श्रद्धा व विश्वास अपार
कि तुम्ही हो जो कर सकते हो उनकी नैय्या पार,
तुम रुको नहीं, बढ़े चलो, चले चलो।।

आये चाहे जितने विघ्न तुम बढ़े चलो उजाले की ओर
इस अनमोल कर्म में सम्पूर्ण विश्व है साथ तुम्हारे
तुम डिगो नहीं, बढ़े चलो, चले चलो।।

माना कि शत्रु है बहुत क्रूर व विशाल
और अभी नहीं है,
अविष्कारित इसका कोई निदान
किन्तु एक दिन आएगा इस महामारी का टीका,
दवा का अविष्कार अवश्य हो जाएगा,
तब तक तुम्ही हो संक्रमितों के तारणहार
तुम रुको नहीं, बढ़े चलो, चले चलो।।

कोरोना स्पेशल

शालिनी रानी सिंह
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्या-प्र.म.ले. (लेखापरीक्षा-II)
उ.प्र., लखनऊ

कैसा अदभुत मंजर है...
पशुपक्षी बाहर और इन्सान घर के अंदर है...
हवाओं में अब घुलता कम जहर है...
हर तरफ मौत की दहशत का कहर है...
इस वक्त थोड़ा ज्यादा हरा हर शजर (पेड़) है...
साफ-सुथरी सी सडकों की नजर है...
थम सा गया जीवन का दौड़ता सफर है...
आजकल मेरे गाँव सा कुछ कुछ लगता ये शहर है।

मेरी दोस्त

तुम मुझे बहुत अच्छी लगती हो...
तुम मुझे सबसे सच्ची लगती हो...
तुम मुझे जीने की वजह देती हो...
रोज कुछ अच्छा करने की प्रेरणा देती हो।

जब किसी बात से मन उदास हो तो...
तुम मुझे हिम्मत और हौसला देती हो...
तुम मेरी कमियाँ और कमजोरियाँ जानती हो...
तुम मेरी अच्छाईयों को निखारती हो...
तुम मेरे दिल का अभिन्न हिस्सा हो...
मेरी ज़िंदगी का एक अहम किस्सा हो।

तुम मुझे किसी से भी बाँटना नहीं चाहती हो...
तुम मुझे, मैं जैसी हूँ वैसे ही स्वीकारती हो...
तुम मेरे साथ खुलकर हँसती खिलखिलाती हो...
जो मैं रोना चाहूँ तो अपना कन्धा
चुपके से आगे कर देती हो...
तुम मुझे मुझसे भी ज्यादा जानती हो...
तुम मुझे हमेशा अपना मानती हो।

अवसाद आखिर क्यों?

नितनेम सिंह सोडी (मनोवैज्ञानिक शोधकर्ता)
पुत्र श्री जे.एस. सोडी, सहायक लेखा अधिकारी
कार्या-महालेखाकार (ले. एवं हक.) II शाखा-लखनऊ

यदि आप, अपने को अवसादग्रस्त महसूस कर रहे हैं और वास्तव में अपने आप को ठीक करना चाहते हैं, तो आपको सबसे पहले उस कारण का पता लगाना होगा, जो आपको अवसाद का एहसास करा रहा है। यह कारण एक दर्दनाक घटना हो सकती है या कोई अनुभव हो सकता है, जो आपके अतीत में हुआ हो, या इसका कारण निरंतर दर्दनाक पीड़ा भी हो सकता है, जिसका आपने अतीत में बहुत लंबे समय तक सामना किया हो। अपने अवसाद को जड़ से मिटाने के लिए, सबसे पहले आपको अपने अतीत से उस कारण को पहचानना होगा, जो आपको अवसाद का एहसास करा रहा है, क्योंकि उसके बाद ही, आप अपने अवसाद को जड़ से मिटाना शुरू कर सकते हैं ... और एक अच्छी खबर यह है कि आपको यह सोचने या ढूँढ़ने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि जब आप इन शब्दों को पढ़ रहे थे, आपके दिमाग ने खुद से ही उस कारण को ढूँढ़ लिया है जो आपको अवसाद महसूस करा रहा है खुद बताइए, ऐसा है या नहीं?

जैसा कि आप अब वह कारण जान चुके हैं जो आपको अवसाद महसूस करा रहा हैं, अब आपको कुछ सवालों के जवाब देने है, अपने आप को ... अपने आप से पूछें, खुद से ये कुछ सवाल करिये और जवाब दीजिये ... और याद रखें, इन सवालों का जवाब देते हुए खुद से आपको पूरी तरह ईमानदार रहना होगाः

- क्या आपका अवसाद सिर्फ उन अपेक्षाओं या उम्मीदों के कारण है जो आपने अतीत में किसी घटना या व्यक्ति से रखी थी जो पूरी नहीं हुई?
- क्या अवसाद महसूस करने के पीछे आपका कारण केवल एक प्रकार की अधूरी अपेक्षा या अधूरी उम्मीद है?
- क्या इसे वास्तव में अवसाद कहेंगे, या फिर वह सिर्फ आपकी अधूरी अपेक्षाएं या अधूरी उम्मीदें ही हैं?
- अगर अतीत में आपने यह नहीं सोचा होता कि आपकी अपेक्षाएं/उम्मीदें पूरी होंगी, तो क्या आप इस समय अवसाद महसूस कर रहे होते?

जरा गौर से सोचिये, वह आपकी अधूरी अपेक्षाएं/उम्मीदे भी नहीं थी, बल्कि वह आपकी केवल कल्पना मात्र थी कि अतीत में वह पूरी हो जानी चाहिए थी और अभी भी- आप अवसाद महसूस कर रहे हैं क्योंकि आप अभी भी यह मान रहे हैं कि उन अतीत की अपेक्षाओं/उम्मीदों को पूरा हो जाना चाहिए था।

- क्या आपने खुद से यह मान लिया था कि आपकी वह अपेक्षाए/उम्मीदें पूरी होंगी ... या आप किसी और के कहने पर विश्वास कर रहे थे?
- और भले ही आपने स्वयं ही मान लिया हो- ईमानदारी से जवाब दें कि क्या आपकी कल्पनायें समाज और संस्कृति के मानदंडों के आधार पर थी या नहीं? समाज और संस्कृति ने ही आपको सिखाया है कि क्या उम्मीदे करनी है और क्या अपेक्षायें रखनी है ऐसा है या नहीं?

और हाँ, यह वही एहसास है, जो आपको महसूस होना चाहिए कि अवसाद कोई बीमारी या स्थिति नहीं है जिससे आप पीड़ित है, बल्कि जैसा कि हम अब समझते हैं कि अवसाद एक स्वाभाविक परिणाम है जो तब होता है जब भी आप समाज या दूसरों की बताई हुई मान्यताओं को स्वीकार करते हैं समाज एवं अन्य लोग बताते है कि आपका जीवन कैसा होना चाहिए और आप उन चीजों को मानते हैं, और जब आप विनम्रतापूर्वक समाज एवं अन्य लोगों द्वारा आपको दी गई इन मान्यताओं को स्वीकार करते हैं कि आपका जीवन कैसा होना चाहिए, तो अवसाद होना तय है, क्योंकि आपकी धारणाएं, यानी आपकी अपेक्षायें/उम्मीदें काल्पनिक है। आपकी अपेक्षायें/उम्मीदें न तो आपकी खुद की हैं और न ही वह वास्तविक हैं, वह केवल समाज एवं अन्य लोगों द्वारा आपको दी गयी है और आपने अनजाने में बिना विचार किये उन्हें स्वीकार कर लिया है।

अब सोचिये, कैसे किसी भी चीज को मिटाया जा सकता है जो कभी थी ही नहीं? आपके अवसाद को कैसे हटाया जा सकता है जब यह कभी भी अस्तित्व में था ही नहीं? किसी चीज का मौजूद होना जरूरी है ताकि उसे हटाया जा सके- लेकिन आप उस चीज को कैसे मिटा सकते हैं जो कभी थी ही नहीं?

मैं आपको उदहारण से समझाता हूँ- आपका अवसाद आपके अंदर का अंधकार है, जिसे हटाने के लिए आप अपने अंदर ज्ञान और समझ का प्रकाश रोशन कर सकते हैं- आप उस प्रकाश से भर जाएंगे और अवसाद स्वयं गायब हो जाएगा, लेकिन आप अंधेरे को इसके अलावा और कैसे दूर कर सकते हैं? क्या अंधेरे का कोई अस्तित्व है भी? क्या अंधेरा वास्तविक है, या वह सिर्फ प्रकाश की अनुपस्थिति है?

आशा है कि आपके अंदर का अवसाद रूपी अंधकार अब जड़ से मिट गया होगा, और अगर ऐसा नहीं है, तो एक बार पुनः इस लेख को समझते हुए ध्यानपूर्वक पढ़े, और इसके बाद आपके अंदर वास्तव में अवसाद रूपी अंधकार बिल्कुल नहीं बचेगा- आंशिक रूप में भी नहीं।

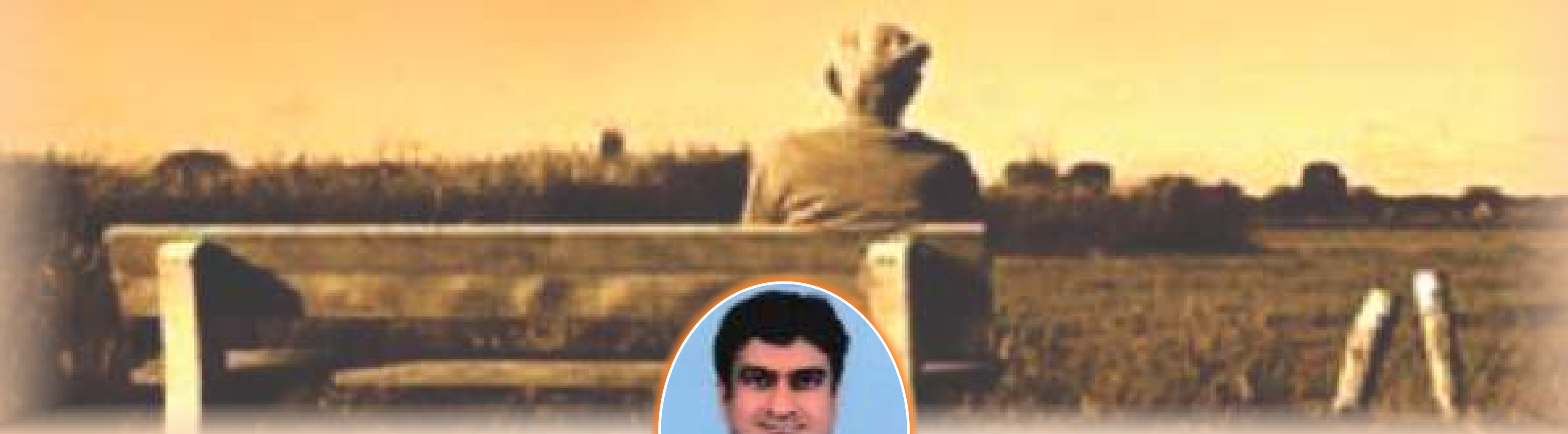

जीवन एक संग्राम

जीवन एक संग्राम,
इसमें नहीं विश्राम,
जब भी तुम थक जाओगे,
आगे नहीं बढ़ पाओगे,
पीछे मुड़कर देखने का, न लेना तुम नाम,
करने ही होगें, तुमको तो अनेक काम।
जीवन एक संग्राम.......

किस अर्थ ये जन्म लिया,
उसका मतलब समझ लिया,
नेक करनी से, तुम आगे बढ़ना,
बुराइयों से तुम, पीछे ही रहना,
जितना समझो, उतना ही करना,
भूल हो तो, उसे स्वीकार करना।
जीवन एक संग्राम.......

जीवन बस जीने का नाम,
मरने से न होगा, कोई काम,
मुश्किलों से, जो घबराओगे,
व्यर्थ में ही जीवन गँवाओगे,
मुश्किलों पर जो विजय पाओगे,
विश्वप्रिय, तब तुम बन जाओगे।
जीवन एक संग्राम.......

राजेश कुमार-I
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालयः प्र.म.ले. (लेखापरीक्षा-II)
उ.प्र., लखनऊ

जीवन एक रंगमंच

जीवन एक रंगमंच है,
इसके हम सब कलाकार,
कभी आप हमारा,
तो कभी हम आपका करते सत्कार।

बड़ी बेढंगी है ये,
कभी करती त्रस्त,
तो कभी चमत्कार,
कभी हँसाती है ये,
तो कभी मचाती हाहाकार।

गिरगिट की तरह रंग बदलती है,
है ये सर्पाकार,
कैसा दंश मारे ये,
मानव शरीर हो जाए बेकार।

कभी अरमानों को करती ध्वस्त,
तो कभी साकार,
फिर भी धन्य है ये जिन्दगी,
जिसकी जन-जन करते जयकार।

हकीम : **शायद जहर फैल गया है। .. टाँग काटनी पड़ेगी** (कुछ दिन बाद दूसरी टाँग भी नीली पड़ गयी।)
इसमें भी जहर फैल गया है ये भी काटनी पड़ेगी (हकीम ने मरीज की दोनों टाँगे काट दी और नकली टाँगे लगा दी फिर नकली टाँग भी नीली पड़ गयी)
हकीम : **अब तुम्हारी बीमारी समझ आ गयी, शकील भाई... तुम्हारी लूँगी कलर छोड़ती है।**

☺☺☺☺☺☺☺☺

जजः **तुमने समाज के लिये कौन सा भला काम किया है?**
मुजरिमः **साहब, हमारे कारण ही पुलिस और अदालत में लाखों लोगों को नौकरी मिली हुई है!**

☺☺☺☺☺☺☺☺

रमेश से किसी ने पूछाः **रेडियो और अखबार में क्या अंतर है?**
रमेश बहुत सोचने के बादः **देखो, बात है समझने की, अब रेडियो में आप रोटियाँ तो नहीं लपेट सकते ना!**

हार-जीत

विजय शंकर वर्मा
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्या-महानिदेशक, ले.प.(के.)
उ.प्र., लखनऊ, शाखा-प्रयागराज

मैं जो भी लिखने जा रहा हूँ वह कोई काल्पनिक कथा नहीं है अपितु आत्मकथा ही है जो बिना लाग-लपेट के आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूँ। इसे लिखने का मेरा औचित्य आत्मकथा लिखना नहीं है बल्कि सहकर्मियों के साथ हुई वार्ता के पश्चात् हृदय में उठे उद्वेग, द्वंद्व एवं संस्मरण की परिणति मात्र है जो पाठकों को आत्म-मंथन के लिए अवश्य प्रेरित करेगी।

बचपन में मैंने महात्मा बुद्ध, महावीर जैन जैसे अहिंसावादी महापुरुषों की जीवनी पढ़ी, उनके उपदेशों में यह पढ़ा था कि महात्म्य आने पर एक स्थिति ऐसी भी आती है कि व्यक्ति को सुख-दुख, हार-जीत, मान-अपमान का अंतर प्रतीत नहीं होता, यही मोक्ष या निर्वाण की स्थिति होती है। इसका असर मेरे अंदर कुछ ऐसा हुआ कि मैं भी उनके जैसा ही बनने का प्रयास करने लगा और इसी क्रम में मेरे अंदर कुछ ऐसे संस्कार आ गये, जो आज के सामाजिक परिप्रेक्ष्य में जहाँ छाती के ऊपर चढ़कर दरेरते हुए आगे बढ़ने को ही आदर्श माना जाता है, मेरे लिए संघर्ष उत्पन्न करता है। यद्यपि मेरे दादाजी जो कुश्ती, दाँव-पेंच, लाठी चलाना, द्यूत-क्रीड़ा (जुआ), बिना रस्सी के कुऐं में उतरना, सर्प पकड़ना इत्यादि ऐसे अनेक अच्छे-बुरे कार्यों में माहिर थे, बिल्कुल विद्रोही तेवर के थे, किसी की गलत बात का तुरंत मुँहतोड़ उत्तर हर भाषा में देने को तैयार रहते थे। कुल मिलाकर कह सकते हैं कि कृष्णत्व को धारण करते थे। मुझे विरासत में विद्रोही जीन्स एवं संस्कार ही मिला था जिसमें यही सिखाया जाता रहा कि किसी के अधर्म को सहन न करो येन-केन-प्रकारेण तुरंत कुचल दो, कोई एक थप्पड़ मारे तो उसका एक हाथ तोड़ दो, दो मारे तो दोनों हाथ तोड़ दो, लेकिन बुद्धत्व का जो बीज प्रस्फुटित हो गया था वह मेरा पीछा नहीं छोड़ता था। वैसे पिताजी की नौकरी शहर में होने के कारण बचपन से ही दादाजी के पारिवारिक संस्कारों से दूरी हो गयी थी केवल गर्मियों की छुट्टियों में ही जब गाँव जाता, तो दादाजी के वीरता के कारनामें सुनकर एवं सम्पूर्ण समाज में उनका दबदबा देखकर गर्वानुभूति होती और तन-मन में वीर रस का संचार तो होता था फिर भी मैं दादाजी को भी शांति, अहिंसा का पाठ पढ़ाने से भी नहीं चूकता था। इसपर दादाजी मुस्कुराकर कहते, "तुम अभी बच्चे हो जीवन के अनुभव नहीं है, तुम्हारे इस महात्मापन से जिंदगी पार नहीं होने वाली, कुछ मुझसे भी सीख लो।" मेरे नकारने के बाद भी दादाजी ने मुझे लाठी और कुश्ती के कई दाँव भी सिखाए जिसमें से कुछ तो बहुत ही खतरनाक थे। एक के लिए तो उन्होंने हिदायत भी दिया कि इस दाँव का प्रयोग तभी करना जबकि तुम्हारे सामने वाला तुम्हारा शत्रु हो और बचने का कोई अन्य साधन न हो क्योंकि इसके सही प्रयोग से अगले का हाथ टूटना निश्चित है। लेकिन छुट्टियाँ समाप्त होने पर जब वापस शहरी जिंदगी में लौटता तो मेरे अंदर आनुवांशिक कृष्णत्व और वाह्य परिवेश से प्राप्त बुद्धत्व भाव के बीच संघर्ष चलता, लेकिन अंततः बुद्धत्व का गुण ही गुरुत्व पाता था।

ग्यारहवीं पास कर जब पॉलीटेक्निक करने के लिए गया तो मेरे लिए यह एकदम नया संसार था क्योंकि इससे पहले तक मैं स्कूल-घर तक ही सीमित था। उस पर भी जिस कालेज में पढ़ता था वह भी बिल्कुल संस्कार एवं शिक्षा का आदर्श मंदिर था। इसलिए जाति-पात, धर्म-भेद, वाह्य चातुर्यता से विमुख रहा। नहीं पता था कि विद्यार्थियों की कोई जाति होती है या किसी अध्यापक के लिए उसका शिष्य ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य या अन्य किसी श्रेणी का भी होता है। नहीं पता था कि सहपाठियों में भी ठाकुर-पण्डित-हरिजन जैसा कोई जातिगत भेद होता है लेकिन वहाँ नये कालेज में पहुँचकर इन श्रेणियों के साथ एक नए भेद का भी पता लगा कि शहरी और ग्रामीण भी भेद करने के लिए अच्छा आधार है। लेकिन जिसे बुद्धत्व की राह ही पसंद हो, उसे इन सब भेदों से क्या लेना-देना और मैं बिना किसी भेद-भाव, गुटबंदी के कालेज में अपने अध्ययन में रत हो गया। जैसा कि विद्यार्थी जीवन में गाली-गलौज का स्वभाव होता है वो भी मेरे पूर्व विद्यालय ने नहीं सिखाया था। संक्षेप में कहा जाय तो मेरा यह बुद्धत्व, मुझे बुद्धु या भीरू साबित करने के लिए पर्याप्त था और सत्य यही था कि इस नये विद्यालय के सहपाठीगण उससे अधिक कुछ समझते भी नहीं थे। लेकिन एक दूसरा सत्य भी था, जिसे बुद्धत्व प्राप्त करने वाला व्यक्ति ही समझता था और मैं बिना किसी की परवाह किए अपने-आपको दृढ़ प्रतीत करता था। बुद्धत्व अपनाया, महात्म्य का वचन लिया ये मेरी त्रुटि थी लेकिन प्रवृत्ति पर किसी का वश नहीं होता एवं प्रकृति ने भी कोई कसर नहीं छोड़ी थी। उन दिनों बिल्कुल कृशकाय हुआ करता था। पिताजी ने उपाधि 'सिंह' के स्थान पर 'वर्मा' लिखना स्वीकार किया और परंपरा को आगे बढ़ाया। इस नए संस्थान में प्रायः पूछा जाता रहा कि कौन वाले वर्मा हो, कुछ तो अपने को बहुत ही स्मार्ट समझने वाले थे मेरे स्पष्टीकरण के पश्चात् भी अनेक प्रकार से परिभाषित करने का प्रयास करते थे। वैसे उससे मुझे फर्क क्या पड़ना था जो मन-मस्तिष्क से इन बातों से ऊपर उठ चुका हो, लेकिन उन्हें अवश्य पड़ा जो इससे सरोकार रखते थे। परिणाम यह रहा कि मेरी सहनशीलता को दुर्बलता समझने में उन्हें बिल्कुल देर न लगी और जब भी अवसर मिलता वाक् प्रहार करते, व्यंग्य बाण छोड़ते और मैं भी ठहरा पत्थर कि कोई फर्क ही महसूस न करता।

आनुवंशिकता ने मुझे केवल क्रूरता, लड़ाई-झगड़े सिखाने का ही प्रयास नहीं किया था उसने मेरे अंदर तकनीकि कुशलता का भंडार भी दिया था जिससे इंजीनियरिंग की प्रयोगिक कक्षाओं में अनुदेशकों द्वारा मुझे बराबर सम्मान मिलता रहा जो सहपाठियों की ईर्ष्या को बढ़ाने के लिए पर्याप्त था लेकिन मैं था अहम्-विहीन, अपने बुद्धत्व से बाज नहीं आता था।

इसी प्रकार लोगों की टिप्पणियाँ सुनते, नजरंदाज करते

अभियांत्रिकी का प्रथम वर्ष बीत गया। द्वितीय वर्ष में था कि दादाजी की मृत्यु हो गई जिसका मुझे बहुत ही सदमा लगा। मैं क्लास करता और हॉस्टल के कमरे में चला जाता। वैसे भी साथियों की मानसिक स्थिति से मैं ताल-मेल नहीं बैठा पाता था क्योंकि मैं तो सभी में ही राम का चरित्र देखना चाहता था। शायद यह मेरी भूल ही थी कि जिस आदर्शवादिता में जीना चाहता था वह संभव नहीं था लेकिन अपनी इस गलती का मुझे भान भी नहीं था। जिस बुद्धत्व को मैं स्वीकार करता था वही स्वरूप सभी में देखना चाहता था।

जाड़े का मौसम आारंभ हुआ, उन दिनों बिजली की बहुत ही किल्लत हुआ करती थी उसपर भी ग्रामीण विद्युत आपूर्ति के कारण दिन में लगभग नहीं के ही बराबर आती थी। चूँकि आधे दिन थ्योरी एवं आधे दिन प्रैक्टिकल की क्लास का टाइम-टेबल था जो बिजली की अनुपलब्धता में प्रैक्टिकल की क्लास अधिकतर नहीं चलती थी, जिसका उपयोग हम सभी मैदान में बैठकर धूप लेने में करते थे। मेरे बुद्धत्व स्वभाव और कुछ प्रैक्टिकल अध्यापकों द्वारा मेरी तारीफ किए जाने के कारण कुछ लोग अब मुझ पर कुछ अधिक ही हावी होना चाहते थे पर मैं उनके द्वारा किए जाने वाले सभी प्रकार के मजाक-टिप्पणियों को हँसकर टाल जाता। लेकिन जिन्हें प्रतिद्वंदिता की ही चाहत हो उन्हें चैन कहाँ, एक न एक बहाने ढूँढते थे उलझने के लिए, लेकिन मेरा बुद्धत्व मुझे उलझने ही नहीं देता था और मैं हार मानकर भी जीत जाता था।

एक दिन मेरे ब्राँच के लगभग सभी छात्र घास पर बैठे धूप सेंक रहे थे कि उनमें कुछ छात्रों ने उसी मैदान में मल्ल युद्ध किए जाने का प्रस्ताव रखा। आपस में चर्चा चली कि कौन किसके साथ लड़ेगा जिसमें बहुलता मुझसे लड़ने की ही थी। पता नहीं यह आपसी सलाह थी या मुझे ही सबसे मुलायम चारा माना जा रहा था लेकिन मैं तो लड़ना ही नहीं चाहता था। मेरे मना करने पर लोग और भी मुखर हो गये और मेरे प्रतिद्वंदियों की संख्या बढ़ती ही गयी। दो-चार मिनट यही बातों का सिलसिला चलता रहा तभी उनमें से एक साथी इन्द्रजीत सिंह जो कद में तो लगभग मेरे बराबर ही थी लेकिन बिल्कुल ठोस-गठीले शरीर का स्वामी था, उठ खड़ा हुआ और मेरे बिल्कुल पास आकर मुझे ललकारने लगा। वैसे कोई भी देखकर प्रथम दृष्टया यही कहता कि कुश्ती के लिए जोड़ी सही नहीं है क्योंकि मैं चालीस किलो का था तो वह साठ-पैंसठ किलो का। फिर भी उसे ही लड़ने के लिए लोगों का समर्थन भी मिलने लगा, यूँ कहिए कि उसे ही मेरे प्रतिद्वंदी के रूप में प्रतिनिधि मान लिया गया था। फिर भी मैं बैठे-बैठे ही लड़ने से मना करने लगा, अब मुझे डरता हुआ समझ कर उसका मन बढ़ा और मेरे बुद्धत्व को बुद्धुत्व मानकर मेरे हाथों को पकड़कर जबरदस्ती खड़ा किया कि अचानक मेरे दिमाग में जैसे बिजली कड़की और दादाजी को अपने निकट प्रतीत करने लगा जो मुझे एहसास दिला रहे थे कि मान-मर्दन करने की इच्छा रखने वाला ही शत्रु होता है, यही कुश्ती के दाँव आजमाने का उचित समय है। फिर मेरी चेतना लौटी और बुद्धत्व जाग उठा, सोचने लगा कि कहीं इसका हाथ टूट गया तो क्या होगा। इस बुद्धत्व और कृष्णत्व के द्वन्द्व में जो एकाध मिनट समय लगा तो उसने अपना हाथ मेरी गर्दन पर रख दिया कि दादाजी की आत्मा पूरी तरह मेरे ऊपर सवार हो गई फिर क्या था वही खतरनाक दाँव लगाया और अगला स्टेप लेने वाला ही था कि फिर मेरा बुद्धत्व मेरे ऊपर सवार हो गया ''यह क्या हो रहा है हाथ तोड़ोगे क्या?'' और आधा दाँव लगाकर ज्यों छोड़ा था कि इन्द्रजीत चारों खाना चित्त। ये कोई कहावत रूप में नहीं बल्कि वास्तव में अपने जीवन में पहली बार देखा कि इस कहावत का अर्थ क्या होता है। एक मिनट के लिए पूरी तरह सन्नाटा छा गया, इन्द्रजीत फिर उठा मैंने फिर मना किया तो उसने यह कहते हुए ललकारा कि ''मैं सँभल नहीं पाया था तुमने गलती से मुझे पटक दिया था, एक बार फिर से''। मैं मना करता रहा कि उसने मेरा हाथ पकड़ कर मेरे शरीर से चिपक कर जोर लगाया कि दादाजी फिर सवार हुए, एक बार फिर वही हुआ, लगता था जैसे किसी फिल्म की शूटिंग हो रही हो, फिर वही सन्नाटा। फिर अंदर का बुद्धत्व जागा और मैंने उसे पकड़कर उठाया लेकिन खड़ा होते ही एक बार फिर से लड़ने के लिए प्रेरित करने लगा, मेरे लाख मना करने के बाद भी एक चाँस और लेने को कह फिर भिड़ा। मुझे भी गुस्सा आया और कृष्णत्व जागृत हो गया। इस बार मैंने पूरे होशो-हवास के साथ इतना कड़क दाँव तो लगा ही दिया था कि हाथ न टूटे लेकिन पीड़ादायी तो हो ही। और इस बार वो चित्त गिरा तो पूरे पाँच मिनट तक उठने लायक नहीं रहा। पूरे समूह में सन्नाटा छा गया लेकिन एक वीर साथी ने साहस दिखाने का प्रयास किया कि ''अब मुझसे लड़ो'', लेकिन इतनी घटनाओं के बाद मेरे अंदर-बाहर पूरी तरह से कृष्णत्व आ चुका था बुद्धत्व का कोई स्थान नहीं रह गया था और मैंने भी हुँकार भरी ''इन्द्रजीत को तो केवल पटक कर ही छोड़ा है अब जो भी लड़ना चाहे मैं फ्री स्टाइल लड़ूँगा। प्रिंसिपल साब, सारे टीचर और सीनियर्स भी दर्शक बनेंगे। अंग-भंग होने पर कोई शिकायत नहीं होगी, फिर इस प्रश्न को भी हल कर लेना कि मैं कौन सा वर्मा हूँ''। कहते-कहते मेरा पशु-रूप जागृत हो चुका था जिसे शायद लोगों ने पढ़ लिया और कुछ सबल साथियों ने डिप्लोमैटिक होते हुए सभी को शांत कराया कि सभी की तरफ से जिसे लड़ाया गया वो तीन पटखनी खा गया तो अब कोई क्लेम नहीं बनता, सभी अपने-अपने कमरे में चलिए। इन्द्रजीत एक सप्ताह तक कालेज नहीं आया। यद्यपि मेरे स्वभाव में कोई अंतर नहीं आया था, न ही जीत का कोई उत्साह या दम्भ था लेकिन मेरे प्रति लोगों की दृष्टि अवश्य बदल गई थी। उस दिन के बाद से उनमें से किसी ने मुझे दुर्बल, भीरू समझने की भूल नहीं की न ही मुझे दोबारा किसी के समक्ष अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करने की आवश्यकता हुई और मैं भी मुख्य धारा में सम्मिलित कर लिया गया।

घटना तो बहुत छोटी ही थी, बचपना भरी हुई थी लेकिन मुझे इतना परिपक्व अवश्य बना गयी कि दादाजी की बात सत्य प्रतीत होने लगी कि इस समाज में जीने के लिए केवल बुद्धत्व से ही काम नहीं चलने वाला, कृष्णत्व भी आवश्यक है। इसके बावजूद भी एक द्वंद्व अवश्य रह गया जिसका निर्णय मैं आज तक नहीं कर सका कि उस दिन मैं जीता या हारा? क्योंकि ये जीत तो कृष्णत्व की थी, पारिवारिक स्वाभिमान की थी, मेरी आनुवंशिकता-मेरे दादाजी की विजय थी लेकिन मेरा आत्म-उदात्त, मेरा आत्म-बुद्धत्व, मेरा वह विश्वास जिसमें संघर्ष का स्थान नहीं था, सभी की हार हुई थी।

आज भी यदा-कदा वह घटना मेरे मन में चलचित्र की भाँति घूम जाती है और चित्त पड़े उस सहपाठी का सजीव चित्र मेरे आँखों में तैर जाता है क्योंकि अभी तक के जीवन काल में मैंने उस रूप में अन्य किसी को इस प्रकार से चित्त पड़े नहीं देखा।

वाणी टंकण- एक समाधान

रवि सिंह
आँकड़ा प्रविष्टि प्रचालक
कार्या-महानिदेशक, ले.प.(के.) उ.प्र., लखनऊ

आज कार्यालयों में कम्प्यूटर के वृहद स्तर के प्रयोग ने बहुत सारे कार्य, आसान कर दिये हैं, विशेष रूप से कार्यालयीन पत्रों को आसानी से डिजिटल रूप में कम्प्यूटर में अद्यतन व संधारित किया जा सकता है। विभिन्न कार्यालयों में पत्रों को आसानी से ई-मेल द्वारा भेजा जा सकता है, जो कार्यालय में कम्प्यूटर के प्रयोग के महत्व को दर्शाता है। परन्तु जब हिंदी टंकण की बात आती है तो यह एक कठिन कार्य होता है। क्योंकि सभी लोग अंग्रेजी टंकण तो **'की-बोर्ड'** की **कुंजियाँ** देखकर कर सकते है। लेकिन हिंदी टंकण करना आसान नहीं है तथा उनके लिए, जो अंग्रेजी का कम ज्ञान रखते है, **इंडिक टूल** की सहायता से भी हिंदी टंकण आसान नहीं होता है। आज हम आपको इस समस्या से निजात दिलाने का उपाय साझा कर रहे है।

इंटरनेट पर अनेक सॉफ्टवेयर या वेबसाइट उपलब्ध हैं जिनके माध्यम से हम हिन्दी या फिर अंग्रेजी भाषा के शब्दों को बोलने मात्र से डिजिटल रूप में बदल सकते हैं या आसान भाषा में कहें तो टाइप कर, जहाँ भी आवश्यकता हो इस्तेमाल कर सकते हैं।

बोलकर टाइप करने की प्रक्रिया को चरणबद्ध रूप से इस प्रकार से सीख सकते हैं :

1. सर्वप्रथम इंटरनेट ब्राउजर में किसी भी सर्च इंजन जैसे- 'गूगल' पर "Speak to type in hindi" सर्च करें।

2. सर्च करने पर बहुत सारी वेबसाइट में से किसी एक को क्लिक करके खोल लें।

3. वेबसाइट पर जब हम **माइक आइकन** पर क्लिक करेंगे तो वह कम्प्यूटर के साथ जुड़े हुए माइक्रोफोन का एक्सैस माँगेगा जिसे **'ओ के'** करना होगा।

4. अब आप जो भी बोलेंगे वह टाइप हो जाएगा।

5. टाइप हुए शब्दों को आप वहाँ से कॉपी कर **एम.एस. वर्ड** या फिर ई-मेल कर कहीं भी पेस्ट कर सकते हैं।

6. टाइप हुए शब्दों को किसी भी **फॉन्ट** में ऑनलाइन इन्टरनेट पर बदल सकते हैं।

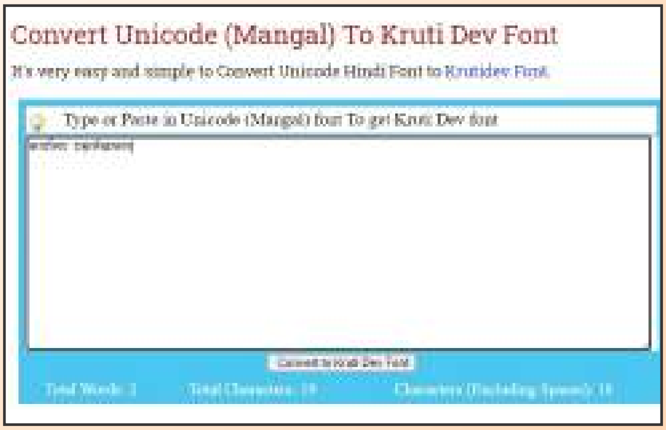

यदि कोई पत्र, जो गोपनीय अथवा अति गोपनीय हो, तो उसका टंकण किसी विश्वस्त कर्मचारी से करवायें।

लॉकडाउन

विनय प्रसाद
वरिष्ठ लेखापरीक्षक
कार्या-महानिदेशक,
ले.प.(के.) उ.प्र.,
लखनऊ

कैसा घोर कलयुग आया है
चारों ओर मौत का बादल छाया हैं।
नाचीज को लोग कोरोना कहते हैं
दिन रात भयावह खौफ में रहते हैं।
मौत का तांडव हर तरफ छाया
हर वतन तुरंत लॉकडाउन में आया।

सोचा था मामूली दुश्मन हैं कोरोना
लॉकडाउन से सब नॉर्मल हो जायेगा
पर सब कुछ बंद हो गया
माल, रेस्तरां, होटल, यातायात
पर नहीं बंद हुआ कोरोना का प्रकोप
एक-एक करके छीनता गया जिंदगी को वो।
धीरे-धीरे जनता को गिरफ्त में लेता गया
कमजोर इम्यूनिटी वालों को सुलाता गया।

दिन रात लोग साबुन से हाथ धो रहे
ताकि जान से न हाथ धो बैठे
व्यापारियों के व्यापार पर ताला जड़ गया
मजदूरों की रोजी रोटी का साधन बंद हो गया
सैनिटाइजर, मास्क की कीमत में उछाल आया।
गरीब जनता ने खुद को कंगाल पाया।

यातायात बंद हो गए
लोग अपने घरों में कैद हो गए
चारों ओर सन्नाटा पसर गया
लोग घरों में, जानवर सड़क पर
कदाचित् जानवर आजाद थे
और हम असहाय और कैद।

देश की अर्थव्यवस्था गिर गयी
गिर गया लोगों का मनोबल
सोशल डिस्टेंसिंग ने सामाजिक समरसता सिखाई
दूरदर्शन के धारावाहिक परिवार को एक संग लाई
रामायण, महाभारत ने फिर लोकप्रियता अर्जित की
मानव मूल्यों पर एक बार फिर खरी उतरी।

चीन की धूर्तता का राज सामने आया
लैब में वायरस तैयार कर विश्व में फैलाया।
इस जैविक हथियार से संसार में तबाही लाया
पूरे दुनिया को अपने खिलाफ बनाया।

राशन की जमाखोरी धड़ल्ले से शुरू हो गयी
दुकानों पर खरीद के लिए लंबी कतार लगने लगी
जरूरत के समय गली मोहल्ले की दुकान काम आई
मोदीजी ने लोकल फॉर वोकल की गुहार लगाई।

असली नायक हैं सब्जी, बिजली, पेपरवाला
डॉक्टर, नर्स, सफाइकर्मी और दूध वाला
ये मौत को रोज हथेली पर लेकर चल रहे हैं।
न जाने कब इनकी जिंदगी की शाम हो जाए
मौत दरवाजे पर दस्तक दे रही हैं
और हम हिंदू-मुस्लिम कर रहे हैं।

फिल्मों के डायलॉग अब बदल जाने चाहिए
जैसे-''घर में रहने की कीमत तुम क्या जानो रमेश बाबू''
''मेरे पास गाड़ी है, बंगला हैं, बैंक बैलेंस है,
तुम्हारे पास क्या हैं?''
''मेरे पास मा...... मास्क हैं''
''थप्पड़ से डर नहीं लगता साब
आपकी खाँसी से लगा हैं।''

वर्क फ्रॉम होम का नया कल्चर आया
ऑनलाइन ट्रेनिंग भी सबको भाया
आवश्यकता आविष्कार की जननी हैं
वैक्सीन आने तक कोरोना से जंग लड़नी हैं।

योग करो, व्यायाम करो
फिट रहो आराम करो
सुबह उठो सूर्य नमस्कार करो
इस जीवन का सम्मान करो
ईश्वर हमारी परीक्षा ले रहा हैं।
प्रकृति से छेड़छाड़ का दंड दे रहा हैं।

कोविड-19 के दौरान 'वर्क फ्राम होम'

वासवी मिश्रा
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक
कार्या.- निदेशक, वित्त एवं संचार लेखापरीक्षा, लखनऊ

कोविड-19 वैश्विक महामारी का प्रभाव विश्व के सभी देशों पर पड़ा है। कोई नहीं जानता कि यह वैश्विक महामारी कब तक सामान्य जन-जीवन को अस्त-व्यस्त रखेगी। अब तक इसकी कोई दवा, वैक्सीन, गोली, एंटीडॉट आदि नहीं खोजा जा सका है।

किन्तु सरकारी कामकाज, उद्योग धंधो और अन्य सरकारी तंत्र से संबंधित जरूरी क्रिया-कलापों को सदा ठप्प नहीं रखा जा सकता है। यद्यपि इस वैश्विक महामारी का प्रभाव कम से कम करने के लिए भारत सरकार ने पूरे देश में लॉकडाउन लगाया था, तथापि धीरे-धीरे इस लॉकडाउन में ढील दी गई और यह निर्देश दिये गये कि सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को संक्रमण से बचाने के लिए, प्रतिदिन की उपस्थिति को केवल 50 प्रतिशत तक सीमित कर दिया है अर्थात 50 प्रतिशत स्टाफ पहले दिन उपस्थित होगा तथा अन्य 50 प्रतिशत दूसरे दिन। इस प्रकार की व्यवस्था बनाई गई, जिससे कार्यालय में भीड़ एकत्रित न हो और सामाजिक दूरी का ध्यान रखा जा सके। इसमें गर्भवती महिलाओं का विशेष ध्यान रखते हुए, उन्हें यथासंभव कार्यालय न बुलाकर उन्हें घर से ही कार्य करने की सुविधा दी गई है।

लॉकडाउन ने 'वर्क फ्राम होम' सुविधा के लाभ और हानि के दूरगामी परिणामों से अवगत कराया है। इस लॉकडाउन के दौरान मानो इस संकल्पना का स्वतः परीक्षण हो जायेगा कि वास्तव में यह सुविधा सरकार द्वारा दीर्घगामी योजना के रूप में सफल होगी अथवा नहीं इस योजना से जहाँ सरकार का काम-काज बाधित होने से बचा है, वहीं सामाजिक दूरी को बनाये रखा जा सका है क्योंकि कार्यालय में अधिक लोग एकत्रित नहीं हो रहे हैं। सभी अधिकारीगण/कर्मचारीगण अपनी अपनी पालियों में आ रहे हैं तथा जो लोग 'वर्क फ्राम होम' कर रहे हैं, वे भी संक्रमण की चपेट में आने से स्वयं को बचा पा रहे हैं। कार्यालयों द्वारा प्रदान किये गये लैपटाप और फोन की सुविधा ने संचार की दीवारों को गिराया है, तथा इससे अब सरकारी कामकाज में देरी नहीं हो रही है।

'वर्क फ्राम होम' का एक लाभ यह भी है कि व्यक्ति आवागमन के दौरान लगने वाले धन तथा समय की बचत करता है, और अधिक लोगों के सम्पर्क में नहीं आता है तथा परस्पर संक्रमण से बच रहा है। प्रत्येक व्यक्ति जो 'वर्क फ्राम होम' कर रहा है, उसके वेतन पर भी नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ रहा है, जैसा उद्योगों में कर्मचारियों पर पड़ा है। अधिकारी एवं कर्मचारी अपने घर के सुविधाजनक माहौल में काम व आराम साथ-साथ कर रहा है।

'वर्क फ्राम होम' के दौरान व्यक्ति अपने वृद्ध माता-पिता, घर के छोटे बच्चों आदि का संक्रमण की दृष्टि से संवेदनशील लोगों का बेहतर ढंग से ध्यान रख सकता है, इससे घर की पारिवारिक जिम्मेदारी और कार्यालयीन जीवन में बेहतर संतुलन देखने को मिल रहा है। परिवारों के सामाजिक ढाँचें को मजबूती मिल रही है।

यद्यपि 'वर्क फ्राम होम' के बहुत से लाभ हैं, किन्तु अभी यह संकल्पना परीक्षण के दौर में ही है। आपातकालीन परिस्थितियों को छोड़ दें, तो नियमित कामकाज में इसे लागू करने में अनेक कठिनाईयां आ सकती हैं।

'वर्क फ्राम होम' की संकल्पना भारत में कार्य संस्कृति के रूप में अभी भली-भांति विकसित नहीं हुई है और इसे स्वीकार्यता भी प्राप्त नहीं है। अनेक कंपनियां यह मानती हैं कि जो अधिकारी/कर्मचारी घर बैठकर काम करते हैं। वे कार्य के प्रति निष्ठावान नहीं रह पाते और मन लगाकर निश्चित समय सीमा के भीतर कार्य प्रस्तुत नहीं करते। वे मानते हैं कि 'वर्क फ्राम होम' की अनुमति केवल घर रुकने के अपरिहार्य कारणों पर ही दी जानी चाहिये। यह भी कहा जाता है कि इस दौरान घर पर रहकर कर्मचारी कोई अन्य धनोपार्जन कार्य अथवा फ्रीलांस का भी कार्य साथ-साथ कर सकता है, जिससे उनकी कार्योत्पादकता पर विपरीत प्रभाव पड़ सकता है, क्योंकि कर्मचारी थका-मांदा होने के कारण ठीक से कार्यालयीन कार्य नहीं कर सकेगा।

यह भी विचारणीय है कि कार्यालय में काम करने का जो माहौल कार्मिक को दिया जाता है, वह माहौल घर पर रहकर प्राप्त करना असंभव है, क्योंकि घर पर अनेक व्यवधान होते रहते हैं, जो व्यक्ति की कार्य-कुशलता को प्रभावित करते हैं और अनेक कार्मिक घर से कार्य करते समय गंभीरतापूर्वक कार्य नहीं करते, जिससे त्रुटियों की संभावना बढ़ सकती है।

'वर्क फ्राम होम' में सरकारी दस्तावेजों तथा कार्यों की गोपनीयता पर भी प्रश्न चिन्ह लग सकता है। यद्यपि यह सत्य है कि 'वर्क फ्राम होम' लॉकडाउन के दौरान सरकारी अमले को संक्रमण से बचाने में अत्यंत कारगर सिद्ध हुआ है। किन्तु कोविड-19 वैश्विक महामारी का प्रकोप समाप्त होने पर भी यह सफल रहेगा अथवा नहीं, इसका उत्तर अभी भविष्य के गर्भ में ही है।

तुम्हारा समय सीमित है, इसलिए इसे किसी और की ज़िंदगी जी कर व्यर्थ मत करो। -स्टीव जॉब्स

इच्छा, जो पूरी न हो सकी

प्रदीप कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षक
कार्या-प्र.म.ले. (लेखापरीक्षा-II)
उ.प्र., लखनऊ

लोग रात में सोने पर स्वप्न देखते हैं, कुछ दिन भर स्वप्न देखते रहते हैं। ऐसे ही एक सज्जन हमारे पड़ोसी कविराज नौजवान थे और नौजवानों की चिंता उन्हें खाए जा रही थी। वे केवल नौजवानों के बारे में ही स्वप्न देखते थे।

एक बार उनके दिमाग में आया कि यार जेल में बड़ी सुविधा होती है। ऐश से रहना, अच्छा-अच्छा खाना, टी.वी. पर मनोरंजक कार्यक्रम देखना, सच बड़ा मजा आता होगा, तो उन्होंने सोचा कि किसी तरह मैं भी जेल चला जाऊँ तो बड़ा अच्छा हो। यही उद्देश्य बना कर वह एक दिन जेल घूमने गए तो देखा कि एक कमरा बहुत बढ़िया ढंग से सजा था, उसमें टी.वी., फोम का सोफा, ड्रेसिंग टेबल, डाइनिंग टेबल सभी लगी हुईं थी और सोफे पर एक कैदी टांग फैला कर बैठा था और जेल का एक सिपाही उसका पैर दबा रहा था। बड़ी आशा भरी नजरों से सिपाही कैदी से कहता है कि यार तू यहाँ से भाग क्यों नहीं जाता, इतना सुनते ही कैदी सिपाही को घुड़क देता है और सिपाही फिर उसका पैर दबाने लगता है। मैं खिड़की से सब देख रहा था। जब सिपाही गया तो मैंने उस कैदी को दण्डवत प्रणाम किया और पूछा- भाई कोई उपाय बताओ मैं भी यहाँ जेल में आना चाहता हूँ तो उस कैदी ने कहा जल्दी से कर डालो कोई अपराध चोरी, डकैती, लड़ाई-झगड़ा...

मैं तुरंत घर आया और तैयार होकर लड़ने के लिए बाहर आया तो सामने एक लाला जी आ रहे थे जिनके सिर में न था एक भी बाल। मैं उनके पास गया और अपना सिर उनके सिर पर दे मारा। लाला जी गुस्साये... मैं तो खुश हो गया कि चलो मेरा तो काम हो गया, जेल जाने का प्रबंध हो गया। लेकिन कहाँ... बाद में लाला जी मुस्कराये और बोले बेटा अभी तुम्हारा लड़कपन नहीं गया, जाओ खेलो। मैं बड़ा निराश हुआ। मैंने भी हार नहीं मानी, मैंने फिर तकदीर आजमाई। मैंने मोहल्ले के एक आवारा लड़के को डंडे मारकर उसकी टाँग तोड़ दी और भाग कर घर आ गया व इन्तजार करने लगा कि अभी पुलिस आती होगी। थोड़ी देर बाद किसी ने दरवाजा खटखटाया, मैं खुश हुआ कि मेरी इच्छा पूरी होने का दिन आया लेकिन क्या मोहल्ले के दो चार आदमी आये और कहने लगे कि आप तो बहुत बहादुर हैं उस आवारा लड़के को मारकर उसकी टाँग तोड़ दी। हम सभी बहुत खुश हैं। हम मोहल्ले में आपका नागरिक अभिनन्दन करना चाहते हैं। मैं बड़ा निराश हुआ, कुछ दिन बाद वह लड़का बैसाखी टेकता हुआ मेरे पास आया साथ में मिठाई का डिब्बा भी लाया और कहने लगा भाई साहब आपने मेरी एक टाँग तोड़ी जिसके कारण सरकार ने मुझे नौकरी दे दी, लीजिये मिठाई खाइये।

मैं भी हिम्मत हारने वाला नहीं था। मैं एक बार बस में सफर कर रहा था सोचा कि किसी लड़की को छेड़ा जाये, शायद इसी से कुछ काम बन जाये। मेरे सामने एक सुन्दर बाला खड़ी थी। बला की सुन्दर, मेरा मन डोला, पहले नजरें मिलाईं, उसने भी नजरें मिलाईं, बात बनती नजर आयी तो मैंने अपना हाथ उसकी उँगलियों पर रख दिया, वह कुछ न बोली, साथ ही बगल में दो सिपाही बैठे थे। उन्होंने देखा तो एक ने कहा, क्यों लड़की को छेड़ता है, तो दूसरे ने पहले वाले को समझाया कि न भाई इतनी दिलेरी से लड़की को छेड़ रहा है तो जरुर कोई ऊँचे अधिकारी का बेटा है, इसे कुछ मत कहो, तो पहले ने कहा, तो क्या हुआ, होगा बड़े अधिकारी का बेटा, तो क्या ऐसे सरेआम लड़की छेड़ेगा, मेरे होते हुए। मैं तो यह बर्दाश्त नहीं करूँगा। ये सुन मैं तो बड़ा खुश हुआ मानो अँधे को आँख मिल गयी हो, दस दिन से भूखे को पकवान मिल जाये, किसी बेरोजगार को रोजगार मिल जाये, उतनी ही खुशी मुझे हुई कि चलो बरसों की मुराद, इस देवता सिपाही ने पूरी कर दी। लेकिन होनी को कौन टाल सकता था। होना तो वही है जो भाग्य में लिखा है उस सिपाही ने मुझे पकड़ा और कहा क्यों लड़की को छेड़ता है चल थाने, मैं मुस्कुराया लेकिन एकाएक लड़की ने कहा, क्यों भाई साहब को और हमें बदनाम कर रहे हैं। इन्होंने मुझे कहाँ छेड़ा है। मैं तो धरा का धरा रह गया। सारे अरमान पर पानी फिर गया और मुझे क्या मालूम था कि लड़की छेड़ना इतना भरी पड़ेगा। शाम को वह अपने बाप के साथ मेरे घर रिश्ता लेकर आयी।

मैंने भी हिम्मत न हारी, एक के बाद दूसरा, दूसरे के बाद तीसरा भगीरथ प्रयास करता रहा। एक दिन मैं पहुँचा एक आलीशान होटल, वहाँ मैंने एक से एक पकवान खाये खूब डटकर खाया, वेटर रु. 1100 का बिल लाया, मैंने सोचा इससे अच्छा मौका फिर न मिलेगा। मैंने बिल फाड़कर फेंक दिया, इस पर मैनेजर ने पुलिस को फोन किया। पुलिस आयी और हमें थाने ले गयी। कोर्ट पहुँचा मुकदमा चला। जज ने कहा, बेटा तुम नौजवान हो और यह तुम्हारा पहला अपराध है इसलिए तुम्हें छोड़ देता हूँ।

मैं निराश घर लौटा, फिर मैंने पुनः प्रयास किया एक महिला का बटुआ छीना और भागा, भागकर पुलिस स्टेशन गया तो देखा वो महिला पहले से ही वहाँ मौजूद थी और रिपोर्ट लिखा रही थी मैं पहुँचा, तो उसने मुझे पकड़ लिया, मैं बड़ा खुश हुआ। मैंने थानेदार के आगे तुरंत अपने हाथ कर दिये, लेकिन थानेदार ने मुझे दो डंडे मारकर बाहर निकाल दिया और बटुआ चुराने के इल्जाम में अपने साले को जेल भिजवा दिया। मैं क्या करता, सारे प्रयास बेकार गए, थक हारकर घर बैठ गया तो सारे शहर में जेल भरो आन्दोलन शुरू हो गया। जेलों में संख्या से अधिक लोग भर गए, तो जेलर ने खुद जेल की दीवार तोड़ दी कि कैदी भाग जाएँ, लेकिन दूसरे दिन गिनती हुई तो उसमें कैदियों की संख्या में 125 की बढ़ोतरी, लेकिन मैं इस बार फिर चूक गया।

कोरोना- कैसे बचें इस विश्वव्यापी महामारी से

सुश्री मानसी रंजन
सुपुत्री श्री अतुलेश रंजन
वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्या-निदेशक, वित्त एवं संचार
लेखापरीक्षा, लखनऊ

आज हम सभी भारतीय अपने जीवन में एक बहुत ही कठिन और अनजान बीमारी से जूझ रहे हैं। यह एक ऐसी विपदा है जिसका हमने कभी पहले नाम तक भी नहीं सुना था। यह कोई राजनैतिक, सामाजिक, अर्थशास्त्रीय, वित्तीय, प्रौद्योगिकीय या कोई घरेलू इत्यादि समस्या नहीं है। यह तो एक ऐसी विडंबना है जो इन सभी क्षेत्रों के कार्यों को भी प्रभावित कर सकती है। आप समझ ही गए होंगे कि यह बीमारी निश्चित ही **''नोवल कोरोना वायरस (कोविड-19)''** है। लगभग नवम्बर 2019 से इस महामारी ने दस्तक दे दी थी। वर्तमान में भी आप और हम सब इससे जूझ रहे हैं। यह कब खत्म होगी, यह कहना तो बहुत कठिन है। लोग इस खतरनाक विषाणु की चपेट में आते ही जा रहे हैं।

कोरोना! कोरोना! कोरोना!,
आज हर जुबां पर है एक ही नाम 'कोरोना'
इसकी चपेट में आ गया है दुनिया का हर कोना।

यह नया कोरोना वायरस एक विषाणु है जो मुख्यतः संक्रमित व्यक्ति द्वारा उत्सर्जित छोटी-छोटी बूँदों के माध्यम से फैलता है। कोविड-19 मौसमी इन्फ्लूएंजा की तुलना में अधिक गंभीर बीमारी का कारण बनता है, क्योंकि अन्य बीमारियों की तरह कोरोना का अभी तक कोई टीका या दवा अविष्कारित नहीं हुई है अतः वैक्सीन/इलाज के अभाव में अधिकतर लोग इससे संक्रमित हो सकते हैं और कुछ गंभीर रूप से पीड़ित हो सकते हैं जिससे केवल अपनी प्रतिरोधक क्षमता से ही बचना मुमकिन है। विश्व स्तर पर लगभग 3.4 प्रतिशत कोविड मामलों में मृत्यु दर्ज की गयी। तुलनात्मक रूप से मौसमी फ्लू संक्रमित लोगों की संख्या में 2 प्रतिशत लोगों को ही मारता है। नोवल कोरोना वायरस से होने वाले रोग के लिए कोई विशिष्ट इलाज अभी तक संभव नहीं हो पाया है। हालांकि इनमें से कई लक्षणों का इलाज किया जा सकता है, रोगी की नैदानिक स्थितियों के आधार पर उपचार या इलाज किया जाता है। इसके अलावा, संक्रमित व्यक्तियों के लिए सहायक देखभाल अत्यधिक प्रभावी होगी। एक तरफ, कोविड-19 लोगों के लिए बीमारी का कारण तो बनता ही है और दूसरी तरफ यह कुछ लोगों को बहुत ज्यादा बीमार भी कर सकता है। यह बीमारी बहुत घातक है। इससे अधिक खतरा बुजुर्गों को है, और उन्हें जिन लोगों को पहले से ही कोई बीमारी है जैसे उच्च रक्तचाप, हृदय से संबंधित समस्याएँ, मधुमेह, गुर्दे से संबंधित समस्याएं इत्यादि। यह लोग इसकी चपेट में आसानी से आ सकते हैं।

कोरोना से नहीं डरेंगे, कोरोना से हर पल लड़ेंगे।

भारत सरकार अपनी पूरी कोशिश कर रही है इस विशेष विषाणु को मिटाने के लिए। हमारे देश के वैज्ञानिक, पुलिस कर्मी, सैनिक, चिकित्सक एवं अन्य सभी सरकारी कर्मचारी अपने दिन-रात एक कर ''कोरोना वॉरियर'' के समान देश की रक्षा के लिए तत्पर हैं। चीन से आया हुआ ये खतरनाक विषाणु इस तरह फैलेगा, शायद किसी को इसका अंदाजा भी नहीं था। देश लॉकडाउन में जी रहा है। जिस तरह भारत इस कठिन परिस्थिति को संभाल रहा है, शायद उतना कोई अन्य देश नहीं। हमें इस बात पर गर्व होना चाहिए और भगवान पर भरोसा बनाए रखना चाहिए। चीन, इटली, अमेरिका, जर्मनी, सऊदी अरब जैसे इत्यादि देशों में तो यह पहले से ही फैल चुका था। हमारे भारत देश में इस विषाणु का प्रकोप वर्ष 2020 में अत्यधिक चरम सीमा पर पहुँच गया। जैसा मैंने पहले कहा कि यह विषाणु अगर फैलेगा तो किसी भी क्षेत्र को हानि पहुँचेगी क्योंकि कोई भी क्षेत्र या कोई भी चीज हो, उसमें मनुष्य की भूमिका अहम होती है। मनुष्य के बिना कुछ भी संभव नहीं है। ऐसे में यदि हम चाहते हैं कि भारत सदैव कुशल रहे और प्रगति-उन्नति करे तो हमें कुछ चीजें अपने जीवन में सदैव के लिए अपनानी होंगी। वैक्सीन बनाना, कोरोना को जड़ से मिटाने के लिए अन्य चिकित्सीय तकनीकें सोचना एवं जनता को नियंत्रण में करना, यह हर एक सामान्य आदमी के बस की बात तो नहीं है। इसलिए जो हम कर सकते हैं कम से कम वह तो हमें करना ही चाहिए अर्थात इस विषाणु के बारे में अच्छे से समझना एवं बहुत ही समझदारी और सतर्कता से काम लेना। सबसे पहले तो सामाजिक दूरी बनाकर रखना। सैनिटाइजर का उपयोग करना, साबुन-पानी से अच्छे से लगभग 20 सेकेंड तक हाथ धोना, मास्क पहनना आदि, यह सब तो बहुत बुनियादी बातें हो गईं। कोरोना बहुत ही संवेदनशील विषाणु है यह कैसे शरीर के अंदर जाता है किसी को पता भी नहीं चलता। यह विषाणु नाक, आँख, एवं मुँह से अंदर जा सकता है। इसलिए घर से बाहर रहने के वक्त इन

अंगों को स्पर्श करने से बचें एवं मास्क अवश्य पहनें।

यदि कोरोना से है मुक्त होना,
तो साबुन से सदैव हाथ है धोना।

इसके अतिरिक्त, यदि आप घर से बाहर कहीं निकलें हैं और आप सामाजिक दूरी बनाए रखने का पूरा पालन कर रहे हैं, फिर भी आपके सम्पर्क में भी कुछ न कुछ निश्चित ही आएगा। उदाहरण के लिए, यदि आप किसी सब्जी वाले से सब्जियाँ खरीदने गए हैं, तो आपको उसके हाथों से ही सब्जियाँ लेनी पड़ेंगी। और यदि इस बीच आप कोई अन्य चीज नहीं छू रहे हैं, सामाजिक दूरी बनाए हुए है और मास्क भी पहनें हैं फिर भी जो सब्जियां आपने ली हैं, उसमें विषाणु है या नहीं, यह तो कोई भी नहीं जानता। लेकिन एहतियात बरतना हमारी जिम्मेदारी है। इसलिए आपको घर आकर सबसे पहले अपने जूते या चप्पल जो भी आप पहनकर बाहर गए थे, उसे, और सब्जियों को अपने घर के दरवाजे पर ही छोड़ दीजिए या अपने घर के आंगन या लॉन में छोड़ दीजिए और बाहर ही अच्छे से साबुन से हाथ और पैर धो लीजिए और इसके पश्चात ही घर के अंदर आइए। जो भी सामान आप बाहर से लाए हैं, उस पर सैनिटाइजर का छिड़काव भी अवश्य कर दीजिए। इसके बाद, आप सीधे बाथरुम में नहाने के लिए चले जाइए और जो कपड़े आपने घर से बाहर जाने के लिए पहने थे, उसे धो दीजिए। अब, यह सब कार्य करना आवश्यक क्यों है? यह आवश्यक इसलिए है क्योंकि यह विषाणु अन्य विषाणुओं से अलग है। यह विषाणु हवा में नहीं रहता है। इसे हम एक लाभ भी कह सकते हैं, लेकिन यह विषाणु अलग-अलग चीजों की सतह पर काफी देर तक रह सकता है। जैसे कि इस्पात की धातु पर यह विषाणु सात से आठ दिन तक भी रह सकता है, प्लास्टिक पर यह तीन दिन तक टिक सकता है, कपड़ों पर यह विषाणु नौ घंटों तक रह सकता है और अन्य ठोस चीजों पर लगभग बारह घंटों से भी अधिक समय तक रह सकता है। इसलिए यह अनिवार्य है कि बाहर से लाई हुई चीजों को उनके समय के अनुसार बाहर ही छोड़ दिया जाए। विषाणु हमेशा शरीर के अदर जाकर ही अपना काम शुरु करते हैं। बाहर के पर्यावरण में जिंदा हैं या फिर मर चुके हैं, इसका पता नहीं चलता। हाँ, यदि तापमान 56 डिग्री से अधिक हो, तो इस विषाणु को मारा जा सकता है। एक और महत्त्वपूर्ण बात, जो हमें याद रखनी है, वह यह है कि यह विषाणु कुछ समय के लिए हवा में भी रह सकता है, लगभग जमीन से तीन से पाँच फिट की ऊँचाई तक। ऐसा तभी सम्भव होता है जब कोई व्यक्ति छींकता या खाँसता है। उसके अंदर से निकले हुए रोगाणु आपके ऊपर आ सकते हैं। इसलिए सभी इंसान परस्पर पाँच से छः मीटर की दूरी बनाकर रखें। कोरोना एक ऐसा विषाणु है जो अन्य विषाणुओं की तुलना में बहुत छोटा है। यह तो स्पष्ट है कि कोई भी विषाणु नग्न आँखों से नहीं देखा जा सकता है। इसलिए हमें कहीं बाहर से आकर अपने बालों को धोने की भी बहुत आवश्यकता है।

इस महामारी से नहीं है डरना,
बस समझदारी से सारे काम हैं करना।

एक और उदाहरण देखिये, आपकी चार-पहिया या दो-पहिया गाड़ी जो आपके घर के बाहर खड़ी रहती है, उससे कोई व्यक्ति छू भी सकता है, और यदि उसके शरीर पर कोरोना विषाणु है तो वह आपकी गाड़ी पर आ सकता है। इसलिए आपको अपना वाहन छूते वक्त भी सावधान रहना चाहिए। इस तरह के बहुत से तर्क हैं जो कि **कोरोना वायरस (कोविड-19)** को समझने के लिए दिए जा सकते हैं और इस विषाणु से कैसे बचें, इसे अच्छे से समझा जा सकता है। बस हमें अपने मन में यह बात दृढ़तापूर्वक गाँठ बाँध लेनी है कि हमें कुछ नियमों का पालन करते रहना है, जो बहुत ही सहज हैं। अपने आपको सुरक्षित रखने के लिए, अपने हाथों को समय-समय पर एल्कोहल आधारित सैनिटाइजर या कोई अन्य चीज या फिर साबुन और पानी से रगड़कर धोएं। बाहरी व्यक्तियों के सम्पर्क में कम से कम आएं। घर के बाहर अपनी सुरक्षा पर कड़ा ध्यान दें। चिंता के समय, कुछ मिनटों के लिए धीरे-धीरे साँस लेने का अभ्यास करें। कोशिश करें कि उन विचारों से दूरी बनाएं जो आपको चिंतित करते हैं। कुछ शांत चीजों के बारे में सोचें और अपने दिमाग को शांत और धीमा करें। यदि हम अनावश्यक मिलना-जुलना सीमित रखेंगे और अति सतर्कता से कार्य करेंगे तो शायद हम इस विपदा एवं संकट को मिटाने में अवश्य सफल होंगे।

जब हर संकट का करा सामना,
तो इस संकट से भी लड़ेंगे भारतीय,
मानसिक रूप से बनकर मजबूत,
कोरोना को भी खत्म करेंगे भारतीय।

बुझ गये चिराग

राजीव कुमार सक्सेना
वरिष्ठ लेखाधिकारी
कार्या.-महालेखाकार (लेखा एवं ह.) II,
उ.प्र., लखनऊ

उन चरागों से रोशन थे कुछ आशियाने,
वो बुझे तो अँधेरा सारे शहर में हो गया।

रिश्ता भले ही न रहा हो कुछ भी उनसे,
एक माँ को रोते देख, दिल मेरा रो गया।

अपने घर का तो वो राजकुमार ही होगा,
कैसे यूँ सपनों का एक ढाँचा ढह गया।

न आए फिर से ये मंजर ताउम्र भी कभी,
रब से चाहत इतनी यह दिल कर गया।

ताकत मिले उन्हें, सूरज है जिनका डूबा,
तारों में कही दूर, जिनका वजूद खो गया।

हिंदी एवं तेलुगु भाषा : कुछ समानतायें

ई.ए.पी.एस. शास्त्री
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्या-महानिदेशक, ले.प.(के.) उ.प्र., लखनऊ

तेलुगु भाषा को भारत की सबसे ज्यादा बोले जानी वाली द्रविड़ भाषा का गौरव प्राप्त है। हिन्दी आर्य भाषा एवं तेलुगु द्रविड़ भाषा है तथपि दोनों भाषाओं में संस्कृत भाषा का प्रभाव आश्चर्यजनक रूप से बहुत ज्यादा है। तेलुगुभाषी अपना नववर्ष 'उगादि' के रूप में चैत्र नवरात्रि के पहले दिन मानते हैं। उत्तर भारत में भी बहुसंख्यक लोग इसी दिन नववर्ष मानते हैं। तेलुगु और हिन्दी के दिनों, महीनों एवं ऋतुओं के नाम भी एक से ही हैं जैसा कि नीचे दिया गया है:

दिनों के नाम		मासों के नाम	
हिन्दी	**तेलुगु**	**हिन्दी**	**तेलुगु**
रविवार	आदिवारमु	चैत्र	चौत्रमु
सोमवार	सोमवारमु	वैशाख	वाइसाखमु
मंगलवार	मंगलवारमु	ज्येष्ठ	ज्येस्थमु
बुधवार	बुधवारमु	आषाढ़	आषाढ़मु
बृहस्पतिवार/गुरुवार	गुरुवारमु	श्रावण	श्रावनमु
शुक्रवार	शुक्रवारमु	भाद्रपद	भाद्रपदमु
शनिवार	शनिवारमु	आश्विन	आस्वायुजमु
ऋतुओं के नाम		कार्तिक	कार्तिकमु
बसंत ऋतु	वसंत ऋतुवु	मार्गशीर्ष	मार्गसीरमु
ग्रीष्म ऋतु	ग्रीष्म ऋतुवु	पौष	पुष्यमु
वर्षा ऋतु	वर्षा ऋतुवु	माघ	माघमु
शरद ऋतु	शरद ऋतुवु	फाल्गुन	फाल्गुनमु
हेमंत ऋतु	हेमंत ऋतुवु		
शिशिर ऋतु	शिशिर ऋतुवु		

तेलुगु और हिन्दी में प्रयुक्त किए जाने वाले रोजमर्रा के कई शब्द या तो एक ही हैं या बहुत मिलते जुलते हैं।

हिन्दी	तेलुगु	हिन्दी	तेलुगु	हिन्दी	तेलुगु	हिन्दी	तेलुगु
नमस्कार	नमस्कारम	चित्र	चित्रम	रक्त	रक्तमु	ग्राम	ग्राममु
सुप्रभात	सुप्रभातम	कुर्सी	कुर्ची	पाठ	पाठमु	ज्वर	ज्वरमु
जीवन	जीवनम, जीवितम	क्षमा करिये	क्षमिंचंडी	कोप, गुस्सा	कोपम	कष्ट	कष्टमु, बाधा
धन्यवाद	धन्यवादम	आनन्द	आनंदम	चर्म	चर्मम	मेघ	मेघम
उदय	उदययम	आशीर्वाद	आशीर्वादमु	टोपी	टोपी	भय	भयम
स्नान	स्नानम	चन्द्र	चंद्रुडु	रोज	रोजु	मिट्टी	मट्टी
शुभ	शुभम	प्रारम्भ	प्रारंभम	धन	धनमु	रोग	रोगम
रात्रि	रात्रि	रंग	रंगु	दया	दया	युद्ध	युद्धम
कृतज्ञ	कृतज्ञतलु	चप्पल	चेप्पुलू	कुक्कुर	कुक्का	फल	फलम
श्रद्धा	श्रद्धा	प्रश्न	प्रश्न	पत्रिका	पत्रिका	व्याकुल	व्याकुलम
देश	देशमु	आवेश	आवेशम	शाबाश	शभाष	अनुमति	अनुमति
आश्चर्य	आश्चर्यम	आहार	आहारम	उपाय	उपायम	शर्त	शर्त
निःशब्द	निःशब्दम	मध्य	मध्य	संभव	संभवम	विषय	विषयम
यात्रा	यात्रा	बुद्धि	बुद्धि	अवसर	अवसरम	देव	देवुडु
उपयोग	उपयोगम	खिड़की	किटकी	भगवान	भगवंतुडु	नष्ट	नष्टम
सहायता	सहायम	वसुधा	वसुधा	लाभ	लाभम	उद्देश्य	उद्देशम
पर्यटक	पर्यटुकुडु	बंधु	बंधुवु	प्रसिद्ध	प्रसिद्धम	अक्षर	अक्षरमु
शिष्य	शिष्युडु	नदी	नदी				

इनके अलावा कई मुहावरे/लोकोक्तियाँ भी एक से हैं। जैसे की हिन्दी में "नींद न जाने टूटी काट, भूख न जाने बासी भात" इस भाव के लिए तेलुगु में प्रयुक्त होता है "आकली (भूख) रुचि (स्वाद) एरगदु (नहीं जानती), निद्रा सुखम एरगदु"। इस तरह समान भाव के कुछ अन्य मुहावरे हैं: 'अन्नम पेट्टिना इंटिंकी कन्नम वेयडम' का अर्थ है- जिस थाली में खाये उसी में छेद करना।

तेलुगु	हिन्दी
आडलेका मददली वोडु	नाच न आवे आँगन टेढ़ा
अंदनी द्राक्ष पल्लू पुल्लना	खट्टे अंगूर
रेंडू पड़वलु मीदा काल्लू पेट्टदम	दो नावों पर पैर रखना
गोरंतुलु कोण्ड्ट्लु चेयडम	राई का पहाड़ बनाना, तिल का ताड़ बनाना
पिट्टा कोंचेमू कूता घनमू	छोटे मुंह बड़ी बात
मुंदुकी पोते गोय्यी वेणुकाकी पोते नुय्यी	आगे कुआं पीछे खाई
गुम्मीडीकाई दोंगण्टे भुजालू तड़ुवुकुन्नत्लु	चोर की दाढ़ी में तिनका

हिन्दी देवनागरी लिपि में कुल 52 अक्षर हैं जबकि तेलुगु में अब 53 अक्षर हैं। हालाँकि अक्षरों की संख्या के बारे में लोगों के भिन्न-भिन्न मत हैं पहले तेलुगु में 60 अक्षर थे पर अब कुछ अक्षरों का प्रयोग बंद हो गया है। हलंत का प्रयोग तेलुगु भाषा में बहुत होता है जबकि हिन्दी में हलंत का प्रयोग अब न के बराबर होता है। हिन्दी में विवेक, राजेश, भारत को तेलुगु में हलंत प्रयुक्त करके लिखा जाता है। तेलुगु में हिन्दी के **ल** के समान्तर प्रयुक्त होने वाले दो अक्षर हैं। एक सामान्य और दूसरे का उच्चारण जीभ को तालू से लगाकर किया जाता है।

गब्बर ने बैंक मैनेजर से पूछा : "कितना इनाम रखे है सरकार हम पर?"
मैनेजर : "कितने भी रखे हों पर अभी 4000 ही मिल सकता है वो भी तुम्हारी आई.डी. पर"...... कालिया या साम्बा की नहीं चलेगी।

☺☺☺☺☺☺☺☺

आत्मनिर्भरता

मनीषा किरण
आँकड़ा प्रविष्टि प्रचालक
कार्या-निदेशक, वित्त एवं संचार
लेखापरीक्षा, लखनऊ

आत्मनिर्भरता एक शब्द, जिसको जानने में पूरी दुनिया लगी है। पर यहाँ सबकी आत्मनिर्भरता की बात नहीं हो रही, यहाँ बात हो रही महिलाओं के आत्मनिर्भरता की। तो क्या महिलायें वाकई में आत्मनिर्भर हो चुकी हैं या फिर अभी कोशिश ही कर रही हैं होने की? क्या उन्हें आत्मनिर्भरता का अर्थ पता है? क्या वह जो कोशिश कर रहीं हैं, वह सही दिशा में कर रही हैं? क्या आर्थिक निर्भरता को दूर कर देने मात्र से उनका आत्मनिर्भर होने का सही अर्थ पता चल जाता है?

इन बातों पर हर जगह विचार-विमर्श होते हैं पर महिलाओं के बीच कम, पुरुषों के बीच ज्यादा। पुरुषों का उत्साह महिलाओं के आत्मनिर्भर होने को लेकर ज्यादा क्यों होता है? क्या वह महिलाओं की आधुनिक सोच से ईर्ष्या रखते हैं? क्या उनमें प्रतिद्वंदी वाली भावना आ जाती है? क्या वह स्वयं को ऊपर रखकर उनका मानक तय करना चाहते हैं क्योंकि समाज तो आखिरकार पितृसत्तात्मक है? क्या वह हमारे साथी बनकर हमारी सोच में शामिल होना चाहते हैं? क्या महिलाओं के आत्मनिर्भर होने से चरमराती हुई घरेलू स्थिति को स्वयं सम्भालने की उत्सुकता से विचार ज्यादा करते हैं? या फिर उन्हें आत्मनिर्भर बनते देखना चाहते हैं परन्तु अपने स्वयं के मानकों के साथ? या कहीं ये तो नहीं कि उन्हें समझ आने लगा हो कि महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने वाले, वे कोई नहीं।

महिलायें पहले से हीं खेतों में काम भी करती हैं और घर का चूल्हा-चौका भी करती हैं। महिलाएं, माँ के रूप में सिर्फ त्याग व बलिदान की मूरत नहीं, वे अपना हक छीनना भी जानती हैं और सिर उठा के जीना भी जानती हैं। लड़की की शादी जिस भी उम्र में कर दी जाए, वह उसी उम्र से पति का घर भी संभालने लग जाती हैं, उन्हें इसके लिए किसी प्रशिक्षण की जरूरत नहीं होती। वह अपना घर छोड़कर एक नयी जगह को ही अपना घर बना लेती हैं। इससे इस बात का अंदाजा तो लगाया ही जा सकता है कि महिलाओं की परिपक्वता एवं सहनशीलता जो कि 21-25 की उम्र में उनमें आ जाती है वह ज्यादातर पुरुषों में बुढ़ापे तक नहीं आ पाती। पहले वे माँ पर जीते थे बाद में वे अपनी पत्नी पर जीने लगते हैं। जीने का आधार उन्हें चाहिए होता है औरतों को नहीं। बस, समाज में जो आडम्बर उन्होंने फैला रखा है वहाँ स्त्रियाँ ज्यादातर मात खा जाती हैं पुरुषों को जानने में। एक घरेलू औरत पूरा घर तो चला लेती है पर उसने घर के बाहर की ज़िंदगी जी नहीं होती है तो बाहर निकलते ही फँस जाती है।

आजकल लड़कियों को पढ़ाया लिखाया जाता है पर पाबंदियों के साथ। हर वो पाबंदी कि कैसे उठना-बैठना है, कैसे बात-चीत करनी है, कैसे, कितना और कब हँसना है, हर बात सिखायी जाती है, जिसे हम संस्कार कहते हैं। संस्कार के नाम पर बंधन ज्यादा सिखाया जाता है। चलो, फिर भी ठीक है, पर ध्यान देने वाली बात ये है कि ये बस लड़कियों को सिखाया जाता है। फिर जब उस आधुनिक पढ़ी-लिखी लड़की का विवाह होता है तो उससे सामान्यतया ये आशा की जाती है की अपनी माँ, दादी या अपनी सास की तरह घर संभालने में कार्यकुशल हो, परन्तु आजकल ज्यादातर औरतें अपने घर और बाहर के कामों में सामंजस्य नहीं बिठा पाती। वे अपनी माँ या सास की तरह नहीं बन पाती क्योंकि घर और बाहर के बीच पूरा सामंजस्य बिठा पाना कितना मुश्किल होता है। आधुनिक स्त्री यदि घर के काम में प्रवीण नहीं हैं तो बाहर तो पूर्णतया आत्मनिर्भर होगी ही है। परन्तु यहाँ भी ज्यादातर स्त्रियों को सामाजिक सुरक्षा की जरुरत पड़ती है, घर से बाहर पुरुषों के द्वारा दी गयी सुरक्षा की। क्योंकि असुरक्षा भी वही देते हैं और उन्हें भली-भांति पता होता है कि वे ये असुरक्षा कैसे पैदा करते हैं। स्वयं पर-स्त्री के लिए असुरक्षा का माहौल पैदा करते हैं और अपनी पत्नी और अपनी बेटी या बहन को उसी पैदा की गयी असुरक्षा से बचाने के लिए अपने पति, पिता या भाई होने का दायित्व पूरा करते हैं।

जरुरत तो पुरुषों को स्वयं आत्मनिर्भर बनने की है। वे बस घर के बाहर पुरुष होने का दंभ भरते है पर घर के अन्दर स्वयं के बूते कुछ नहीं कर पाते। घर के बाहर जब स्त्री और पुरुष दोनों भागीदारी निभा रहे होते हैं तो घर के अन्दर दोनों की भागीदारी क्यों नहीं? क्यों बस एक के कंधे पर भार हो और थोड़ी चूक होने पर सारी गलती उसकी हो जाये। आज पुरुषों को स्वयं को जानने की जरुरत है। अगर वो ज्यादा सामर्थ्यवान है तो बस आर्थिक जिम्मेदारी ही क्यों निभाते है। घर की हर जिम्मेदारी में हाथ बटाने की कोशिश क्यों नहीं करते? संस्कार औरतों को नहीं भूलना चाहिए जो उन्हें बचपन में सिखाया जाता ये अच्छी बात है पर क्या पुरुषों को ये सिखाया ही नहीं जाना चाहिए? ज्यादातर पुरुषों को ये नहीं सिखाया जाता है कि उन्हें कैसे रहना चाहिए, उनका व्यवहार कैसा होना चाहिए।

आज स्त्रियाँ स्वयं को पुरुष बनाना चाह रही हैं और इस कोशिश में वे अपने स्त्रीत्व खो रही हैं। कुछ नया पाने की चाह सही है पर पाने के लिए अपना अस्तित्व ही खो देना तो सही नहीं है। जो सुख उन्हें पाबंदियों और समाज की तय मर्यादा के हिसाब से रहने पर पुरुषों द्वारा मिलता है वह उन्हें स्वतंत्र होने के बाद मिलना बंद क्यों हो जाता है? एक आधुनिक आत्मनिर्भर स्त्री तो वे बन जाती है पर खुशियाँ उनके जीवन से दूर होने लगती है। तो क्या स्त्रियाँ आत्मनिर्भर होना छोड़ दें? यदि वे घर एवं बाहर के जीवन में सफल सामंजस्य बिठाने में असमर्थ हो जाती है तो क्या आधुनिक होना औरतों का अपराध है? क्या यहाँ जरूरत नहीं कि पुरुष बदलते वक्त को समझे और नयी जरूरतों को अपनाएं, जिम्मेदारियों को दोनों साथ-साथ बांटे? क्या प्रत्येक को अपना दायित्व स्वयं पहचानने की जरुरत नहीं है? आज जितनी जरुरत स्त्रियों के आर्थिक आत्मनिर्भर होने की है उतनी ही जरुरत पुरुषों को घरेलू कार्यों में आत्मनिर्भर होने की है। आज जितनी जरुरत पुरुषों को स्त्रियों के बदलते आयाम को समझने की है उतनी ही जरुरत स्त्रियों को अपने स्त्रीत्व को न भूलने की भी है। आत्मनिर्भर होने की जरुरत बस स्त्रियों को नहीं, दोनों को हैं, बस परिभाषा अलग-अलग है, जो उन्हें स्वयं ही समझने की जरुरत है।

अंतरिक्ष की कुछ रोमांचक घटनाएं

अनिल कुमार कमल
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्या-महानिदेशक, ले.प.(के.)
उ.प्र., लखनऊ

मनुष्य ब्रह्मांड को समझने के लिए सदैव आतुर रहा है। ब्रह्मांड के बारे में बहुत सारी प्राचीन अवधारणाएं समय के साथ परिष्कृत होती रही हैं। मनुष्य ने चाँद तारों से दूर ब्रह्मांड की अनंत गहराइयों का पता लगाने की दिशा में महत्वपूर्ण उपलब्धियां हासिल की हैं। अपनी बुद्धि के बल पर मनुष्य ने ब्रह्मांड की उत्पत्ति एवं उसकी आयु तक का पता लगा लिया है। अभी भी ब्रह्मांड में बहुत सारे अनसुलझे रहस्य मौजूद हैं, जिनके समझने में वैज्ञानिक दिन रात लगे हुए हैं। ब्रह्मांड की कुछ रोचक घटनाओं की संक्षिप्त जानकारी यहाँ प्रस्तुत है-

सुपरनोवा

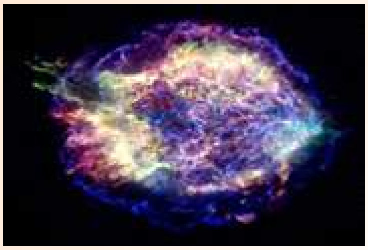

सुपरनोवा

ब्रह्मांड में अनंत आकाशगंगाएं हैं और इन आकाशगंगाओं में असंख्य तारे हैं। हमारी आकाशगंगा में ही 100 से 400 अरब तारे हैं। इन तारों की एक निर्धारित आयु होती है। वास्तव में तारे के केन्द्र में नाभिकीय संलयन से ऊर्जा पैदा होती है। जब किसी तारे का ईधन समाप्त होने लगता है तब उसका गुरूत्वाकर्षण बल अस्थिर हो जाता है और उसमें एक विस्फोट होता है। विस्फोट से उसके तत्व ब्रह्मांड में लाखों किमी दूर तक फैल जाते हैं। इस विस्फोट को ही सुपरनोवा कहते हैं।

निहारिकाएं (नेबुला)

निहारिका

जब किसी तारे में विस्फोट होता है तब उस तारे के पदार्थ ब्रह्मांड में गैस और धूल के रूप में लाखों किमी दूर तक फैल जाते हैं। इससे एक आकृति परिलक्षित होती है जिसे हम निहारिका (नेबुला) कहते हैं। विस्फोट के बाद तारे का कोर न्यूट्रान तारा या फिर ब्लैक होल बन जाता है। कभी-कभी उससे छोटे-छोटे तारों का जन्म भी होता है। निहारिकाओं को उनकी आकृति के अनुसार नाम दिए गए हैं जैसे कैटस आई नेबुला, ईगल नेबुला, हार्स हेड नेबुला इत्यादि।

ब्लैक होल

ब्रह्मांड के अनसुलझे रहस्यों में से एक है ब्लैकहोल। ब्लैक होल का जन्म तारे के विस्फोट से होता है, जिसे हम सुपरनोवा कहते हैं। विस्फोट के बाद तारे का घनत्व संकुचित होकर एक बहुत ही छोटे बिन्दु पर केन्द्रित हो जाता है। इस छोटे बिन्दु पर अत्यधिक द्रव्यमान केन्द्रित हो जाने के कारण उसकी गुरूत्वाकर्षण शक्ति बहुत अधिक बढ़ जाती है और उसका स्पेस और समय विकृत हो जाता है। इस बिंदु को सिंगुलेरिटी कहते हैं और इसके आस-पास के क्षेत्र को इवेंट होराइजन कहते हैं। इस प्रकार एक ब्लैक होल का निर्माण होता है। ब्लैक होल का गुरूत्वाकर्षण बल अत्यधिक होने के कारण वह अपने नजदीक आने वाले सभी पिंडों जैसे ग्रहों, तारों को निगल लेता है। यहाँ तक कि वह प्रकाश को भी अवशोषित कर लेता है। अभी हाल ही में वैज्ञानिकों ने इवेंट होराइजन टेलीस्कोप की सहायता से एम 87 नामक आकाश गंगा के केन्द्र में मौजूद ब्लैकहोल की वास्तविक तस्वीर जारी की है।

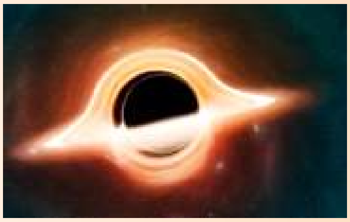

ब्लैकहोल

व्हाइट होल

वैज्ञानिकों के अनुसार जब ब्लैकहोल का अंत होता है तो वह निगले हुए सारे पदार्थ को बाहर फेंकना शुरू कर देता है, इसे ही व्हाइट होल कहते हैं। व्हाइट होल के अस्तित्व का कोई ठोस प्रमाण नहीं है। सापेक्षता के सिद्धान्त के अनुसार व्हाइट होल एक काल्पनिक क्षेत्र है जिसमें पदार्थ एवं प्रकाश का बाहर निकलना तो संभव है परन्तु इसमें बाहर से प्रवेश संभव नहीं है। वास्तव में व्हाइट होल, ब्लैकहोल की विपरीत स्थिति है।

व्हाइटहोल

वार्महोल

आइंस्टीन ने सापेक्षता के सिद्धांत का प्रतिपादन किया था। इसी सिद्धांत के आधार पर उन्होंने यह बताया कि अंतरिक्ष में किन्हीं दो स्थानों के बीच एक शार्टकट रास्ता संभव है, इस रास्ते को वार्महोल कहते हैं। अंतरिक्ष में किन्हीं दो स्थानों जिनके बीच की दूरी तय करने में लाखों प्रकाशवर्ष लगते है, वार्महोल के माध्यम से इस

वार्महोल

दूरी को बहुत ही कम समय में पूरा किया जा सकता है। एक अलग अवधारणा के अनुसाार वार्महोल के दो सिरे होते हैं जिसमें एक छोर पर ब्लैकहोल और दूसरे छोर पर व्हाइट होल होते हैं।

बिगबैंग

ब्रह्मांड की उत्पत्ति को लेकर विभिन्न अवधारणाएं हैं। उसमें से एक है बिगबैंग सिद्धांत। दरअसल हब्बल ने रेडशिफ्ट के प्रयोग से बताया था कि ब्रह्मांड तेजी से फैल रहा है। इससे यह निष्कर्ष निकाला गया कि सभी आकाशीय पिंड भूतकाल में किसी एक ही स्थान पर केन्द्रित रहे होंगे। वैज्ञानिकों के अनुसार आज से 13.8 अरब वर्ष पूर्व ब्रह्मांड का सारा पदार्थ एक ही स्थान पर था। उसमें एक महाविस्फोट हुआ जिससे अत्यधिक ऊर्जा का उत्सर्जन हुआ और पूरा ब्रह्मांड हाइड्रोजन और हीलियम से भर गया। बाद में इन्हीं से तारों, ग्रहों और आकाश-गंगाओं का जन्म हुआ। यही महाविस्फोट बिगबैंग कहलाता है।

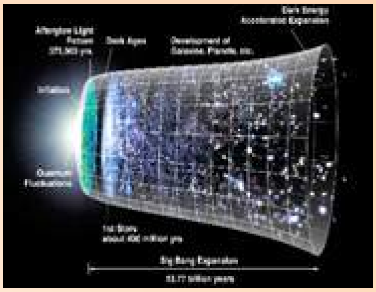
बिगबैंग

सारी दुनिया की माँओं के लिए

वीरेंद्र श्रीवास्तव
वरिष्ठ लेखापरीक्षक
कार्या-महानिदेशक, ले.प.(के.)
उ.प्र., लखनऊ
शाखा- प्रयागराज

किसी ख़ास दिन की
मोहताज नहीं मेरी माँ
हर लम्हा हर पल
बहुत ख़ास है मेरी माँ।

कहीं अम्मा है तो अम्मी है कहीं
किसी की माई है माँ भी है वही
किसी भी नाम से पुकारो उसको
खुदा का करम है एहसान है मेरी माँ।

अपनी तकलीफ की कतरन
किसी गठरी में छुपा देती है
जब देखती है मेरी उलझन
दुआ की चादर तान देती है
उसके आँसू भी दुआ
हँसी भी दुआ।

उठती है जो निगाह मुझ पर
वो भी बनती है दुआ
उसकी झिड़की भी दुआ
मोहब्बत भी दुआ।

उठती है जब सजदे में गिरकर
अपनी नम आँखों से
छलकाती है दुआ मेरी माँ।
किरदार निभाने में उसे महारत है
कई किरदार से लिखी एक इबारत है
अजब है मेरी माँ।

चूल्हा चौके का इंतजाम है वो
जायकों में छिपा प्यार है वो
मेहमानों की मेजबान है वो
रिश्तों का फिक्र-ओ-ख़्याल है वो
उस्ताद कभी तो दोस्त भी वो
अनकहे राज़ की राज़दार है वो
सीखा नहीं मगर उसको आता है
बीमारी में क्या ख़ूब तीमारदार है वो
उसके पैरों में जन्नत है ये कहते हैं
मगर खुद में पूरा का पूरा
संसार है मेरी माँ।

किसी एक ख़ास दिन की मोहताज
नहीं मेरी माँ
हर लम्हा हर पल
बहुत ख़ास है मेरी माँ।

बीच रास्ते से लौटने का कोई फायदा नहीं, क्योंकि लौटने पर आपको उतनी ही दूरी तय करनी पड़ेगी, जितनी दूरी तय करने पर आप लक्ष्य तक पहुँच सकते है।

मुसीबतों से भागना, नयी मुसीबतों को निमंत्रण देने के समान है। जीवन में समय-समय पर चुनौतियों एवं मुसीबतों का सामना करना पड़ता है एवं यही जीवन का सत्य है। एक शांत समुन्द्र में नाविक कभी भी कुशल नहीं बन पाता।

महाभारत- कुछ रोचक तथ्य

सत्यशील
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्या-महानिदेशक, ले.प.(के.) उ.प्र., लखनऊ

22 मार्च 2020 को पूरे देश में कोरोना वायरस के कारण लॉकडाउन की घोषणा कर दी गई। भारत सरकार द्वारा देश के सभी नागरिकों से घर के भीतर रहने की अपील की गई। लॉकडाउन की शुरूआत के कुछ दिन तो ठीक-ठाक लगा किंतु जैसे-जैसे लॉकडाउन बढ़ाया गया तो ऐसा लगने लगा कि जिंदगी जैसे थम सी गई है। इसी बीच दूरदर्शन चैनल पर 1980 के दशक की निर्मित रामायण और महाभारत सीरियल के पुनः प्रसारण की घोषणा की गई। 1988 में जब सबसे पहली बार दूरदर्शन पर धारावाहिक महाभारत का प्रसारण हुआ था उस समय मैं मुश्किल से 8 साल का था। जब से तो बस उसकी कुछ स्मृतियां ही शेष रह गई थी। अतः 30-32 साल बाद पुनः इसी सीरियल को देखना अपने आप में एक रोमांच था। अतः इस बार मैंने महाभारत सीरियल को पूरे परिवार के साथ बैठकर देखने का निर्णय लिया। मैं यह भी चाहता था कि मेरे बच्चे भी इन सीरियलों को देखें ताकि उन्हें भारत देश के प्राचीन इतिहास एवं गौरव का ज्ञान हो। रामायण और महाभारत मात्र केवल धार्मिक ग्रंथ ही नहीं है बल्कि करोड़ों लोगों की आस्था का प्रतीक हैं। रामायण हमें यह सिखाती है कि हमें जीवन में क्या करना चाहिए और महाभारत में यह सिखाती है कि हमें जीवन में क्या नहीं करना चाहिए।

धारावाहिक महाभारत को पुनः देखने पर मुझे इसके बारे में और जानने की जिज्ञासा हुई। अतः बहुत सी जानकारियाँ मिली जिनमें से कुछ जानकारियाँ मैं आपके साथ साझा कर रहा हूँ।

1. **महाभारत युद्ध में 18 अंक का बहुत महत्व है:** ऋषि वेदव्यास ने महाभारत ग्रंथ की रचना की थी। इस ग्रंथ में कुल 18 पर्व हैं। भागवत गीता में 18 अध्याय हैं। भगवान कृष्ण ने 18 दिन तक अर्जुन को गीता का ज्ञान दिया था। महाभारत का युद्ध 18 दिनों तक चला था महाभारत के युद्ध में कुल 18 अक्षौहिणी सेना ने भाग लिया था जिसमें से 7 अक्षौहिणी सेना पांडवों की तरफ से तथा 11 अक्षौहिणी सेना कौरवों की तरफ से युद्धरत थीं।

2. **क्या महाभारत का युद्ध पांडवों और कौरवों के बीच लड़ा गया था?**

   कुरु वंश के वंशजों को कौरव कहा जाता था। महाराज शांतनु इस वंश के प्रतापी राजा थे। उन्होंने पहला विवाह गंगा से किया और जिनसे पुत्र भीष्म पैदा हुए। शांतनु ने दूसरा विवाह सत्यवती से किया, इस विवाह से उनके दो संतानें चित्रांगद और विचित्रवीर्य हुए। इन दोनों की जल्द ही मृत्यु हो गई। विचित्रवीर्य की दो पत्नियाँ अंबिका और अंबालिका निसंतान रह गई। भीष्म की आजीवन अविवाहित रहने की प्रतिज्ञा के कारण सत्यवती ने वेदव्यास को यह जिम्मेदारी दी कि उनसे अंबिका और अंबालिका को पुत्र प्राप्ति हो। वेदव्यास, सत्यवती व पराशर मुनि के पुत्र थे। अंबिका से धृतराष्ट्र एवं अम्बालिका से पांडु का जन्म हुआ इस प्रकार से देखा जाए तो पराशर मुनि का वंश आगे बढ़ा।

3. युधिष्ठिर तथा अन्य भाई पांडव पुत्र नहीं थे। राजा पांडु को श्राप मिलने के कारण उनकी कोई संतान नहीं हुई थी। उनकी पत्नी कुंती को दुर्वासा ऋषि ने ऐसा मंत्र दिया था जिससे वह किसी भी देवता का आह्वान करके संतान प्राप्त कर सकती थी। युधिष्ठिर धर्मराज के, भीम वायु देव के, अर्जुन इंद्रदेव के, नकुल व सहदेव अश्विनी कुमारों के पुत्र थे।

4. बर्बरीक गदाधारी भीम के पौत्र तथा घटोत्कच के पुत्र थे। बर्बरीक की माँ ने उन्हें हमेशा यही सिखाया था कि हमेशा हारने वाले की तरफ से युद्ध करना और वह इसी सिद्धांत पर युद्ध करते थे। माँ आदिशक्ति की घोर तपस्या करके उन्होंने तीन अभेद्य बाण प्राप्त किए, जिस कारण से वह तीन बाणधारी के नाम से प्रसिद्ध हुए। भगवान श्रीकृष्ण बर्बरीक की शक्तियों को जानते थे वे यह भी जानते थे कि युद्ध में कौरवों की पराजय होगी और स्थिति में बर्बरीक ने कौरवो का साथ दिया तो युद्ध का परिणाम दूसरा हो सकता है।

   बर्बरीक को युद्ध में भाग न ले, इसके लिए भगवान श्रीकृष्ण ने उनका शीश दान में माँग लिया। बर्बरीक अपना शीश देने को तैयार हो गए, किंतु उन्होंने महाभारत युद्ध देखने की इच्छा जताई अतः बर्बरीक का शीश युद्धभूमि के समीप एक पहाड़ी पर रख दिया गया जहाँ से उन्होंने पूरा युद्ध देखा।

   भगवान श्रीकृष्ण बर्बरीक के इस महान बलिदान से काफी प्रसन्न हुए और उन्हें यह वरदान दिया कि जैसे-जैसे कलयुग का अवतरण होगा तुम्हें खाटू श्याम के नाम से जाना जाएगा। वर्तमान में खाटू श्याम का प्रसिद्ध मंदिर राजस्थान के सीकर

जिले में स्थित है। इसलिए खाटू श्याम को 'हारे का सहारा' भी कहा जाता है।

5. **पाँच पीढ़ियों का युद्धः**

महाभारत के युद्ध में पाँच पीढ़ियों ने एक साथ युद्ध किया। प्रथम पीढ़ी में भीष्म पितामह, द्वितीय में धृतराष्ट्र, तीसरी पीढ़ी में युधिष्ठिर, भीम, दुर्योधन तथा चौथी पीढ़ी में भीम पुत्र घटोत्कच, अर्जुन पुत्र अभिमन्यु तथा पाँचवी पीढ़ी में घटोत्कच पुत्र बर्बरीक शामिल थे।

पूरे विश्व को गीता का ज्ञान देने वाले भगवान श्रीकृष्ण को रणछोड़ भी कहा जाता है। रणछोड़ का अर्थ है युद्ध भूमि को छोड़कर भाग जाना। जरासंध ने मथुरा पर चढ़ाई कर दी जिससे भगवान श्रीकृष्ण मथुरा छोड़कर द्वारिका में जा बसे। इसी वजह से भगवान श्रीकृष्ण को रणछोड़ भी पुकारा जाता है। वर्तमान समय में द्वारिका का सबसे बड़ा मंदिर रणछोड़ जी महाराज का मंदिर है।

6. **आज भी जीवित हैं महाभारत के पात्रः** ऐसी मान्यता है कि आठ लोग अमर हैं और इनका नित्य स्मरण करने से शरीर के सारे रोग समाप्त हो जाते हैं तथा व्यक्ति दीर्घायु होता है। इन लोगों में महाभारत काल के व्यक्ति भी शामिल हैं। इन आठ लोगों के नाम निम्न हैः-

1. हनुमान 2. विभीषण 3. परशुराम 4. ऋषि मार्कंडेय 5. राजा बलि 6. वेदव्यास 7. कृपाचार्य 8. अश्वत्थामा

महाभारत युद्ध में धृतराष्ट्र के सभी पुत्रों में से, एक पुत्र युयुत्सु ही जिंदा बचे। इनके बारे में कहा जाता है कि वह युद्ध प्रारंभ होने से पूर्व कौरवों की सेना छोड़कर पांडवों की सेना में शामिल हो गए थे।

दुर्योधन का असली नाम सुयोधन था जिसका अर्थ था एक महान योद्धा। लेकिन वह स्वयं दुर्योधन था जिसने अपना नाम सुयोधन से दुर्योधन कर लिया जिसका अर्थ था एक ऐसा व्यक्ति जिसे कभी हराया नहीं जा सकता था।

अंत में प्रस्तुत है गीता का ये श्लोक

"यदा-यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत अभ्युत्थानम अधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्। परित्राणाय साधूनाम् विनाशाय च दुष्कृताम, धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे-युगे।।

शब्दार्थः- मैं अवतार लेता हूँ, मैं प्रकट होता हूँ, जब-जब धर्म की हानि होती है तब-तब मैं आता हूँ जब-जब अधर्म बढ़ता है तब-तब मैं साकार रूप से लोगों के सम्मुख प्रकट होता हूँ। सज्जन लोगों की रक्षा के लिए मैं आता हूँ दुष्टों का विनाश करने के लिए मैं आता हूँ, धर्म की स्थापना के लिए मैं आता हूँ और युग-युग में जन्म लेता हूँ।

प्रभु तेरा सहारा

सतीश कुमार राम
एम.टी.एस.
कार्या-महानिदेशक, ले.प.(के.)
उ.प्र., लखनऊ

गुरुवर तेरे चरणों की अगर धूल जो मिल जाए।
सच कहता हूँ गुरुवर तकदीर संभल जाए
सुनता हूँ दया तेरी दिन-रात बरसती है।
एक बूंद जो मिल जाए मन की कली खिल जाए......गुरुवर तेरे

ये मन बड़ा चंचल है कैसे तेरा भजन करूँ।
जितना इसे समझाऊँ उतना ही मचलता है............गुरुवर तेरे

नजरों से गिराना ना चाहे कितनी भी सजा देना।
नजरों से जो गिर जाए मुश्किल है संभल पाये.........गुरुवर तेरे

फरियाद को सुनने में है कौन सिवा तेरे।
गुरु तूँ ना सुनेगा तो अब किसको सुनाना है
ध्यान कर गुरु चरणों की सतीश ने रचना कर डाला।
...........गुरुवर तेरे

कब होंगे आजाद

जब हमारा देश आजाद नहीं था।
अब हमारा देश आजाद हो गया है
आजादी के तिहत्तर वर्ष बीत चुके।
लेकिन अभी गरीब लोग आजाद नहीं हुए हैं
जागो देशवासी, मजदूर, किसान और शोषित लोग।
अपनी आजादी पाने के लिए चल दिये
देश को आजाद करवाने के लिए।
कितने घर से बेघर हो गए
कितनों के माँग का सिंदूर धुल गया।
कितनों के भाई परदेश गए
लेकिन कभी नहीं भेजे पत्र और संदेश।
कितनों के पति और पुत्र सीमा क्षेत्र युद्ध में मारे गए
लौट के दिन-रात बिताने नहीं आये।
देश गरीबी आजाद का ध्वजा फहराके
पूरा करेंगे डॉ. भीमराव अंबेडकर का सपना।
और महात्मा गाँधी जी का सपना पूरा करना है।
देश गरीब हुआ बार-बार युद्ध और अनेकों बीमारी में।
पैसा का पता नहीं चलता है घोटाला के कराई में।

आपकी कीमत इसमें है कि आप क्या हैं, इसमें नहीं कि आपके पास क्या है। -थॉम्स अल्वा एडिसन

धुंए का अस्तित्व

श्री धीरेन्द्र किशोर
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्या-निदेशक,
वित्त एवं संचार लेखापरीक्षा,
लखनऊ

क्यों आपकी आँखों से
धुंए के अस्तित्व झलकते हैं?
शनैः-शनैः-----
गाढ़ी होती धुंए की परतें!
दम घोंटती धुंए की चादर!!
क्यों आपकी आँखों से
धुंए के अस्तित्व झलकते हैं?

सड़कों पर दौड़ती चीटियाँ;
मकानों से झाँकती वीरानियाँ;
किसी से अनजाने में ही छलक पड़ती हैं-
श्मशानों की खामोशियाँ!
किसके लिए यह कष्ट कर रही हैं?
किसके लिए यह त्याग कर रही हैं?
शायद सम्पूर्ण मानव जाति के हित में
क्योंकि इंसान ही को प्रेम है-
वीरानगी से।

क्या यह ग्लोब के टुकड़ों की भूखी हैं?
मेरा लहू बिकाऊ है।
आप क्यों नहीं खरीद लेते?
इन्हें मेरा लहू पिलाईये, अर्पित कीजिये
इसी की तो इन्हें प्यास है - आस है;
मेरा मांस -
उनके आगे फेंकिये/भक्षण कराइए -
इसी के वह भूखे हैं।
लेकिन-
क्यों आपकी आँखों से
धुंए के अस्तित्व झलकते हैं?

सूखे होठों पर खेलती हँसी;
ज़िन्दगी मौत से जूझती-सी कहीं;
साँस लेते ही अचानक कसमसाने लगी
मौत फिर से कहीं।
किसने कहा है-
खून सारा ही पी लो?
किसने कहा है-
मांस सारा ही खा लो?
न कोई अब भूख से त्रस्त है।
न रहेगा।
न अब कोई कमजोर है।
न रहेगा। क्योंकि -
दूध की सरिता प्रवाहशील है
दुग्ध-समाधि क्यों नहीं ले लेते??
बाढ़ की अतुलनीय जलराशि में हुई
जल-समाधि की भाँति।

क्यों नहीं-
बहती गंगा में हाथ धो लेते हैं?
देखते नहीं कितनी सुविधा है!
राम-राज्य है!!
स्वराज्य है!!!
अहिंसा-वाद है!!!!
और तो और
समाजवाद का (मामूली सा) बोझ
शायद है-
कल ही उसमें दबकर
उस दुर्बल निर्बल प्रजा की,
मौत हो गयी है
जिसकी झुकी पीठ पर
इस समाजवाद का ढोंग लदा था।
बोझ है तो क्या?
है तो समाजवाद ही।
लेकिन-क्यों आपकी आँखों से-
धुंए के अस्तित्व झलकते हैं?

भीड़ हमेशा उस रास्ते पर चलती है जो रास्ता आसान लगता है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि भीड़ हमेशा सही रास्ते पर चलती है। अपने रास्ते खुद चुनिए क्योंकि आपको आपसे बेहतर और कोई नहीं जानता।

उदासीनता का जाल

प्रस्तुति- रोमी सुल्तान
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्या-महानिदेशक, ले.प.(के.) उ.प्र., लखनऊ

रिश्तों में आत्मीयता की कमी आज हमारी संस्कृति की सबसे बड़ी चुनौती है। आजकल, हम सोशल मीडिया के **फॉलोवर्स** चाहते हैं, पर **फ्रेंड्स** नहीं। **लाइक्स** चाहते हैं पर **लव** नहीं। **कमैंट्स** चाहते हैं पर **कन्वरसेशन** (चर्चा) नहीं। **क्राउड़** (भीड़) चाहते है पर **कम्पैनियन** (साथी) नहीं। आज हमारे समाज में संबंधों से जुड़े नये प्रकार के अनुभव लोकप्रिय हो रहे हैं, जो हमारे फोन **कॉन्टेक्ट्स** को तो विस्तार देते हैं, पर दूसरों के साथ हमारे गहरे और सार्थक सम्बन्धों **(कनेक्शन्स)** की महत्ता को कम कर रहे हैं। **मैं, मुझे, मेरा** की प्राथमिकता ने **हम, हमे, हमारे** की भावना को खत्म कर दिया है और परिणाम यह है कि आजकल लोग स्वयं को पहले से कहीं ज्यादा अकेला महसूस करने लगे हैं। हमारा समय **एकाकीपन का युग** हो गया है।

एकाकीपन हमें इस तरह से कैद करता है ताकि जब हम अकेले महसूस करें, तो हम ये मान ले कि ऐसा महसूस करने वाले हम ही एकमात्र हैं। किसी बहुत बड़े नुकसान के दर्द में, बुरी आदतों में, अपनी शादी में भी आप अकेला महसूस कर सकते हैं। एक अभिभावक के रूप में बच्चों का पालन करते हुये, एक व्यवसायी के रूप में अपनी जिंदगी को संतुलन प्रदान करने के प्रयास में, एक विद्यार्थी के रूप में अपनी पहचान बनाने में संघर्षरत, आप स्वयं को अकेला महसूस कर सकते हैं। जब हम अकेला महसूस करते हैं, तब हम स्वयं को गुमनाम महसूस करने लगते हैं। और कभी-कभी उन क्षणों में, हमें लगता है कि हमें हमारी पहचान से भी हाथ धोना पड़ जायेगा। **अकेला होना** बहुत खतरनाक हो सकता है।

हमें 'सम्बन्धों के लिए' ही बनाया गया था। हमें 'पहचाने जाने के लिए' बनाया गया था। प्रारम्भ में, एकाकीपन हमारी ज़िंदगी में कुछ उद्देश्यों की पूर्ति कर सकता है। पर एकाकीपन के अस्तित्व को बनाये रखने के कारण सीमित हैं और इनमें से एक भी उचित नहीं है। इन कारणों में सर्वोपरी है **उदासीनता** अर्थात **प्रेम का विलोम**।

उदासीनता का अर्थ है, किसी बात से फर्क न पड़ना। **मुझे फर्क नहीं पड़ता** वाला हमारा दृष्टिकोण, हमारे प्रेम करने और प्रेम पाने की इच्छा को कैद कर हमें जीवन भर गुमनाम और अकेला महसूस करने के लिए छोड़ देता है। हमारी उदासीनता हमें महसूस करने से रोकने वाले एक रोधी तंत्र के रूप में काम करती है। **मुझे फर्क नहीं पड़ता, लोग मेरे बारे में क्या सोचते हैं** जैसे कथनों की दीवारों के पीछे हम खुद को सुरक्षित कर लेते हैं, लेकिन ईमानदारी से कहें तो सच्चाई इसके विपरीत है।

लोग हमारे बारे में क्या सोचते हैं, हम इसकी इतनी ज्यादा परवाह करते है कि **'कोई हमारी चालाकियाँ, ताकतें, कमजोरियाँ, विचार, खूबियाँ और खामियाँ जान ले'** के विचार से हम मुकाबला नहीं कर सकते। क्योंकि यह उन्हें हमारी भेद्यता (वलनरेबिलिटी) के स्तर के आधार पर हमें स्वीकार या अस्वीकार करने की आजादी प्रदान करती है।

इसलिए प्रायः हम अपनी एक बनावटी छवि बना लेते हैं, और अपने हर सम्बन्ध को संबंधजनित अनुभव के उथले सिरे पर धकेल देते हैं। क्योंकि हम जानते हैं कि तिरस्कृत होना कितना बुरी तरह से घायल कर सकता है, हम डरते हैं कि कोई हमें जान सकता है और हमे पसंद न करने का फैसला ले सकता है। किन्तु भेद्यता ही घनिष्ठता की नींव है और यदि आप भेद्य, ईमानदार और खुले दिल वाले नहीं हो सकते, तो आप कभी भी दिखावट की इस भयानक कैद से खुद को बचा नहीं पाओगे। आप कभी भी अपनी वास्तविकता को पूर्ण रूप से अपना नहीं पाओगे।

***टोरेन वेल्स* के अंग्रेजी लेख का भावानुवाद**

जिस साहित्य से हमारी सुरुचि न जागे, आध्यात्मिक और मानसिक तृप्ति न मिले, हम में गति और कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करने की सच्ची दृढ़ता न उत्पन्न करे, वह हमारे लिए बेकार है वह साहित्य कहलाने का अधिकारी नहीं है।

- प्रेमचंद

कोई भी, जिसने सीखना छोड़ दिया चाहे उसकी उम्र बीस साल हो या अस्सी साल, वो बूढ़ा है। कोई भी जिसने ज्ञान प्राप्त करना जारी रखा हुआ है वो युवा है।

- हेनरी फोर्ड

आत्महत्या-आखिर क्यों?

अखिलेश कुमार
आँकड़ा प्रविष्टि प्रचालक
कार्या-निदेशक, वित्त एवं संचार लेखापरीक्षा, लखनऊ

आत्महत्या बना दो शब्दों के मेल से है,
पर यूँ समझिए कि दुनिया से खत्म खेल से है।

आज के इस भौतिकतावादी परिवेश में एक आँकड़े के मुताबिक विश्व भर में प्रत्येक वर्ष 8 लाख से अधिक लोग खुद से परेशान होकर इस दुनिया से अलविदा कह जाते हैं जिसमें से 1.50 लाख भारतीय होते हैं। ''आपने आत्म हत्या करने के बारे में क्यों सोचा'' मेरा यह प्रश्न उन लोगों से बिल्कुल नहीं है जो इस दुनिया को छोड़ गये बल्कि उन सबसे है जो भगवान के दिये हुए अनमोल जीवन को संजोए हैं या संजो कर रखने का प्रयास कर रहे हैं। क्या आपने कभी सोचा कि लोग खुद की जान गँवाने के लिए क्यों आतुर होते हैं? क्या उनके जीवन के लक्ष्य की पूर्ति समय से पहले हो गई या लक्ष्य ही ऐसा था कि पूरा नही हो सकता था। हर शाम के बाद सुबह आती है। क्या उन्हें उस आने वाली सुबह पर भरोसा नही था? क्या सुख-दुख के चक्र से वे वाकिफ नही थे? क्या मानसिक रूप से वे इतने कमजोर थे कि परिवर्तन के नियम को नहीं समझ सके? और सबसे महत्त्वपूर्ण प्रश्न यह है कि जिस जीवन को आपने समाप्त कर दिया, उसको समाप्त करने का आपको क्या हक था? अगर आपने उस जीवन को जन्म भी दिया होता तो भी उसको मारने का हक नहीं है।

दोस्तों अधिकांश लोगों के जीवन में एक क्षण ऐसा आता है जब खुली आँखों के सामने सिर्फ अंधकार ही अँधकार नजर आता है। ऐसा प्रतीत होता है कि जीवन अब व्यर्थ व निरर्थक है क्योंकि जिस लक्ष्य की चाहत थी उसकी पूर्ति अब असम्भव दिख रही है तमाम प्रकार की नकारात्मकताएं मानसिक संतुलन को बिगाड़ने का प्रयास कर रही होती हैं ऐसा लगता है कि अब ये दुनिया मेरे काम की नहीं है या यूँ कहें कि अब मैं इस दुनिया में किसी काम का नहीं, किसके लिए जिऊं मेरा तो उद्देश्य पूरा ही नहीं हुआ और अब हो भी नहीं सकता। ऐसे ख्याल आने पर दोस्तों थोड़ी देर के लिए रुकें और विचार करें कि आपके न रहने पर किसको फर्क पड़ेगा आपको जवाब स्वयं से ही मिल जायेगा कि किसी के चले जाने से दुनिया नहीं रुकती है कोई चार दिन या हफ्ते भर या महीने भर परेशान होगा उसके बाद वह आपका विकल्प निकाल लेगा। पर यह भी सही है कि कुछ ऐसे लोग भी हैं जिनकी आँखों में आप जीवन भर के लिए आँसू छोड़ कर जा रहे हैं वे जिन्दा होकर भी मृतप्राय रहेंगे, उनके पास आपका विकल्प नहीं हैं जैसे कि आपके माँ-बाप। यह आपका सबसे बड़ा गुनाह होगा, बस यही आपको समझना है कि जिस चीज की वजह से आपका जीवन से मोह भंग हो रहा है उसका भी विकल्प उपलब्ध है, बस सही वक्त और आपके लगन की जरूरत है और ये तभी संभव है जब आप जीवित रहेंगे।

आत्महत्या के कारण हर उम्र वर्ग में अलग-अलग हो सकते हैं, जैसे कोई विद्यार्थी है तो यह हो सकता है कि वह परीक्षा को लेकर चिन्तित हो या दूसरे विद्यार्थी को देखकर मन में हीन भावना का शिकार हो रहा हो या युवा हो और मनचाही नौकरी न मिलने की वजह से परेशान हो या किसी स्त्री/पुरुष के प्रेम में लिप्त हो, पर हासिल कर पाना मुश्किल लग रहा हो। कोई वृद्ध व्यक्ति होगा उसके पास अपनी अलग समस्यायें, आर्थिक या सामाजिक समस्या जिससे वह परेशान हो सकता है। परन्तु समस्या कोई भी हो, उसका विकल्प जीवन को समाप्त करना नहीं होता, बल्कि जीवन का नाम ही संघर्ष है अर्थात हमें उस परेशानी से मुक्ति के लिए प्रयास करना है और जैसा मैंने ऊपर जिक्र किया है कि हर समस्या का हल है और हर चीज का विकल्प मौजूद है। कोई व्यक्ति उम्मीद टूटने पर भी पूरी तरह से टूट जाता है जैसे कृषक, वह खेती में खुद के द्वारा की गई मेहनत के कारण पैदावार को लेकर बहुत ही आशान्वित होता है परन्तु जब मौसम की थपेड़, जैसे-सूखा या तेज बारिश या बर्फबारी की वजह से फसल नष्ट हो जाती है और उसे उसकी जीविका दुर्लभ प्रतीत होती है और कहीं से सहायता की गुंजाइश शेष नहीं रह जाती तो वह आत्महत्या के लिए मजबूर हो जाता है। ऐसी स्थिति में इस अनहोनी को रोकने के लिए उस व्यक्ति को या वर्ग को मजबूत होना पड़ेगा जब एक रास्ता बन्द होता है तो दूसरा रास्ता आपको एक नये अवसर के रूप में आमन्त्रित करता है।

आज के दौर में इंसानियत कम होती जा रही है, किसी वर्ग विशेष द्वारा किसी वर्ग विशेष या व्यक्ति विशेष को मानसिक या शारीरिक रूप से इतना प्रताड़ित कर दिया जाता है कि वह वर्ग या व्यक्ति अपने आपको इतना तुच्छ मान लेता है कि उसमें और अधिक संघर्ष की इच्छा ही समाप्त हो जाती है और आत्महत्या के लिए मजबूर हो जाता है।

आत्महत्या का एक प्रमुख कारण यह भी है कि खुद के द्वारा की गई गलतियाँ, जिसका अब इतना अधिक पछतावा हो रहा हो कि बार-बार उन्हीं गलतियों की तस्वीरें आँखों के सामने मँडरा रही हों, परन्तु उन गलतियों को सुधारने का अवसर अब हमारे पास न हो; ऐसी स्थिति में भी हमें धैर्य से काम लेना चाहिए। अपनी उन गलतियों को स्वीकार व प्रायश्चित करते हुए, पुनः उसके स्थान पर एक ऐसा कार्य करने का निश्चय करना चाहिए, जिससे वह हमारे द्वारा की गई गलती का जीवन भर पछतावा न रहे, बल्कि हमें यह महसूस हो कि हमने उसके स्थान एक सराहनीय कार्य किया है, इससे जीवन जीने की एक नई राह मिलेगी और हम मानसिक अवसाद के शिकार होने से बचेंगे।

धनुषकोडी- एक विस्मृत तीर्थस्थल

मंजुला श्रीवास्तव
वरिष्ठ निजी सचिव
कार्या-प्र.म.ले. (लेखापरीक्षा-II)
उ.प्र., लखनऊ

धनुषकोडी, भारत के दक्षिण–पूर्व के अंत के अग्रभार पर स्थित हिन्दुओं का एक पवित्र तीर्थस्थल है जो पवित्र रामसेतु का उदगम स्थान है। लगभग 50 वर्षों से हिन्दुओं के इस पवित्र तीर्थस्थली की अवस्था एक ध्वस्त नगर के समान हो गई है। ऐसा कहा जाता है कि 22 दिसम्बर 1964 में यह नगर एक चक्रवात के आने से ध्वस्त हो गया था और उसके उपरांत 50 वर्षों में इस तीर्थस्थल का पुनरुथान करने की बात तो दूर, अपितु शासन द्वारा इस नगर को भूतों का नगर घोषित करके उसकी अवमानना की गई। इस घटना को भी बीते हुए 50 वर्ष पूरे हो गई हैं।

धनुषकोडी के दक्षिण के ओर स्थित हिन्द महासागर गाढे नीले रंग का और उत्तर के ओर स्थित बंगाल का उपसागर मैले काले रंग का दिखाई देता है। इन दोनों सागरों की दूरी 1 कि.मी. की भी नहीं है। यद्यपि दोनों सागरों का पानी नमकीन है फिर भी धनुषकोडी में 3 फुट का यदि गढ़ढा खोदा जाए तो उसमें मीठा पानी आता है। क्या यह प्रकृति द्वारा निर्मित चमत्कार नहीं है।

धनुषकोडी के नाम का नगर तमिलनाडु राज्य के पूर्वी तट पर स्थित रामेश्वरम् नाम के तीर्थस्थल के दक्षिण की ओर 11 कि.मी. की दूरी पर स्थित है जहाँ से श्री लंका मात्र 18 कि.मी. है। यह बंगाल के उपसागर (महोदधि) और हिन्द महासागर (रत्नाकर) के पवित्र संगम पर बसा है और अनुमानतः 50 गज चौड़ा बालू से व्याप्त स्थान है। ऐसा माना जाता है, जैसे उत्तर भारत में काशी की धार्मिक महिमा है वैसे ही दक्षिण भारत में रामेश्वरम की है एवं यह हिन्दुओं के पवित्र चार धामों में से एक धाम भी है। पुराण एवं धर्मग्रंथों के अनुसार काशी विश्वेश्वर की यात्रा रामेश्वरम के श्री रामेश्वरम के दर्शन किये बिना पूरी नहीं होती है, काशी की तीर्थयात्रा बंगाल के उपसागर और हिन्द महासागर के संगम पर स्थित धनुषकोडी में स्नान करने पर और उसके बाद काशी के गंगाजल से रामेश्वर को अभिषेक करने के उपरांत ही पूरी होती है।

रामसेतु के पहले भाग को धनुषकोडी अर्थात धनुष का अग्रभाग कहते हैं। ऐसा माना जाता है कि साढ़े सत्रह लाख वर्ष पूर्व रावण की लंका में (श्रीलंका) प्रवेश करने के लिए प्रभु श्रीराम ने 'कोदंड' नामक धनुष के अग्रभाग से सेतु बनाने के लिए यह स्थान निश्चित किया था। यहाँ एक ही रेखा में विद्यमान बड़े-बड़े पाषण क्षेत्रों की श्रृंखला भग्न अवशेषों के रूप में आज भी देखने को मिलती है। रामसेतु नल और नील की वास्तुकला का एक अद्भुत नमूना है। वाल्मीकि रामायण में वर्णन मिलता है कि रामसेतु की चौड़ाई और लम्बाई का अनुपात 1:10 है और इस सेतु के निर्माण कार्य के समय गिलहरी द्वारा दिए गए योगदान की कथा और पानी पर तैरते हुए पत्थरों के विषय में भी जानकारी है, जिसके बारे में हम अपनी पीढ़ियों से सुनते चले आये हैं। श्रीराम-रावण के महायुद्ध के पहले धनुषकोडी नगर में ही रावण के भाई विभीषण प्रभु श्रीराम के शरण में आये थे। श्रीलंका के युद्ध के समाप्ति के पश्चात प्रभु रामचंद्र ने इसी नगर में विभीषण का सम्राट के रूप में राज्याभिषेक किया था। इसी समय लंकाधिपति विभीषण ने प्रभु रामचंद्र जी से कहा था कि भारत के शूर और पराक्रमी राजाराम सेतु का उपयोग करके बार-बार श्रीलंका पर आक्रमण करेंगे और श्रीलंका की स्वतंत्रता को नष्ट करेंगे, इसलिए प्रभु आप इस सेतु को नष्ट कर दीजिये। अपने भक्त की प्रार्थना को सुनकर दंडधारी प्रभु श्रीरामचंद्र ने रामसेतु पर बाण छोड़कर उसे पानी में डूबा दिया था जिस कारण से यह सेतु पानी से 2-3 फुट नीचे की ओर चला गया है। कहा जाता है कि आज भी कोई रामसेतु पर खड़ा होता है तो उसके कमर तक पानी रहता है।

ऐसा भी उल्लेख मिलता है कि ब्रिटिश काल में धनुषकोडी एक बड़ा नगर था और रामेश्वरम एक छोटा सा गाँव। यहाँ से श्रीलंका जाने के लिए नौकाओं की सुविधा हुआ करती थी। उस समय श्रीलंका जाने के लिए पासपोर्ट की जरूरत नहीं पड़ती थी। धनुषकोडी से थलाइमन्नार (श्रीलंका) तक के नौका यात्रा का टिकट 18 रुपये मात्र था। इन नौकाओं द्वारा व्यापारी वस्तुओं का लेन-देन भी करते थे। वर्ष 1893 में अमेरिका में धर्म-संसद के लिए गए स्वामी विवेकानंद वर्ष 1897 में श्रीलंका मार्ग से जब भारत वापस आये तो वह धनुषकोडी की ही भूमि पर उतरे थे। वर्ष 1964 में धनुषकोडी एक विख्यात पर्यटन स्थल और तीर्थस्थल भी था। श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए यहाँ होटल, कपड़ों की दुकानें और धर्मशालाएं भी थी और साथ में जलयान निर्माण केंद्र, रेल स्थानक, छोटा रेल चिकित्सालय, पोस्ट कार्यालय और मत्स्यपालन जैसे कुछ शासकीय कार्यालय भी थे। उस समय यहाँ चेन्नई और धनुषकोडी के मध्य में 'मद्रास एग्मोर' से 'बोट मेल' नामक रेल सेवा थी और उससे आगे जाने के लिए श्रीलंका में फेरीबोट उपलब्ध थी, मगर वर्ष 1964 में आया चक्रवात धनुषकोडी को ध्वस्त करने वाला सिद्ध हुआ। 17 दिसम्बर 1964 को दक्षिणी अंडमान समुद्र में 5 डिग्री पूर्व में उसका केंद्र था और 18 दिसम्बर को उसने एक बड़े चक्रवात के रूप में वेग

धारण कर लिया था। 22 दिसम्बर 1964 की रात में वह चक्रवात 270 कि.मी. प्रति घंटा के रफ्तार से श्रीलंका को पार करता हुआ धनुषकोडी के तट पर पहुँच गया था और उसकी 20 फुट की ऊँची तरंग ने धनुषकोडी नगर के पूर्व के संगम से नगर पर आक्रमण किया और इस कारण पूरा धनुषकोडी नगर नष्ट हो गया। धनुषकोडी के इस स्थान के पास चक्रवात में बली हो गये लोगों का एक स्मारक बनवाया गया है जिसपर लिखा हुआ है "उच्च वेग से बहने वाली हवा के साथ आये उच्च गति के चक्रवात में 22 दिसम्बर 1964 की रात में प्रचंड हानि हुई और धनुषकोडी ध्वस्त हुआ।" इतना ही नहीं 22 दिसम्बर 1964 की अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण रात में 11.55 बजे धनुषकोडी रेल स्थानक में प्रवेश की "पंबन धनुषकोडी पैसेंजर", (नियमित सेवा के लिए पंबन से 110 यात्री और 5 कर्मचारियों के साथ निकली थी) इस प्रचंड तरंग के आक्रमण की बली चढ़ गई। उस समय वह धनुषकोडी रेल स्थानक से कुछ मीटर की ही दूरी पर थी सभी के साथ साथ यह रेल मार्ग भी पूरी तरह से नष्ट हो गया था। तबाही वहीं पर नहीं रुकी चक्रवात आगे बढते हुए रामेश्वरम तक आ गया था और तरंगें 8 फुट तक ऊँची थीं जिस कारण यहाँ पर भी भारी तबाही हुई थी मगर वो चक्रवात रामेश्वरम के मुख्य मंदिर के पास आकर थम गया था, खास बात ये थी कि सैकड़ों लोगों ने बचने के लिए मंदिर में ही आश्रय लिया था।

इस चक्रवात की एक अत्यंत आश्चर्यजनक बात ये रही कि केवल एक ही व्यक्ति बच गया था जिसका नाम कालियामान था, इस व्यक्ति ने समुद्र में तैरकर अपने प्राण बचाए थे इसलिए शासन ने पास के गाँव को उसका नाम देकर उसको सम्मान प्रदान किया था। यह गाँव "निचलकालियामान" के नाम से जाना जाता है जिसका अर्थ है तैरने वाला। इस संकट के उपरांत ही तत्कालीन मद्रास शासन ने धनुषकोडी को "भूतों का शहर" घोषित किया था और नागरिकों को वहाँ पर रहने पर प्रतिबन्ध लगा दिया था, मगर अब कुछ मछुआरे और दुकानदार व्यवसाय के लिए दिनभर के लिए जा सकते है और सायंकाल 7 बजने से पहले उन्हें वहाँ से लौटना पड़ता है।

चूँकि धनुषकोडी रामसेतु के लिए प्रसिद्ध है इसलिए श्रद्धालु यहाँ आते है किन्तु एक साथ जाने और सूर्यास्त से पहले लौट कर आने की सलाह दी जाती है क्योंकि 15 कि.मी. की पूरी सड़क सूनी और भयानक है। वर्तमान समय में लगभग 500 से अधिक यात्री प्रतिदिन धनुषकोडी आते हैं और त्यौहार एवं पूर्णिमा के दिन सहस्त्रों की संख्या में यात्री यहाँ आते हैं। यदि कोई रामेश्वरम घूमने आता है तो रामसेतु के दर्शन की उनकी मनोकामना रहती ही है मगर ये यात्रा आसान नहीं है जिसका एक बड़ा कारण सड़क का न होना है इसलिए निजी वाहन के अतिरिक्त यहाँ पहुँचने का कोई दूसरा विकल्प नहीं है। वर्ष 2003 में रेल मंत्रालय को रामेश्वरम से धनुषकोडी तक 16 कि.मी. रेल मार्ग बनवाने के लिए एक प्रतिवेदन भेजा था, परन्तु आजतक इसकी उपेक्षा ही की गई है। इन सबके बावजूद भी केवल दक्षिण भारत ही नहीं अपितु कश्मीर के साथ उत्तर भारत, असम के साथ उत्तर पूर्वी भारत, बंगाल के साथ पूर्व भारत, मुंबई, गुजरात आदि पश्चिम भारत के नागरिक यहाँ दर्शन के लिए आते हैं और जो आ नहीं पाते हैं वो भी दर्शन की मनोकामना अवश्य रखते हैं।

अपनापन

राम औतार प्रसाद
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
(सेवानिवृत)
कार्या-महानिदेशक,
ले.प.(के.) उ.प्र., लखनऊ
शाखा-पटना

क्यूँ बेकार भटकता है तू
सुख के लिए जमाने में,
सारी खुशियाँ बसी हुई है
अपनों को अपनाने में।

अरमानों को सजाओ तुम
दिल के अंदर खजानों में
अपनापन बसा हुआ है
मन के खुश हो जाने में।

आसमान के पंछी देखो
उड़ते रहते है झुंडों में
दानों को देख साथ उतरते
भूख मिटाते अपने समूहों में।

जरा देख प्रकृति की हलचल
कैसी अठखेलियाँ करती है
तुझे कैद कर घर के अंदर
अहंकार तेरा हरती है।

हिम्मत न हार कभी तू
घर के अंदर रह जा तू
समदर्शी ईश भी देख रहा है
आज्ञाकारी बने हैं सब।

मन संतोषी तो सब सुख है
तन का दु:ख केवल मन का है
लेकर क्या आया था तू
ये सब खेल तो भगवन का है।

क्यों बेकार भटकता है तू
सुख के लिए जमाने में
मिलेगा सबकुछ तुझे सिर्फ
अपनों को अपनाने में।

आपके पत्र/आशीर्वाद/प्रतिक्रिया

धन्यवाद ज्ञापन

राजभाषा हिन्दी पत्रिका **'संधान'** के द्वितीय अंक के बारे में भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग के सभी कार्यालयों से बेहद उत्साहजनक प्रतिक्रियाएं आशीर्वाद स्वरूप प्राप्त हुई। प्रतिक्रियाओं में **'संधान'** के द्वितीय अंक की भूरि-भूरि प्रशंसा की गई। न केवल संधान में प्रकाशित लेखों एवं रचनाओं को सराहा गया, बल्कि पत्रिका के रूप एवं कलेवर की भी प्रशंसा की गई। आपकी इतनी उत्साहजनक प्रतिक्रिया, हमें न केवल पत्रिका के सम्पादन में और उत्तरदायी बनाती है बल्कि पत्रिका को और बेहतर बनाने का मार्ग प्रशस्त करती है। सम्पादक मण्डल एवं समस्त संधान परिवार की ओर से, आप सभी का इस आशा के साथ कोटि-कोटि हार्दिक आभार कि आगामी अंकों के लिए भी हमें आपका आशीर्वाद इसी प्रकार मिलता रहेगा।

संपादक मण्डल 'संधान'

महोदय,

कृपया उपर्युक्त विषय पर आप अपने पत्र संख्या अ.प्र.समन्वय/व. एवं से.क.प्र./प.सं.20/2019-20/द्वि.अं./104 दिनांक 14-01-2020 का संदर्भ ग्रहण करने का कष्ट करें, जिसके माध्यम से विभागीय हिंदी पत्रिका 'संधान' के द्वितीय अंक का प्रेषण किया गया है।

उक्त वर्णित पत्रिका इस कार्यालय को प्राप्त हुई। पत्रिका में संकलित लेख, कविताएं, निबंध, विभागीय लेख, यात्रा अनुभव इत्यादि पठनीय, रोचक एवं ज्ञानप्रद हैं। पत्रिका की सज्जा अत्यंत मनोहारी है। पत्रिका की प्रत्येक रचना के शीर्षक के साथ मुद्रित चित्र, पत्रिका का विशेष आकर्षण है। पत्रिका में प्रकाशित विभिन्न कार्यक्रमों के छायाचित्र, आपके कार्यालय द्वारा पत्रिका की आयोजित किए गए कार्यक्रमों के उच्च स्तर का प्रदर्शन करते हैं। साथ ही, हिंदी के ख्याति-प्राप्त लेखक और व्यंग्यकार गोपाल चतुर्वेदी का व्यंग्य 'एक दिन दीवाले का' पत्रिका 'संधान' को उत्कृष्ट बनाता है।

राजभाषा हिंदी के संवर्धन व प्रसार में यह पत्रिका निश्चय रूप से सहायक है। पत्रिका के प्रकाशन के लिए आप एवं पत्रिका का सम्पादक मण्डल बधाई के पात्र हैं।

वेद प्रकाश शुक्ला, आयुक्त
सीमा शुल्क (निवारक), लखनऊ

महोदय,

आपके पत्र संख्याः अ.प्र.समन्वय/व. एवं से.क.प्र./प.सं.20/2019-20/द्वि.अं./113 दिनांक 20-01-2020 के साथ आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका ''संधान'' के द्वितीय अंक की एक प्रति प्राप्त हुई, धन्यवाद।

पत्रिका का आवरण पृष्ठ आकर्षक है। पत्रिका में सम्मिलित की गई सभी रचनाएँ ज्ञानवर्धक, रोचक व संग्रहणीय हैं। पत्रिका में सम्मिलित कार्यालय के विभिन्न कार्यक्रमों से संबन्धित सभी छायाचित्र पत्रिका को अधिक रुचिकर स्वरूप प्रदान करते हैं। पत्रिका के किसी एक रचना का उल्लेख करना उचित नहीं होगा क्योंकि पत्रिका की सभी रचनाएँ एक से बढ़कर एक हैं।

पत्रिका के सफल सम्पादन तथा प्रकाशन हेतु संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएँ।

वरिष्ठ लेखा अधिकारी/हिन्दी
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-द्वितीय, उत्तर प्रदेश, प्रयागराज

महोदय,

प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा, केन्द्रीय, लखनऊ के कार्यालय से प्रकाशित हिन्दी पत्रिका 'संधान' के द्वितीय अंक की प्रति प्राप्त हुई है। ऑडिट भवन के चित्र को दर्शाता पत्रिका का मुख्यपृष्ठ अनूठा है। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ जैसे कार्मिक अभिप्रेरण-एक चुनौतीपूर्ण दायित्व एवं संभावनाएं, लेखापरीक्षा-चुनौतियाँ, जस्टिस एक अधूरी कथा, बेमिसाल शिक्षा सेनानी साइकिल गुरुः अदित्य, मुडो प्रकृति की ओर, छठमहापर्वः त्याग एवं तपस्या का अद्भुत समागम तथा पूतरेकु- आंध्र की एक स्वादिष्ट मिठाई लेख एवं एक कोशिश, डरे हुये आदमी, भारतीय नारी, मृदुलता, ममता को सलाम, 'जीवन नहीं है आसान' तथा 'एक बार फिर से जी लें' कवितायें अत्यंत प्रशंसनीय हैं। कार्यालय में आयोजित विभिन्न गतिविधियों की झलकियाँ बहुत सुंदर है। हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए व पत्रिका के प्रकाशन हेतु आपका पत्रिका परिवार बधाई का पात्र है।

पत्रिका के उज्जवल भविष्य की शुभकामनाओं सहित।

वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी/प्रशासन
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)-III, महाराष्ट्र

महोदय,

आपके द्वारा प्रेषित हिन्दी पत्रिका ''संधान'' के द्वितीय अंक की एक प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका के आवरण पृष्ठ पर छायांकित छायाचित्र एवं अन्य कार्यालयीन गतिविधियों से संबन्धित छायाचित्र काफी अच्छे लगे। संकलित समस्त लेख एवं रचनाएँ सरस एवं पठनीय हैं।

विशेषकर श्री रवि श्रीवास्तव (अच्छा हुआ हम आजाद हुए), श्री चंद्रजीत यादव (लेखापरीक्षा-चुनौतियाँ एवं संभावनाएं), श्री बृजेश्वर प्रसाद त्रिपाठी (हिन्दी का निर्मल गुणगान), श्री शैलेंद्र कुमार शर्मा (बेमिसाल शिक्षा सेनानी साइकिल गुरु आदित्य), श्रीमती लीना दरियाल (संस्मरण रेलगाड़ी का वो सफर) एवं श्री सुनील कुमार पाण्डेय (आज सब खुश हैं) आदि की रचनाएँ काफी रोचक एवं उल्लेखनीय हैं।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक मण्डल के सभी सदस्य बधाई के पात्र हैं। पत्रिका इसी प्रकार निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर रहे, यह हमारी शुभकामना है।

वरिष्ठ लेखाधिकारी/हिन्दी
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-प्रथम, उत्तर प्रदेश, प्रयागराज

महोदय,

आपके कार्यालय की हिंदी गृहपत्रिका 'संधान' के द्वितीय अंक की एक प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख, कविताएं, उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं। विशेषकर श्री चन्द्रजीत यादव की रचना 'लेखापरीक्षा-चुनौतियाँ एवं संभावनाएं', श्री दीपक वर्मा की रचना 'भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में नारी की सहभागिता', श्री बृजेश्वर प्रसाद त्रिपाठी की रचना 'हिन्दी का निर्मल गुण गान', श्री रवि सिंह की रचना 'पर्यावरण संरक्षण', सुश्री दिव्या सुपुत्री श्री हरिओम शिव की रचना 'मुड़ो प्रकृति की ओर', श्री नितनेम सिंह सोडी पुत्र श्री जे एस सोडी की रचना 'साइबर सुरक्षा' आदि उल्लेखनीय हैं।

पत्रिका की साज-सज्जा उत्तम है। कार्यालयीन चित्रों ने पत्रिका की सुंदरता को और निखारा है। पत्रिका के कुशल तथा सफल संपादन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई। पत्रिका के निरंतर उज्जवल भविष्य हेतु इस कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिन्दी
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)-II, महाराष्ट्र, नागपुर

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी पत्रिका 'संधान' के द्वितीय अंक की प्रति प्राप्त हुई। तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के सृजनात्मक उत्थान हेतु आपके कार्यालय के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा किया गया प्रयास अति सराहनीय है।

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ अति-प्रासंगिक, ज्ञानवर्धक एवं स्तरीय है। सुश्री लीना दरियाल की कविता 'एक कोशिश...', श्री राम औतार प्रसाद की कविता 'ममता को सलाम, श्री बृजेश्वर प्रसाद त्रिपाठी का लेख 'कार्मिक अभिप्रेरण- एक चुनौतीपूर्ण दायित्व' एवं श्री यश मालवीय की कविता 'एक लड़की दही' उच्चकोटि की रचनाएँ हैं तथा अभिव्यक्ति की दृष्टि से श्रेष्ठ हैं। पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा, रक्षा सेवाएँ, नई दिल्ली

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका 'संधान' का द्वितीय अंक प्राप्त हुआ। इस पत्रिका का आंतरिक एवं बाह्य दोनों ही सौंदर्य प्रशंसनीय है। पत्रिका में भीतर के छायाचित्रों ने इसे और भी आकर्षक बना दिया है। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ उच्चकोटि की है, विशेषकर श्रीमति लीना दरियाल का 'संस्मरण-रेलगाड़ी का वो सफर' काफी रोचक है। शैलेंद्र कुमार शर्मा द्वारा प्रस्तुत लेख 'बेमिसाल शिक्षा सेनानी साइकिल गुरुः आदित्य' प्रशंसनीय तथा जीवन के लिए प्रेरक है। पत्रिका में समाहित लगभग सभी कविताएं सराहनीय है।

हमारे कार्यालय की तरफ से सभी रचनाकारों, संपादक मण्डल के सभी सदस्यों एवं पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण का अभिनंदन है। पत्रिका के अविरल प्रकाशन एवं उत्तरोत्तर प्रगति हेतु हमारी हार्दिक शुभकामनायें।

हिन्दी अधिकारी
कार्यालय- प्रधान निदेशक, लेखापरीक्षा (केंद्रीय), लेखापरीक्षा भवन, नवरंगपुरा, अहमदाबाद

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिन्दी पत्रिका 'संधान' का द्वितीय अंक पत्र सं. अ.प्र. समन्वय/व.एव .क.प्र./प.सं. 20/2019-20/द्वि., अं./41 दिनांकः 14.01.2020 प्राप्त हुआ।

पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ अत्यंत सुपाठ्य, ज्ञानवर्धक और संग्रहणीय हैं। ये सभी रचनाएं अत्यंत रूचिकर तथा प्रासंगिक भी हैं।

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में से श्री सुशील कुमार श्रीवास्तव द्वारा रचित 'मंदिर में मस्जिद बनती है, मस्जिद में ब्रह्मा रहता है', श्री बृजेश्वर प्रसाद त्रिपाठी का आलेख 'कार्मिक' अभिप्रेरण एक चुनौतीपूर्ण दायित्व', श्री रवि श्रीवास्तव की कविता : अच्छा हुआ हम आजाद हुए', श्री गोपाल चतुर्वेदी का लेख 'एक दिन दीवाले का, श्री शैलेंद्र कुमार शर्मा की कहानी 'जस्टिस-एक अधूरी कथा' श्री यश मालवीय की कविता 'एक लड़की दही', श्री आदित्य कुमार का आलेख 'बेमिसाल शिक्षा सेनानी साइकिल गुरुः आदित्य', श्री राम औतार प्रसाद की कविता 'ममता को सलाम', सुश्री लीना दरियाल का संस्मरण 'रेलगाड़ी का वो सफर', श्री सुनील कुमार पाण्डेय की कहानी 'आज सब खुश हैं, श्री नितनेम सिंह सोडी द्वारा रचित 'साइबर सुरक्षा', श्री विमल नयन धूसिया द्वारा रचित 'खुशामद कहे या राजभक्ति', श्री शैलेन्द्र कुमार शर्मा की कविता 'डरे हुए आदमी', आदि विशिष्ट रूप से सराहनीय हैं।

पत्रिका के प्रकाशन हेतु संपादक मंडल को बधाई एवं इसकी प्रगति और अगले अंक के प्रकाशन हेतु शुभकामनाएं।

हिन्दी अधिकारी/राजभाषा
कार्यालय, महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय), कोलकाता

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय के पत्र संख्याः अ.प्र.समन्वय/व एवं से क.प्र. /प.सं.20/2019-20/द्वि. अं./11 दिनांकः 14-01-2020 द्वारा प्रेषित पत्रिका 'संधान' की प्रति प्राप्त हुई है। सहर्ष धन्यवाद।

इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं पाठकों के लिए प्रभावशाली, रोचक तथा ज्ञानवर्धक है। पत्रिका के सफल सम्पादन एवं प्रकाशन हेतु सम्पादक मण्डल को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका के उज्जवल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिन्दी कक्ष
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), हिमाचल प्रदेश, शिमला

महोदय,

आपके कार्यालय की पत्रिका 'संधान' का द्वितीय अंक प्राप्त हुआ, सहर्ष धन्यवाद। ये अंक अपने कलेवर, साज-सज्जा, मुद्रण स्पष्टता के कारण बहुत ही आकर्षक और मनोहारी बन पड़ा है। पत्रिका के इस अंक में प्रकाशित आलेख, कविताएं, कहानियां, संस्मरण आदि अत्यंत स्तरीय एवं ज्ञानवर्द्धक हैं। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में, विभागीय रचनाकारों को उत्कृष्ट सृजनात्मक मंच प्रदान करने में 'संधान' की भूमिका दिनानुदिन सशक्त हो रही है। यह बहुत ही सकारात्मक प्रक्रम है।

पत्रिका भविष्य में और बेहतर करे यही कामना है।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिन्दी)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) बिहार, वीरचंद पटेल मार्ग, पटना

महोदय,

आपके कार्यालय की पत्रिका 'संधान' प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद, पत्रिका का सम्पादन सराहनीय है। पत्रिका में समस्त लेख एवं रचनाएं सराहनीय है। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचना एवं सुपाठ्य, उत्कृष्ट, एवं सराहनीय हैं। विशेष तौर पर 'जस्टिस-एक अधूरी कथा, 'रविवार को ही क्यों होता है छुट्टी का दिन' 'आज सब खुश है', एवं 'ममता को सलाम' आदि रचनाएँ प्रेरणादायक है। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक को बधाई एवं पत्रिका को सफल बनाने के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी,
क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थान, प्रयागराज

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की विभागीय हिन्दी पत्रिका 'संधान' के द्वितीय अंक की प्रति प्राप्त हुई। 'संधान' के माध्यम से कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने प्रशंसनीय लेख, कहानियाँ, कविताएं का अनुपम उपहार हिन्दी साहित्य को दिया जो प्रशंसनीय, रोचक एवं ज्ञानवर्धक एवं आज के समय के अनुरूप हैं। विशेष रूप से 'अच्छा हुआ हम आजाद हुए', 'एक कोशिश', 'हिन्दी का निर्मल गुणगान, 'आज सब खुश है, जस्टिस एक अधूरी कथा, 'एक पथिक' अत्यंत प्रशंसनीय हैं।

आपके कार्यालय द्वारा राजभाषा हिन्दी के उत्थान के लिए की जा रही कार्शालाओं, हिंदी पखवाड़ा के आयोजन, संधान के विमोचन आदि के चित्र अत्यंत आकर्षक हैं। पत्रिका का कलेवर पृष्ठ, आंतरिक साज-सज्जा एव सामग्री उत्कृष्ट है। हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु, आपका प्रयास सराहनीय है। पत्रिका के कुशल संपादन के लिए संपादक मंडल एवं सभी रचनाकारों को हार्दिक बधाई एवं उज्जल भविष्य की शुभकामनाओं सहित।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिन्दी)
प्रधान महालेखाकार का कार्यालय, अरुणाचल प्रदेश, इटानगर

विशेष सूचना

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग के सभी कार्यालयों में कार्यरत सभी सदस्यों से अनुरोध है कि वे 'संधान' में प्रकाशन हेतु अपनी गद्य/पद्य लेख एवं रचना निम्नलिखित ईमेल अथवा पते पर भेजें। रचना/लेख के साथ अपना नाम, पदनाम, कार्यालय का नाम, अपनी विभागीय पहचान पत्र की प्रति भी भेजें। रचना/लेख किसी राजनीतिक विचारधारा से प्रेरित न हो और न ही किसी समुदाय, धर्म विशेष, जाति एवं वर्ग को आहत करने वाली न हो। प्राप्त रचनाओं/लेख में से आगामी अंक में एक श्रेष्ठ गद्य रचना एवं एक श्रेष्ठ पद्य रचना को प्रकाशित किया जायेगा।

पता : वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन), कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय), लखनऊ, तृतीय तल, 'ऑडिट भवन', टी.सी.-35-वी-1, विभूतिखण्ड, गोमतीनगर, लखनऊ-226010 ई-मेल : sao-admn.luk.cca@cag.gov.in

"ऑडिट भवन" लखनऊ स्थित कार्यालयों के (जनवरी-जून, 2020) कार्यकलाप

कार्यभार एवं पदभार ग्रहण

दिनांक 17 फरवरी 2020 को **श्री राज कुमार, प्रधान निदेशक** ने पदोन्नति उपरान्त **महानिदेशक, लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) उत्तर प्रदेश, लखनऊ** का पदभार ग्रहण किया।

दिनांक 21 अप्रैल 2020 को **श्री अभिषेक सिंह, वरिष्ठ उपमहालेखाकार** ने कार्यालय प्रधान महालेखाकार लखनऊ में कार्यभार ग्रहण किया। **श्री अभिषेक सिंह** ने दिनांक 06 मई 2020 को **वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशासन एवं ई.एस.-III)** का कार्यभार संभाला।

जनवरी 2020 से जून 2020 की अवधि में पदोन्नति पाये सभी कर्मचारियों/अधिकारियों को हार्दिक शुभकामनायें। साथ ही इस अवधि में निष्ठा के साथ, भारत सरकार में कर्त्तव्य निर्वहन करते हुये अधिवार्षिकी पर सेवानिवृत्त हुये सभी कर्मचारियों/अधिकारियों के लिए 'संधान परिवार' स्वस्थ एवं मंगलमय दीर्घ जीवन की कामना करता है।

पदोन्नतियाँ							
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), उ.प्र., लखनऊ							
क्र.सं.	**सर्वश्री**	**पदनाम**	**प्रभावी तिथि**	**क्र.सं.**	**सर्वश्री**	**पदनाम**	**प्रभावी तिथि**
1.	अनादि शुक्ला	वरि. लेखापरीक्षक	01.01.2020	12.	पंकज मौर्य	वरि. लेखापरीक्षक	01.01.2020
2.	महान शुक्ला	वरि. लेखापरीक्षक	01.01.2020	13.	कृष्ण कान्त चौधरी	वरि. लेखापरीक्षक	01.01.2020
3.	नितिश कनौडिया	वरि. लेखापरीक्षक	01.01.2020	14.	राहुल कुमार	वरि. लेखापरीक्षक	01.01.2020
4.	शंशाक ठाकुर	वरि. लेखापरीक्षक	01.01.2020	15.	मनोज कुमार	वरि. लेखापरीक्षक	01.01.2020
5.	दुर्गेश अवस्थी	वरि. लेखापरीक्षक	01.01.2020	16.	हरजीत सिंह	वरि. लेखापरीक्षक	01.01.2020
6.	रूपेश	वरि. लेखापरीक्षक	01.01.2020	17.	दिलीप खरवार	वरि. लेखापरीक्षक	01.01.2020
7.	आंकाक्षा सिंह	वरि. लेखापरीक्षक	01.01.2020	18.	अमर नाथ राय	वरि. लेखापरीक्षक	01.01.2020
8.	संतोष कुमार वर्मा	वरि. लेखापरीक्षक	01.01.2020	19.	हर्ष यादव	वरि. लेखापरीक्षक	01.01.2020
9.	संजीव वर्मा	वरि. लेखापरीक्षक	01.01.2020	20.	हरिओम शिव	लेखापरीक्षक	01.01.2020
10.	अरुण कुमार वर्मा	वरि. लेखापरीक्षक	01.01.2020	21.	बृजेश भारती	डी.ई.ओ. ग्रेड बी	01.01.2020
11.	विनय प्रसाद	वरि. लेखापरीक्षक	01.01.2020				
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), उ.प्र., लखनऊ, शाखा– प्रयागराज							
1.	रविन्दर कुमार	वरि. लेखापरीक्षक	01.01.2020	11.	रामरतन मीना	वरि. लेखापरीक्षक	01.01.2020
2.	मोहन प्रकाश मीना	वरि. लेखापरीक्षक	01.01.2020	12.	दशरथलाल मौर्य	लेखापरीक्षक	01.01.2020
3.	रोशनी कुमारी	वरि. लेखापरीक्षक	01.01.2020	13.	अजय कुमार	लेखापरीक्षक	01.01.2020
4.	सुनील कुमार मौर्या	वरि. लेखापरीक्षक	01.01.2020	14.	श्यामबाबू द्विवेदी	लेखापरीक्षक	01.01.2020
5.	अरूण कुमार	वरि. लेखापरीक्षक	01.01.2020	15.	लालजी तिवारी	लेखापरीक्षक	01.01.2020
6.	रमेश चन्द्र चौधरी	वरि. लेखापरीक्षक	01.01.2020	16.	मनोज कुमार त्रिपाठी	लेखापरीक्षक	01.01.2020
7.	नीरज मिश्रा	वरि. लेखापरीक्षक	01.01.2020	17.	टुनटुन कुमार	डी.ई.ओ. ग्रेड बी	01.01.2020
8.	राजा कुमार	वरि. लेखापरीक्षक	01.01.2020	18.	संदीप	डी.ई.ओ. ग्रेड बी	01.01.2020
9.	सुगर सिंह मीना	वरि. लेखापरीक्षक	01.01.2020	19.	राजकुमार	अभिलेखपाल	01.01.2020
10.	हितेश थरियानी	वरि. लेखापरीक्षक	01.01.2020				
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), उ.प्र., लखनऊ, शाखा– राँची							
1.	करजू लाल मुर्मू	वरि. लेखापरीक्षक	01.01.2020	3.	संतोष कुमार	वरि. लेखापरीक्षक	20.04.2020
2.	रवि कुमार	वरि. लेखापरीक्षक	01.01.2020				
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा–II), उ.प्र., लखनऊ							
1.	राकेश कुमार तिवारी	पर्यवेक्षक	01.01.2020	6.	आलोक प्रकाश	वरि. लेखापरीक्षक	01.01.2020
2.	प्रशांत कुमार श्रेष्ठ	वरि. लेखापरीक्षक	01.01.2020	7.	कुमार विक्रम	वरि. लेखापरीक्षक	01.01.2020
3.	सुरेश कुमार	वरि. लेखापरीक्षक	01.01.2020	8.	दिनेश कुमार सेन	वरि. लेखापरीक्षक	01.01.2020
4.	कुलदीप कुमार	वरि. लेखापरीक्षक	01.01.2020	9.	पुष्पेन्द्र कुमार	वरि. लेखापरीक्षक	01.01.2020
5.	प्रकाश मीना	वरि. लेखापरीक्षक	01.01.2020	10.	मुकेश पमनानी	वरि. लेखापरीक्षक	01.01.2020

क्र.सं.	सर्वश्री	पदनाम	प्रभावी तिथि	क्र.सं.	सर्वश्री	पदनाम	प्रभावी तिथि
11.	योगेन्द्र	वरि. लेखापरीक्षक	01.01.2020	22.	श्याम सुंदर	वरि. लेखापरीक्षक	01.01.2020
12.	राहुल कुमार	वरि. लेखापरीक्षक	01.01.2020	23.	वीरेंद्र सिंह	वरि. लेखापरीक्षक	01.01.2020
13.	आनंद सिंह	वरि. लेखापरीक्षक	01.01.2020	24.	दिवाकर पंडित	वरि. लेखापरीक्षक	01.01.2020
14.	अंकुर चौधरी	वरि. लेखापरीक्षक	01.01.2020	25.	मोहन लाल मीना	वरि. लेखापरीक्षक	01.01.2020
15.	अवनीश कुमार	वरि. लेखापरीक्षक	01.01.2020	26.	दिव्या प्रकाश	वरि. लेखापरीक्षक	02.01.2020
16.	अरविन्द सोनी	वरि. लेखापरीक्षक	01.01.2020	27.	आलोक त्रिपाठी	वरि. लेखापरीक्षक	06.01.2020
17.	अजीत प्रताप सिंह	वरि. लेखापरीक्षक	01.01.2020	28.	दीक्षा यादव	वरि. लेखापरीक्षक	30.06.2020
18.	अनिकेत गगन	वरि. लेखापरीक्षक	01.01.2020	29.	मोहम्मद शमीम	लेखापरीक्षक	01.01.2020
19.	विक्रम जीत सिंह	वरि. लेखापरीक्षक	01.01.2020	30.	दिनेश कुमार	लेखापरीक्षक	01.01.2020
20.	संदीप गोयल	वरि. लेखापरीक्षक	01.01.2020	31.	विपिन कुमार	डी.ई.ओ. ग्रेड बी	01.01.2020
21.	विक्रांत	वरि. लेखापरीक्षक	01.01.2020	32.	दीप्ति	डी.ई.ओ. ग्रेड बी	01.01.2020

कार्यालय निदेशक, वित्त एवं दूरसंचार लेखापरीक्षा, लखनऊ

1.	अभिषेक कुमार गुप्ता	स.ले.प. अधिकारी	01.06.2020	7.	ध्रुव नाथ तिवारी	वरि. लेखापरीक्षक	01.01.2020
2.	अभिषेक कुमार	स.ले.प. अधिकारी	01.06.2020	8.	सुशील कुमार	वरि. लेखापरीक्षक	01.01.2020
3.	आशीष कुमार यादव	स.ले.प. अधिकारी	01.06.2020	9.	अभिषेक कुमार	वरि. लेखापरीक्षक	01.01.2020
4.	अभिषेक कुमार गुप्ता	वरि. लेखापरीक्षक	01.01.2020	10.	दीपक कुमार सिंह	वरि. लेखापरीक्षक	01.01.2020
5.	अल्पना	वरि. लेखापरीक्षक	01.01.2020	11.	देवल वर्मा	वरि. लेखापरीक्षक	01.01.2020
6.	जीतेन्द्र कुमार गंगवार	वरि. लेखापरीक्षक	01.01.2020	12.	आकाश गौतम	वरि. लेखापरीक्षक	17.06.2020

सेवानिवृत्तियाँ

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), उ.प्र., लखनऊ, शाखा– पटना

1.	राम औतार प्रसाद	वरि.ले.प. अधिकारी	31.03.2020	2.	तारिक जेयद बिन इम्तियाज	स.ले.प. अधिकारी	31.01.2020 (स्वैच्छिक)

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), उ.प्र., लखनऊ, शाखा– राँची

1.	मसरूर रज़ा	वरि.ले.प. अधिकारी	29.02.2020

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), उ.प्र., लखनऊ, शाखा– प्रयागराज

1.	राजु कुमार	अभिलेखपाल	30.06.2020

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा–II), उ.प्र., लखनऊ, शाखा– प्रयागराज

1.	परमात्मा नन्द शर्मा	पर्यवेक्षक	31.03.2020	2.	कमलेश कुमार अग्रवाल	एम.टी.एस.	31.03.2020

कार्यालय निदेशक, वित्त एवं दूरसंचार लेखापरीक्षा, लखनऊ

1.	जयराम सिंह	वरि.ले.प. अधिकारी	31.01.2020	3.	ज्योति नारायण	वरि.ले.प. अधिकारी	31.03.2020
2.	विजेन्द्र पाल	वरि.ले.प. अधिकारी	31.01.2020	4.	रामप्रसाद जाटव	वरि.ले.प. अधिकारी	30.06.2020

26 जनवरी, 2020 को उत्कृष्ट सेवा के लिए पुरस्कृत हुये अधिकारियों एवं कर्मचारियों की सूची

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), उ.प्र., लखनऊ

क्र.सं.	सर्वश्री	पदनाम	क्र.सं.	सर्वश्री	पदनाम
1.	रोमी सुल्तान	वरि.ले.प. अधिकारी	12.	सतेन्द्र मोहन	वरिष्ठ लेखापरीक्षक
2.	राम जनम राय	वरि.ले.प. अधिकारी	13.	मनोज कुमार	वरिष्ठ लेखापरीक्षक
3.	ई.ए.पी.एस. शास्त्री	वरि.ले.प. अधिकारी	14.	ओम पाल	लेखापरीक्षक
4.	अर्जुन राम	वरि.ले.प. अधिकारी	15.	सतीश कुमार राम	एम.टी.एस.
5.	संजय कुमार–I	स.ले.प. अधिकारी	**केवल प्रमाण–पत्र**		
6.	संजीव कुमार सिन्हा	स.ले.प. अधिकारी	16.	देवेन्द्र प्रताप श्रीवास्तव	वरि.ले.प. अधिकारी
7.	ज्ञान चन्द्र भारती	स.ले.प. अधिकारी	17.	लीना दरियाल	वरि.ले.प. अधिकारी
8.	संजय कुमार–II	स.ले.प. अधिकारी	18.	शैलेन्द्र कुमार शर्मा	वरि.ले.प. अधिकारी
9.	आशीष वाजपेयी	स.ले.प. अधिकारी	19.	आशीष कुमार गुप्ता	स.ले.प. अधिकारी
10.	प्रीति श्रीवास्तव	व्यैक्तिक सहायक	20.	पंकज सक्सेना	स.ले.प. अधिकारी
11.	लक्ष्मी सहाय	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	21.	हरि मोहन श्रीवास्तव	स.ले.प. अधिकारी

मैं सही निर्णय लेने में विश्वास नहीं करता, मैं निर्णय लेता हूँ और फिर उन्हें सही साबित कर देता हूँ। –रतन टाटा

क्र.सं.	सर्वश्री	पदनाम	क्र.सं.	सर्वश्री	पदनाम
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), उ.प्र., लखनऊ, शाखा– केन्द्रीय व्यय, प्रयागराज					
1.	विनोद कुमार	स.ले.प. अधिकारी	11.	पूर्णिमा टण्डन	वरि. लेखापरीक्षक
2.	वी.एस. वर्मा	स.ले.प. अधिकारी	12.	राजा कुमार	वरि. लेखापरीक्षक
3.	अभिनव किशोर श्रीवास्तव	स.ले.प. अधिकारी	**केवल प्रमाण–पत्र**		
4.	लाल जी तिवारी	लेखापरीक्षक	13.	सुनील कुमार भट्टाचार्य	वरि.ले.प. अधिकारी
5.	अजय कुमार	लेखापरीक्षक	14.	सत्य प्रकाश	वरि.ले.प. अधिकारी
6.	अभिषेक राठौर	एम.टी.एस.	15.	आर.के. सिंह	स.ले.प. अधिकारी
7.	जे.पी. भास्कर	वरि.ले.प. अधिकारी	16.	आभा पाण्डेय	स.ले.प. अधिकारी
8.	आर.बी.एस. कुशवाहा	स.ले.प. अधिकारी	17.	छाया रानी श्रीवास्तव	स.ले.प. अधिकारी
9.	लालजी त्रिपाठी	स.ले.प. अधिकारी	18.	विकास चन्द्रा	वरि.ले.प. अधिकारी
10.	जयचन्द सिंह	स.ले.प. अधिकारी			
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), उ.प्र., लखनऊ, शाखा– राँची					
1.	मसूर रज़ा	वरि.ले.प. अधिकारी	3.	उमेश कुमार महली	लेखापरीक्षक
2.	रवि कुमार	लेखापरीक्षक	4.	झन्टू मण्डल	एम.टी.एस.
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), उ.प्र., लखनऊ, शाखा– पटना					
1.	रमेश रजक	वरि.ले.प. अधिकारी	3.	सन्दीप कुमार	स.ले.प. अधिकारी
2.	विनोद कुमार साहनी	स.ले.प. अधिकारी			
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा–II), उ.प्र., लखनऊ					
1.	बी.पी. त्रिपाठी	वरि.ले.प. अधिकारी	17.	राकेश कुमार सिंह	वरि.ले.प. अधिकारी
2.	राजीव त्रिपाठी	वरि.ले.प. अधिकारी	18.	अतुल सिंह	वरि.ले.प. अधिकारी
3.	जीवेन्द्र सिंह	वरि.ले.प. अधिकारी	19.	प्रहलाद सिंह	स.ले.प. अधिकारी
4.	आर.के. वर्मा	वरि.ले.प. अधिकारी	20.	मोहम्मद नदीमुलहक	स.ले.प. अधिकारी
5.	संदीप कुमार जयसवाल	वरि.ले.प. अधिकारी	21.	बी.वी. सोनकर	स.ले.प. अधिकारी
6.	नितिन अग्रवाल	वरि.ले.प. अधिकारी	22.	अरविन्द मिश्रा	स.ले.प. अधिकारी
7.	रवि कुमार श्रीवास्तव	वरि.ले.प. अधिकारी	23.	मुकेश पमनानी	वरि. लेखापरीक्षक
8.	मुकेश प्रताप पाल	स.ले.प. अधिकारी	24.	विक्रांत	लेखापरीक्षक
9.	श्वेता शुक्ला	स.ले.प. अधिकारी	25.	प्रकाश मीना	लेखापरीक्षक
10.	दीपक गुप्ता	स.ले.प. अधिकारी	26.	अवनीश कुमार	लेखापरीक्षक
11.	अशोक मौर्या	स.ले.प. अधिकारी	27.	कुमार विक्रम	वरि. लेखापरीक्षक
12.	निरूपमा श्रीवास्तव	वरि. लेखापरीक्षक	28.	गौरव खन्ना	वरि. लेखापरीक्षक
13.	मोहम्मद आतिफ	वरि. लेखापरीक्षक	29.	गोविन्द कुमार	कनि. हिन्दी अनुवादक
14.	नीलेश कुमार	डी.ई.ओ.	30.	रवि कुमार	डी.ई.ओ.
केवल प्रमाण–पत्र			31.	शिव शंकर सोनकर	एम.टी.एस.
15.	अजय कुमार श्रीवास्तव	वरि.ले.प. अधिकारी	32.	जितेन्द्र यादव	एम.टी.एस.
16.	मांधाता सिंह	वरि.ले.प. अधिकारी	33.	राजीव मिश्रा	एम.टी.एस.
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा–II), उ.प्र., लखनऊ, शाखा– प्रयागराज					
1.	ए.के. गुप्ता	वरि.ले.प. अधिकारी	**केवल प्रमाण–पत्र**		
2.	अजय कुमार	वरि.ले.प. अधिकारी	14.	अमित कुमार श्रीवास्तव	वरि.ले.प. अधिकारी
3.	पी.के. गुप्ता	वरि.ले.प. अधिकारी	15.	धमेन्द्र कुमार मिश्रा	वरि.ले.प. अधिकारी
4.	रोबिन्द कुमार	स.ले.प. अधिकारी	16.	सर्वोत्तम श्रीवास्तव	वरि.ले.प. अधिकारी
5.	धीरज श्रीवास्वत	स.ले.प. अधिकारी	17.	गोवर्धन लाल	स.ले.प. अधिकारी
6.	कल्याण चन्द्रा	स.ले.प. अधिकारी	18.	मनोज कुमार	स.ले.प. अधिकारी
7.	प्रदीप कुमार श्रीवास्तव	स.ले.प. अधिकारी	19.	मनोज कुमार श्रीवास्वत	स.ले.प. अधिकारी
8.	अदील अब्बास	वरि. लेखापरीक्षक	20.	रवि रावत	स.ले.प. अधिकारी
9.	लाल चन्द्र	वरि. लेखापरीक्षक	21.	विनोद कुमार श्रीवास्तव	स.ले.प. अधिकारी
10.	राजेश कुमार	वरि. लेखापरीक्षक	22.	यशवन्त कुमार	लेखापरीक्षक
11.	सूर्यनारायण पाण्डेय	वरि. लेखापरीक्षक	23.	उदय राज सरौज	पर्यवेक्षक
12.	संदीप सविता	लिपिक	24.	राहुल पाण्डेय	वरि. लेखापरीक्षक
13.	राकेश कुमार कनौजिया	एम.टी.एस.	25.	राकेश कुमार	लिपिक
			26.	अशोक कुमार	एम.टी.एस.
			27.	राधे मोहन	एम.टी.एस.

राजभाषा हिन्दी पत्रिका संधान के द्वितीय अंक के जारी किये जाने के अवसर की झलकियाँ

प्रधान महालेखाकार श्री जयंत सिन्हा (माइक लिये)

महानिदेशक श्री राज कुमार (माइक लिये)

संधान विमोचन

राजभाषा हिन्दी पत्रिका संधान के द्वितीय अंक के जारी किये जाने के अवसर की झलकियाँ

निदेशक व मुख्य सम्पादक श्री सुशील श्रीवास्तव

संधान सम्पादक मण्डल/रचनाकार/लेखक मण्डल

'ऑडिट भवन' प्रांगण में गणतंत्रता दिवस की कुछ झलकियाँ

ध्वजारोहण करते प्रधान महालेखाकार श्री जयन्त सिन्हा व महानिदेशक श्री राजकुमार

आधुनिक लखनऊ

उच्च न्यायालय, लखनऊ

जनेश्वर मिश्र पार्क, लखनऊ

अवधी लखनऊ

रेजीडेंसी, लखनऊ

घंटाघर, लखनऊ

army printing press
www.armyprintingpress.com
Lucknow (0522) 6565333